शेमुषी

द्वितीयो भागः

दशमवर्गाय
संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

शेमुषी

द्वितीयो भागः

दशमकक्षायाः संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्



1061

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2006 पौष 1928

पुनर्मुद्रण
अक्तूबर 2007 आश्विन 1929
जनवरी 2009 पौष 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
नवंबर 2014 अग्रहायण 1936
दिसंबर 2015 पौष 1937
जनवरी 2017 पौष 1938
जनवरी 2018 माघ 1939
अप्रैल 2019 चैत्र 1941
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941

PD 100T RSP

₹ 60.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा बुकमैन इंडिया, सी-4, डी.आई.सी. कैम्पस, इंडस्ट्रियल इस्टेट, मुज़फ्फरनगर - 251 001 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-642-X

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108ए 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*अनुप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*बिबाश कुमार दास*
सहायक संपादक	:	*ओम प्रकाश*
उत्पादन सहायक	:	*राजेश पिप्पल*

आवरण
करन चड्ढा

चित्रांकन
अरूप गुप्ता एवं सुजीत सिंह

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय- ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितशिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक- समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। 2017 तमे वर्षे पुनरीक्षितमिदं पुस्तकं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद् भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां

मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभ-त्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते। मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयस्य माध्यमिकोच्चशिक्षाविभागेन प्रो. मृणालमिरी प्रो. जी.पी. देशपाण्डेमहोदयानाम् आध्यक्षे संघटितायाः राष्ट्रिय-पर्यवेक्षणसमितेः सदस्यान् प्रति तेषां बहुमूल्ययोगदानाय वयं विशेषेण कृतज्ञाः।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं छात्राणां कृते पुस्तकमिदं उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नव देहली
20 नवम्बर 2017

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

भूमिका

संस्कृत की गणना विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में की जाती है। इसका साहित्यिक विस्तार वैदिक युग से लेकर आज तक अबाध रूप से चल रहा है। मानवीय चिंतन के सभी क्षेत्रों में इसकी अभिव्यक्ति हुई है। युग-परिवर्तन के साथ-साथ इसके आयाम भी बदलते रहे हैं। भाषा और साहित्य की व्यापकता को देखकर इसे देववाणी भी कहा जाता था जो इसके प्रति भारतीयों की श्रद्धा का परिचायक है।

संस्कृत का प्राचीन साहित्य जीवन-मूल्यों के प्रति (जैसे परोपकार, दान, सत्य, अहिंसा, राष्ट्र-भक्ति, पृथ्वी-प्रेम, सत्कर्म इत्यादि) आदर्श की स्थिति का आकलन करता है। इसका आधुनिक साहित्य प्राचीन मूल्यों के अतिरिक्त मानव की समकालीन समस्याओं और जीवन-संघर्षों को भी निरूपित करता है। अत: विश्व के अन्य साहित्य की तुलना में संस्कृत की संवेदनशीलता को न्यूनतर आँकना ठीक नहीं कहा जा सकता है। यह गौरव का विषय है कि चार हजार वर्षों से भी अधिक संस्कृत साहित्य-धारा में भारतीय समाज का प्रत्यंकन प्राय: प्रामाणिक रूप से होता रहा है।

संस्कृत का महत्त्व केवल प्राचीनता अथवा विषय-व्यापकता की दृष्टि से ही नहीं, अपितु देश के बहुभाषिक परिदृश्य में राष्ट्र की एकता के लिए भी सर्वोपरि है। भारत की अन्य भाषाओं पर संस्कृत के व्याकरण शब्द-संपत्ति तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ा है। आधुनिक संस्कृत अन्य भाषाओं के समान भारतीय बहुभाषिकता का एक अभिन्न अंग है। बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में जिस प्रकार संस्कृत सहायक है, उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता (Multilingualism) का संस्कृत सीखने में भी उपयोग हो सकता है।

प्राचीन संस्कृत साहित्य दो रूपों में (वैदिक तथा लौकिक) उपलब्ध है। वैदिक साहित्य संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् के रूप में है। **ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद** तथा **अथर्ववेद** इन चारों को **संहिता** कहते हैं जिनमें यज्ञ तथा अन्य विषयों के मन्त्रों का संकलन है। इन मन्त्रों का उपयोग बताने के लिए कई ब्राह्मण ग्रन्थ लिखे गये हैं। वैदिक कर्मकाण्ड की प्रतीकात्मक व्याख्या **आरण्यक** में है, उपनिषद् वैदिक दर्शन का प्रौढ़ रूप है। वेदों को सही संदर्भ में समझने के लिए वेदाङ्ग बने जिनकी

संख्या छह है– **शिक्षा** (उच्चारण–विज्ञान), **व्याकरण** (पद–विज्ञान), **छन्द** (पद्यात्मक मन्त्रों में छन्द व्यवस्था), **निरुक्त** (अर्थ–विज्ञान), **ज्योतिष** (काल तथा खगोल का विज्ञान) तथा **कल्प** (कर्मकाण्ड तथा आचार का शास्त्र)।

लौकिक संस्कृत का आरंभ आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण से हुआ जिसमें आदर्श महापुरुष राम का जीवन–चरित वर्णित है। इसमें वैदिक भाषा से परिष्कृत लौकिक काव्य–भाषा का प्रयोग है। यह सात काण्डों में विभक्त है जिन्हें सर्गों में विभक्त किया गया है। इसमें 24000 श्लोक हैं। एक अन्य प्रारम्भिक विशाल ग्रन्थ वेदव्यास–रचित **महाभारत** है जिसमें एक लाख श्लोक हैं। यह ग्रन्थ अट्ठारह पर्वों में विभक्त है। कौरवों और पाण्डवों के बीच हुआ महायुद्ध इसका मुख्य कथानक है जिसमें अन्याय पर न्याय की विजय हुई थी (यतो धर्मस्ततो जयः)। महाभारत में भारतीय जीवन–पद्धति के व्यापक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। यही कारण है कि इसे सर्वांगपूर्ण आचार–ग्रन्थ के रूप में माना गया है। लोकोक्ति है– **यन्न भारते तन्न भारते** (जो महाभारत में नहीं वह भारत में नहीं)। महाभारत के भीष्म पर्व में उल्लिखित भगवद्गीता अब एक प्रसिद्ध तथा स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है जिसमें युद्ध के आरम्भ में कृष्ण द्वारा अर्जुन को कर्मयोग का उपदेश दिया गया है। परवर्ती संस्कृत कवियों ने रामायण तथा महाभारत से कथानक लेकर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

प्राचीन भारत के धार्मिक तथा लौकिक विषयों का वर्णन पुराण साहित्य में मिलता है। मुख्य पुराण अट्ठारह हैं। पुराणों में राष्ट्रीय एकता का प्रयास मिलता है। तीर्थयात्रा, वनों, पर्वतों, और नदियों को श्रद्धेय दिखाकर पुराणों ने पर्यावरण एवं सांस्कृतिक एकता के महत्त्व का मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय समाज को आदर्शोन्मुख करने में पुराणों का बहुत योगदान है।

तदनन्तर संस्कृत साहित्य के विविध रूपों का प्रस्फुटन एवं विकास होता है। एक ओर संस्कृत नाटकों की निरन्तर धारा चली तो दूसरी ओर गद्य–पद्य में रचे गए छोटे–बड़े काव्यों का प्रवाह मिलता है। यही परम्परा आज तक चल रही है। कुछ कवियों ने अनेक विधाओं में रचनाएँ कीं, जैसे– संस्कृत के सबसे प्रसिद्ध कवि कालिदास ने दो महाकाव्य (रघुवंश, कुमारसंभव), दो गीतिकाव्य (ऋतुसंहार, मेघदूत) और तीन नाटक (अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र) लिखे।

प्राचीन नाटककारों में भास (13 नाटकों के रचयिता), शूद्रक, विशाखदत्त (मुद्राराक्षस), हर्ष, भट्टनारायण, भवभूति आदि हैं। कुछ नाटककारों ने प्रहसन, भाण आदि लिखकर

अपने काल के जन–जीवन के विकृत पक्ष का व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया है। प्राचीन महाकवियों में अश्वघोष, भारवि, भट्टि, माघ, क्षेमेन्द्र, श्रीहर्ष आदि हैं। बिल्हण (विक्रमांकदेवचरित), कल्हण (राजतरंगिणी) आदि ने ऐतिहासिक महाकाव्य लिखे।

गीतिकाव्य या लघुकाव्य के लेखकों में भर्तृहरि (नीति, शृंगार और वैराग्य शतक), अमरुक (अमरुशतक), जयदेव (गीतगोविंद), जगन्नाथ (भामिनीविलास) प्रसिद्ध हैं। गद्यकाव्य के लेखकों में सुबन्धु, बाणभट्ट (हर्षचरित और कादम्बरी), दण्डी (दशकुमारचरित), अम्बिकादत्त व्यास (शिवराज विजय) आदि हैं।

संस्कृत वाङ्मय काव्यशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, राजशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष तथा कोश आदि के हजारों ग्रन्थों की लम्बी परम्परा से भी समन्वित है। ये ग्रन्थ भारतीय विद्वानों की उपलब्धि अभिव्यक्त करते हैं।

प्रस्तुत संकलन : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्यचर्या में निम्नांकित लक्ष्य रखे गए हैं–

- भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
- आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में शिक्षा की प्रस्तुति।
- शिक्षा को जीवन के परिवेश से जोड़ना।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
- कण्ठाग्र करने की परम्परागत विधि से हटकर छात्रों को चिंतन के लिए प्रेरित करना।
- छात्रों की कल्पनाशीलता तथा रचनात्मकता का विकास।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए शेमुषी प्रथम भाग नामक पाठ्यपुस्तक के अनंतर दशम कक्षा के लिए यह शेमुषी द्वितीय भाग पुनरीक्षित संस्करण (2017) प्रस्तुत किया जा रहा है। इस संकलन में संस्कृत को जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। इसीलिए इसमें आधुनिक संस्कृत रचनाओं के समावेश के साथ अन्य भाषाओं के साहित्य से अनूदित पाठों को भी ग्रहण किया गया है। पाठों के आरम्भ में पाठ–सन्दर्भ दिए गए हैं जिनसे पाठ–प्रसंगों को समझा जा सके। छात्रों को सीखने का अधिकाधिक अवसर मिल सके इसलिए पाठों के अन्त में विविध अभ्यासों वाली प्रश्नावली दी गयी है।

छात्र पाठों को स्वयमेव समझ सकें इसके लिए 'शब्दार्थाः' शीर्षक के अन्तर्गत पाठ में आए नवीन तथा कठिन शब्दों के संस्कृत तथा हिंदी में अर्थ दिए गए हैं। 'योग्यता-विस्तार' के अन्तर्गत ऐसी सामग्री दी गई है जिससे छात्र ज्ञान के अग्रिम चरण की ओर सहज उन्मुख हो सकें। अध्यापकों के लिए पर्याप्त शिक्षण-संकेत दिए गए हैं ताकि निर्धारित पाठ्य बिंदुओं को ध्यान में रखकर अध्यापन कर सकें। पाठों को दृश्य विधि से स्पष्ट करने के लिए विषयानुकूल चित्र भी दिए गए हैं।

इस पुस्तक में कुल 12 पाठ रखे गए हैं। इनमें सात पाठ प्राचीन ग्रन्थों से तथा पाँच पाठ आधुनिक मौलिक अथवा अनूदित संस्कृत रचनाओं से लिए गए हैं। इस प्रकार इस पुस्तक में पाँच प्रकार के पाठ हैं–

(क) संस्कृत की प्राचीन पुस्तकों से– *शिशुलालनम्, व्यायामः सर्वदा पथ्यः, बुद्धिर्बलवती सदा, सुभाषितानि, प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्, अन्योक्तयः, जननी तुल्यवत्सला।*

(ख) संस्कृत की आधुनिक मौलिक रचनाओं से– *शुचिपर्यावरणम्* तथा *सौहार्द प्रकृतेः शोभा, विचित्रः साक्षी।*

(ग) अन्य भाषाओं से संस्कृत में अनूदित–*सूक्तयः।*

(घ) ललित निबंध–*भूकम्पविभीषिका।*

(ङ) संवादात्मक पाठ–सौहार्द प्रकृतेः शोभा।

आधुनिक संस्कृत लेखकों में 'शुचिपर्यावरणम्' के कवि प्रो. हरिदत्त शर्मा इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के वरिष्ठ आचार्य हैं। उनकी अनेक काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हैं। 'विचित्रः साक्षी' के लेखक श्री ओमप्रकाश ठाकुर हैं जिन्होंने आधुनिक परिवेश की अनेक संस्कृत कथाएँ लिखी हैं। 'भूकम्प विभीषिका' आधुनिक युग का संकलित निबन्ध है जिसमें एक नैसर्गिक उत्पात का वर्णन है। इसके अतिरिक्त 'सौहार्द प्रकृते शोभा' एक संवादात्मक पाठ है जिसमें इस प्रकृति में विद्यमान सभी जीवों के महत्त्व का वर्णन किया गया है और समरसता का संदेश दिया गया है।

अध्यापकों से निवेदन

संस्कृत के प्रति छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को आधार के रूप में उपयोग करें। हिन्दी, अंग्रेज़ी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्ष होने के लिए छात्रों को उन्मुख करने का प्रयास करें।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्यपुस्तक में आए हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का अधिकाधिक विकास हो सकेगा।

ध्यातव्य बिन्दवः

1. **शुचिपर्यावरणम्**– शिक्षक छात्रों के उच्चारण तथा सस्वर वाचन/गायन पर ज़ोर दें।
2. **बुद्धिर्बलवती सदा**– बुद्धि और शारीरिक शक्ति का तारतम्य समझाएँ। कथा से मिलती-जुलती दूसरी घटनाओं का भी उल्लेख करें। इस कथा में रोचकता तथा उपदेश के बिन्दुओं को स्पष्ट करें।
3. **व्यायामः सर्वदा पथ्यः**– व्यायाम के लाभ को छात्रों को समझाएँ तथा इसके स्थायी प्रयोग पर बल देते हुए श्लोकों का सस्वर पाठ सिखाएँ।
4. **शिशुलालनम्**– राम और कुश-लव के मिलन को पारिवारिक सन्दर्भ में प्रस्तुत कर पाठ को पढ़ाएँ। कुश-लव की सरलता तथा स्वाभिमान पर बल दें। राम के वात्सल्य का भी निरूपण करें। रंगमंच पर अभिनय द्वारा भी इसकी प्रस्तुति कराई जा सकती है।
5. **जननी तुल्यवत्सला**– महाभारत पर आधारित इस पाठ का आरंभ माता के ममतामय व्यवहार के उदाहरणों के साथ किया जा सकता है।
6. **सुभाषितानि**– संस्कृत तथा अन्य भाषाओं में सुभाषित पद्यों तथा वाक्यों का महत्त्व समझाएँ। श्लोकों का सस्वर वाचन सिखाएँ।
7. **सौहार्दं प्रकृतेः शोभा**– समाज में मेलजोल की दृष्टि से इस पाठ में पशु-पक्षियों के माध्यम से सामाजिक समरसता का सन्देश दिया गया है।
8. **विचित्रः साक्षी**– किसी विवादास्पद विषय के समाधान में साक्षी (गवाह, witness) की आवश्यकता समझाते हुए कथा को रोचक ढंग से प्रस्तुत करें। न्यायाधीश की बुद्धिमत्ता पर बल दें।
9. **सूक्तयः**– अन्य भाषाओं में भी विद्यमान अमूल्य निधियों के संस्कृत रूपान्तरण की पूर्वपीठिका से इस पाठ का आरंभ किया जा सकता है।
10. **भूकम्पविभीषिका**– प्राकृतिक उपद्रवों (जैसे- बाढ़, भूस्खलन, भूकम्प) की अनिश्चितता बताकर इनसे बचने के उपायों पर बल दें। पाठ को छात्रों द्वारा वाचन का भी आग्रह करें। व्याकरण का भी अनुप्रयुक्त रूप से उपयोग सिखाएँ।

11. **प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्**– नाटकीय वाचन छात्रों द्वारा नाटक पढ़वाएँ, मित्र के महत्त्व पर संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं से उद्धरण दें, छात्रों से भी पूछें।
12. **अन्योक्तयः**– काव्य में अन्योक्ति का महत्त्व बताएँ, प्राकृतिक पदार्थों से मानव को सीखने के लिए उपयोगी भावों को प्रकाशित करें, श्लोकों का सस्वर वाचन सिखाएँ तथा यथार्थ के वर्णन के उद्देश्य (स्थिति में सुधार के उपाय) पर प्रकाश डालें।

छात्रों की सुगमता को ध्यान में रखकर प्रत्यक्ष, व्याकरण एवं अनुवाद पद्धतियों की समन्वित विधि के साथ-साथ कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता को आधार बनाकर पाठों का अध्यापन करें ताकि संस्कृत अध्ययन को सरल से कठिन सोपानों पर चलने के क्रम में रोचक तथा उपयोगी बनाया जा सके।

यद्यपि परिषद् की अन्य संस्कृत पुस्तकों के समान इस संकलन (द्वितीयों भागः) को भी छात्रों के अनुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि इसे और भी अधिक उपयोगी तथा स्तरीय बनाने के लिए हम अनुभवी संस्कृत अध्यापकों के बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेंगे।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

राधावल्लभ त्रिपाठी, *पूर्व अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली

सदस्य

अशोक कुमार शुक्ल, *टी.जी.टी.,* केंद्रीय विद्यालय, ए.जी.सी.आर. कॉलोनी, दिल्ली

आदर्श आहूजा, *टी.जी.टी.,* डी.पी.एस., मथुरा रोड, नयी दिल्ली

आभा झा, *टी.जी.टी.,* सर्वोदय विद्यालय, आयानगर, नयी दिल्ली

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' (सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर), *विभागाध्यक्ष,* पटना विश्वविद्यालय, पटना

कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर संस्कृत,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

केशरीनन्दन द्विवेदी, *टी.जी.टी.,* केन्द्रीय विद्यालय नं. 2, वायुसेना स्थल, तेजपुर, असम

निर्मल मिश्र, *टी.जी.टी.,* केन्द्रीय विद्यालय, जे.एन.यू. कैंपस, नयी दिल्ली

यदुनाथ प्रसाद दुबे, *प्रोफ़ेसर,* सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता संस्कृत,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

रमेश कुमार पाण्डेय, *अध्यक्ष,* शोध एवं प्रकाशन विभाग, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली

सदस्य-समन्वयक

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों, शिक्षकों एवं विभागीय सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है। अकादमिक सहयोग के लिए परिषद् देवर्षि कलानाथ शास्त्री, जयपुर के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

परिषद् जानकीवल्लभ शास्त्री, वाई. महालिङ्ग शास्त्री तथा पद्मशास्त्री प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है, जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्य सामग्री संकलित की गई है।

पुस्तक की योजना-निर्माण से लेकर प्रकाशन पर्यन्त विविध कार्यों में यथासमय सक्रिय भूमिका निभाने के लिए संस्कृत पाठ्यपुस्तक समिति के समन्वयक कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष,* उनके सहयोगी कमलाकान्त मिश्र, *प्रोफ़ेसर* एवं रणजित बेहेरा, *प्रवक्ता* धन्यवाद के पात्र हैं। पुस्तक की पुनरीक्षण समिति (2018) के संयोजक तथा माननीय सदस्यों पी.एन. शास्त्री, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति,* राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान दिल्ली; रमेश कुमार पाण्डेय, *प्रोफ़ेसर* एवं *कुलपति,* ला.ब.शा.रा.सं. विद्यापीठ दिल्ली; रमेश भारद्वाज, *प्रोफ़ेसर,* संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय; ए.एस वेंकेटेशन, *टी.जी.टी.* संस्कृत, के.वि. चेन्नै; जी.एस. वासन, *टी.जी.टी.* संस्कृत, चेन्नै तथा चन्द्रशेखर शर्मा, *टी.जी.टी.* संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, ग्वालियर का अनेकविध मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ है। एतदर्थ परिषद् सभी विद्वानों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। पुनरीक्षण कार्य को संपन्न कराने में विशेष सहयोग के लिए जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग; वेदप्रकाश मिश्र, असिस्टेंट *प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग; रिंकेश भदूला, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,* भाषा शिक्षा विभाग तथा अनीता एवं रेखा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर्स,* भाषा शिक्षा विभाग; नेहा पाल, *डी.टी.पी. ऑपरेटर,* भाषा संपादन के लिए ममता गौड़, *संपादक (संविदा), प्रकाशन प्रभाग* साधुवाद के पात्र हैं।

विषयानुक्रमणिका

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

मङ्गलम्

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम् ।
अदीनाः स्याम शरदः शतम्। भूयश्च शरदः शतात् ॥1॥

(यजुर्वेद 36.24)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो-
ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे अस-
न्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥2॥

(ऋग्वेद 1.89.1)

भावार्थः

देवों द्वारा निरूपित यह शुक्ल वर्ण का नेत्र रूप (सूर्य) पूर्व दिशा में ऊपर उठ चुका है। हम सब सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक जीते रहें, सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों तक शुद्ध रूप से बोलते रहें, सौ वर्षों तक स्वावलम्बी (अदीन) बने रहें और यह सब सौ वर्षों से भी अधिक चलता रहे ॥1॥

हमारे पास चारों ओर से ऐसे कल्याणकारी विचार आते रहें जो किसी से न दबें, उन्हें कहीं से बाधित न किया जा सके (अपरीतासः) एवम् अज्ञात विषयों को प्रकट करने वाले (उद्भिदः) हों, प्रगति को न रोकने वाले (अप्रायुवः) तथा सदैव रक्षा में तत्पर देवगण प्रतिदिन हमारी वृद्धि के लिए तत्पर रहें ॥2॥

1061CH01

प्रथम पाठः

शुचिपर्यावरणम्

अयं पाठः आधुनिकसंस्कृतकवेः हरिदत्तशर्मणः "**लसल्लतिका**" इति रचनासङ्ग्रहात् सङ्कलितोऽस्ति। अत्र कविः महानगराणां यन्त्राधिक्येन प्रवर्धितप्रदूषणोपरि चिन्तितमनाः दृश्यते। सः कथयति यद् इदं लौहचक्रं शरीरस्य मनसश्च शोषकम् अस्ति। अस्मादेव वायुमण्डलं मलिनं भवति। कविः महानगरीयजीवनात् सुदूरं नदी-निर्झरं वृक्षसमूहं लताकुञ्जं पक्षिकुलकलरवकूजितं वनप्रदेशं प्रति गमनाय अभिलषति।

दुर्वहमत्र जीवितं जातं प्रकृतिरेव शरणम्।
शुचि-पर्यावरणम्॥
महानगरमध्ये चलदनिशं कालायसचक्रम्।
मनः शोषयत् तनुः पेषयद् भ्रमति सदा वक्रम्॥
दुर्दान्तैर्दशनैरमुना स्यान्नैव जनग्रसनम्। शुचि...॥1॥



कज्जलमलिनं धूमं मुञ्चति शतशकटीयानम्।
वाष्पयानमाला संधावति वितरन्ती ध्वानम्॥
यानानां पङ्क्तयो ह्यनन्ताः कठिनं संसरणम्। शुचि...॥2॥

वायुमण्डलं भृशं दूषितं न हि निर्मलं जलम्।
कुत्सितवस्तुमिश्रितं भक्ष्यं समलं धरातलम्।।
करणीयं बहिरन्तर्जगति तु बहु शुद्धीकरणम्। शुचि...।।3।।

कञ्चित् कालं नय मामस्मान्नगराद् बहुदूरम्।
प्रपश्यामि ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पयःपूरम्।।
एकान्ते कान्तारे क्षणमपि मे स्यात् सञ्चरणम्। शुचि...।।4।।

हरिततरूणां ललितलतानां माला रमणीया।
कुसुमावलिः समीरचालिता स्यान्मे वरणीया।।
नवमालिका रसालं मिलिता रुचिरं संगमनम्। शुचि...।।5।।



अयि चल बन्धो! खगकुलकलरव गुञ्जितवनदेशम्।
पुर-कलरव सम्भ्रमितजनेभ्यो धृतसुखसन्देशम्।।
चाकचिक्यजालं नो कुर्याज्जीवितरसहरणम्। शुचि...।।6।।

प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा नो भवन्तु पिष्टाः।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा।।
मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम्। शुचि...।।7।।

शब्दार्थाः

दुर्वहम्	दुष्करम्	कठिन, दूभर	Difficult
जीवितम्	जीवनम्	जीवन	Life
अनिशम्	अहर्निशम्	दिन-रात	Day and Night
कालायसचक्रम्	लौहचक्रम्	लोहे का चक्र	Iron wheel
शोषयत्	शुष्कीकुर्वत्	सुखाते हुए	Drying
तनुः	शरीरम्	शरीर	Body
पेषयद्	पिष्टीकुर्वत्	पीसते हुए	Grinding
वक्रम्	कुटिलम्	टेढ़ा	Askew
दुर्दान्तैः	भयङ्करैः	भयानक (से)	Scary
दशनैः	दन्तैः	दाँतों से	By teeth
अमुना	अनेन	इससे	By thus
जनग्रसनम्	जनभक्षणम्	मानव विनाश	Destruction of humans
कज्जलमलिनम्	कज्जलम् इव मलिनम्	काजल-सा मलिन (काला)	Black as kohl
धूमः	अग्निवाहः	धुआँ	Smoke
मुञ्चति	त्यजति	छोड़ता है	Releasing
शतशकटीयानम्	शकटीयानानां शतम्	सैकड़ों मोटर गाड़ियाँ	Hundreds of vehicles
वाष्पयानमाला	वाष्पयानानां पंक्तिः	रेलगाड़ी की पंक्ति	Row of trains
वितरन्ती	ददती/वितरणं कुर्वाणा	देती हुई	Distributing
ध्वानम्	ध्वनिम्	कोलाहल	Sound
संसरणम्	सञ्चलनम्	चलना	Movement
भृशं	अत्यधिकम्	अत्यधिक	Enormous
भक्ष्यम्	खाद्यपदार्थ	भोज्य पदार्थ	Eatable
समलम्	मलेन सह	मलयुक्त, गन्दगी से युक्त	Dirty

ग्रामान्ते	–	ग्रामस्य सीमायाम् (सीम्नि)	–	गाँव की सीमा पर	–	At village border
पयःपूरम्	–	जलाशयम्	–	जल से भरा हुआ तालाब	–	Pond
कान्तारे	–	वने	–	जंगल में	–	In the forest
कुसुमावलिः	–	कुसुमानां पंक्तिः	–	फूलों की पंक्ति	–	Row of flowers
समीरचालिता	–	वायुचालिता	–	हवा से चलायी हुई	–	Moved by wind
रुचिरम्	–	सुन्दरम्	–	सुन्दर	–	Attractive
खगकुलकलरव	–	खगकुलानां कलरवः (पक्षिसमूहध्वनिः)	–	पक्षियों के समूह की ध्वनि	–	Chirping of birds
चाकचिक्यजालम्	–	कृत्रिमं प्रभावपूर्णं जगत्	–	चकाचौंध भरी दुनिया	–	Web of dazzle
प्रस्तरतले	–	शिलातले	–	पत्थरों के तल पर	–	On the surface of the rocks
लतातरुगुल्माः	–	लताश्च तरवश्च गुल्माश्च	–	लता, वृक्ष और झाड़ी	–	Creepers, trees and shrubs
पाषाणी	–	पर्वतमयी	–	पथरीली	–	Stony
निसर्गे	–	प्रकृत्याम्	–	प्रकृति में	–	In the nature

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत –**
   (क) अत्र जीवितं कीदृशं जातम्?
   (ख) अनिशं महानगरमध्ये किं प्रचलति?
   (ग) कुत्सितवस्तुमिश्रितं किमस्ति?
   (घ) अहं कस्मै जीवनं कामये?
   (ङ) केषां माला रमणीया?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

(क) कविः किमर्थं प्रकृतेः शरणम् इच्छति?

(ख) कस्मात् कारणात् महानगरेषु संसरणं कठिनं वर्तते?

(ग) अस्माकं पर्यावरणे किं किं दूषितम् अस्ति?

(घ) कविः कुत्र सञ्चरणं कर्तुम् इच्छति?

(ङ) स्वस्थजीवनाय कीदृशे वातावरणे भ्रमणीयम्?

(च) अन्तिमे पद्यांशे कवेः का कामना अस्ति?

3. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

(क) प्रकृतिः + ... = प्रकृतिरेव

(ख) स्यात् + ... + ... = स्यान्नैव

(ग) .... + अनन्ताः = ह्यनन्ताः

(घ) बहिः + अन्तः + जगति = ...

(ङ) .... + नगरात् = अस्मान्नगरात्

(च) सम् + चरणम् = ...

(छ) धूमम् + मुञ्चति = ...

4. **अधोलिखितानाम् अव्ययानां सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत–**

भृशम्, यत्र, तत्र, अत्र, अपि, एव, सदा, बहिः

(क) इदानीं वायुमण्डलं .... प्रदूषितमस्ति।

(ख) .... जीवनं दुर्वहम् अस्ति।

(ग) प्राकृतिक-वातावरणे क्षणं सञ्चरणम् .... लाभदायकं भवति।

(घ) पर्यावरणस्य संरक्षणम् .... प्रकृतेः आराधना।

(ङ) .... समयस्य सदुपयोगः करणीयः।

(च) भूकम्पित-समये .... गमनमेव उचितं भवति।

(छ) .... हरीतिमा .... शुचि पर्यावरणम्।

5. **(अ) अधोलिखितानां पदानां पर्यायपदं लिखत–**

(क) सलिलम् ....

(ख) आम्रम् ....

(ग) वनम् ....

(घ) शरीरम् ....

(ङ) कुटिलम् ....

(च) पाषाणः ....

(आ) अधोलिखितपदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत–

(क) सुकरम् ....

(ख) दूषितम् ....

(ग) गृह्णन्ती ....

(घ) निर्मलम् ....

(ङ) दानवाय ....

(च) सान्ताः ....

6. उदाहरणमनुसृत्य पाठात् चित्वा च समस्तपदानि समासनाम च लिखत–

यथा-विग्रह पदानि	समस्तपद	समासनाम
(क) मलेन सहितम्	समलम्	अव्ययीभाव
(ख) हरिताः च ये तरवः (तेषां)	....	
(ग) ललिताः च याः लताः (तासाम्)	....	
(घ) नवा मालिका	....	
(ङ) धृतः सुखसन्देशः येन (तम्)	....	
(च) कज्जलम् इव मलिनम्	....	
(छ) दुर्दान्तैः दशनैः	....	

7. रेखाङ्कित-पदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) शकटीयानम् <u>कज्जलमलिनं</u> धूमं मुञ्चति।

(ख) उद्याने <u>पक्षिणां</u> कलरवं चेतः प्रसादयति।

(ग) पाषाणीसभ्यतायां <u>लतातरुगुल्माः</u> प्रस्तरतले पिष्टाः सन्ति।

(घ) <u>महानगरेषु</u> वाहनानाम् अनन्ताः पङ्क्तयः धावन्ति।

(ङ) <u>प्रकृत्याः</u> सन्निधौ वास्तविकं सुखं विद्यते।

योग्यताविस्तारः

यह पाठ आधुनिक संस्कृत कवि हरिदत्त शर्मा के रचना संग्रह 'लसल्लतिका' से संकलित है। इसमें कवि ने महानगरों की यांत्रिक-बहुलता से बढ़ते प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि यह लौहचक्र तन-मन का शोषक है, जिससे वायुमण्डल और भूमण्डल दोनों मलिन हो रहे हैं। कवि महानगरीय जीवन से दूर, नदी-निर्झर, वृक्षसमूह, लताकुञ्ज एवं पक्षियों से गुञ्जित वनप्रदेशों की ओर चलने की अभिलाषा व्यक्त करता है।

समास - समसनं समासः

समास का शाब्दिक अर्थ होता है- संक्षेप। दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से जो नया और संक्षिप्त रूप बनता है, वह समास कहलाता है। समास के मुख्यतः चार भेद हैं–

1. अव्ययीभाव
2. तत्पुरुष
3. बहुव्रीहि
4. द्वन्द्व

1. अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होता है और वही प्रधान होता है और समस्तपद अव्यय बन जाता है।

यथा- निर्मक्षिकम्-मक्षिकाणाम् अभावः।

यहाँ प्रथमपद निर् है और द्वितीयपद मक्षिकम् है। यहाँ मक्षिका की प्रधानता न होकर मक्षिका का अभाव प्रधान है, अतः यहाँ अव्ययीभाव समास है। कुछ अन्य उदाहरण देखें–

(i)	उपग्रामम्	–	ग्रामस्य समीपे	–	(समीपता की प्रधानता)
(ii)	निर्जनम्	–	जनानाम् अभावः	–	(अभाव की प्रधानता)
(iii)	अनुरथम्	–	रथस्य पश्चात्	–	(पश्चात् की प्रधानता)
(iv)	प्रतिगृहम्	–	गृहं गृहं प्रति	–	(प्रत्येक की प्रधानता)
(v)	यथाशक्ति	–	शक्तिम् अनतिक्रम्य	–	(सीमा की प्रधानता)
(vi)	सचक्रम्	–	चक्रेण सहितम्	–	(सहित की प्रधानता)

2. तत्पुरुष

'प्रायेण उत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः' इस समास में प्रायः उत्तरपद की प्रधानता होती है और पूर्व पद उत्तरपद के विशेषण का कार्य करता है। समस्तपद में पूर्वपद की विभक्ति का लोप हो जाता है।

यथा– राजपुरुषः अर्थात् राजा का पुरुष। यहाँ राजा की प्रधानता न होकर पुरुष की प्रधानता है।

(i) ग्रामगतः – ग्रामं गतः।
(ii) शरणागतः – शरणम् आगतः।
(iii) देशभक्तः – देशस्य भक्तः।
(iv) सिंहभीतः – सिंहात् भीतः।
(v) भयापन्नः – भयम् आपन्नः।
(vi) हरित्रातः – हरिणा त्रातः।

तत्पुरुष समास के दो प्रमुख भेद हैं-कर्मधारय और द्विगु।

(*ii*) **कर्मधारय**– इस समास में एक पद विशेष्य तथा दूसरा पद पहले पद का विशेषण होता है। विशेषण विशेष्य भाव के अतिरिक्त उपमान उपमेय भाव भी कर्मधारय समास का लक्षण है।

यथा–

पीताम्बरम् – पीतं च तत् अम्बरम्।
महापुरुषः – महान् च असौ पुरुषः।
कज्जलमलिनम्– कज्जलम् इव मलिनम्।
नीलकमलम् – नीलं च तत् कमलम्।
मीननयनम् – मीन इव नयनम्।
मुखकमलम् – कमलम् इव मुखम्।

(*ii*) **द्विगु**– 'संख्यापूर्वो द्विगुः' इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है और समाहार (एकत्रीकरण या समूह) अर्थ की प्रधानता होती है।

यथा– त्रिभुजम् – त्रयाणां भुजानां समाहारः।

इसमें पूर्वपद 'त्रि' संख्यावाची है।

पंचपात्रम् – पंचानां पात्राणां समाहारः।
पंचवटी – पंचानां वटानां समाहारः।
सप्तर्षिः – सप्तानां ऋषीणां समाहारः।
चतुर्युगम् – चतुर्णां युगानां समाहारः।

3. बहुव्रीहि

'अन्यपदार्थप्रधान: बहुव्रीहि:' इस समास में पूर्व तथा उत्तर पदों की प्रधानता न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है।

यथा–

पीताम्बर:	–	पीतम् अम्बरम् यस्य स: (विष्णु:)। यहाँ न तो पीतम् शब्द की प्रधानता है और न अम्बरम् शब्द की अपितु पीताम्बरधारी किसी अन्य व्यक्ति (विष्णु) की प्रधानता है।
नीलकण्ठ:	–	नील: कण्ठ: यस्य स: (शिव:)।
दशानन:	–	दश आननानि यस्य स: (रावण:)।
अनेककोटिसार:	–	अनेककोटि: सार: (धनम्) यस्य स:।
विगलितसमृद्धिम्	–	विगलिता समृद्धि: यस्य तम् (पुरुषम्)।
प्रक्षालितपादम्	–	प्रक्षालितौ पादौ यस्य तम् (जनम्)।

4. द्वन्द्व

'उभयपदार्थप्रधान: द्वन्द्व:' इस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों की समान रूप से प्रधानता होती है। पदों के बीच में 'च' का प्रयोग विग्रह में होता है।

यथा–

रामलक्ष्मणौ	–	रामश्च लक्ष्मणश्च।
पितरौ	–	माता च पिता च।
धर्मार्थकाममोक्षा:	–	धर्मश्च, अर्थश्च, कामश्च, मोक्षश्च।
वसन्तग्रीष्मशिशिरा:	–	वसन्तश्च ग्रीष्मश्च शिशिरश्च।

कविपरिचय – प्रो. हरिदत्त शर्मा इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में संस्कृत के आचार्य रहे हैं। इनके कई संस्कृत काव्य प्रकाशित हो चुके हैं। जैसे– गीतकंदलिका, त्रिपथगा, उत्कलिका, बालगीताली, आक्रन्दनम्, लसल्लतिका इत्यादि। इनकी रचनाओं में समाज की विसंगतियों के प्रति आक्रोश तथा स्वस्थ वातावरण के प्रति दिशानिर्देश के भाव प्राप्त होते हैं।

भावविस्तार:

पृथिवी, जलं, तेजो वायुराकाशश्चेति पञ्चमहाभूतानि प्रकृते: प्रमुखतत्त्वानि। एतै: तत्त्वैरेव पर्यावरणस्य रचना भवति। आव्रियते परित: समन्तात् लोकोऽनेनेति पर्यावरणम्। परिष्कृतं प्रदूषणरहितं च पर्यावरणमस्मभ्यं सर्वविधजीवनसुखं ददाति। अस्माभि: सदैव तथा प्रयतितव्यं यथा जलं स्थलं गगनञ्च निर्मलं स्यात्। पर्यावरणसम्बद्धा: केचन श्लोका: अधोलिखिता: सन्ति–

यथा–

पृथिवीं परितो व्याप्य, तामाच्छाद्य स्थितं च यत्।
जगदाधाररूपेण, पर्यावरणमुच्यते।।

प्रदूषणविषये–

सृष्टौ स्थितौ विनाशे च नृविज्ञैर्बहुनाशकम्।
पञ्चतत्त्वविरुद्धं यत्साधितं तत्प्रदूषणम्।।

वायुप्रदूषणविषये–

प्रक्षिप्तो वाहनैर्धूमः कृष्णः बह्वपकारकः।
दुष्टैरसायनैर्युक्तो घातकः श्वासरुग्वहः।।

जलप्रदूषणविषये–

यन्त्रशाला परित्यक्तैर्नगरे दूषितद्रवैः।
नदीनदौ समुद्राश्च प्रक्षिप्तैर्दूषणं गताः।।

प्रदूषण निवारणाय संरक्षणाय च–

शोधनं रोपणं रक्षावर्धनं वायुवारिणः।
वनानां वन्यवस्तूनां भूमेः संरक्षणं वरम्।।

एते श्लोकाः पर्यावरणकाव्यात् संकलिताः सन्ति।

तत्सम-तद्भव-शब्दानामध्ययनम्–

अधोलिखितानां तत्समशब्दानां तदुद्भूतानां च तद्भवशब्दानां परिचयः करणीयः–

तत्सम		तद्भव
प्रस्तर	–	पत्थर
वाष्प	–	भाप
दुर्वह	–	दूभर
वक्र	–	बाँका
कज्जल	–	काजल
चाकचिक्य	–	चकाचक, चकाचौंध
धूमः	–	धुआँ
शतम्	–	सौ (100)
बहिः	–	बाहर

छन्दः परिचयः

अस्मिन् गीते शुचि पर्यावरणम् इति ध्रुवकं (स्थायी) वर्तते। तदतिरिक्तं सर्वत्र प्रतिपङ्क्ति 26 मात्राः सन्ति। इदं गीतिकाच्छन्दसः रूपमस्ति।

1061CH02

द्वितीयः पाठः

बुद्धिर्बलवती सदा

प्रस्तुतोऽयं पाठः "**शुकसप्ततिः**" कथाग्रन्थस्य सम्पादनं कृत्वा संगृहीतोऽस्ति। अत्र पाठांशे स्वलघुपुत्राभ्यां सह काननमार्गेण पितृगृहं प्रति गच्छन्त्याः बुद्धिमतीति नाम्न्याः महिलायाः मतिकौशलं प्रदर्शितं वर्तते। या पुरतः समागतं सिंहमपि भीतिमुत्पाद्य ततः निवारयति। इयं कथा नीतिनिपुणयोः शुकसारिकयोः कथामाध्यमेन सद्वृत्तेः विकासार्थं प्रेरयति।

अस्ति देउलाख्यो ग्रामः। तत्र राजसिंहः नाम राजपुत्रः वसति स्म। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धाष्ट्र्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद–"कथमेकैकशो व्याघ्रभक्षणाय कलहं कुरुथः? अयमेकस्तावद्विभज्य भुज्यताम्। पश्चाद् अन्यो द्वितीयः कश्चिल्लक्ष्यते।"



इति श्रुत्वा व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्टः।

निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयाद् व्याघ्रस्य भामिनी।
अन्योऽपि बुद्धिमाँल्लोके मुच्यते महतो भयात्॥

भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्तः श्रृगालः हसन्नाह– "भवान् कुतः भयात् पलायितः?"

व्याघ्रः- गच्छ, गच्छ जम्बुक! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशम्। यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्धः परं गृहीतकरजीवितो नष्टः शीघ्रं तदग्रतः।

श्रृगालः- व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकम् आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि?

व्याघ्रः- प्रत्यक्षमेव मया सात्मपुत्रावेकैकशो मामत्तुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्टा।

जम्बुकः- स्वामिन्! यत्रास्ते सा धूर्ता तत्र गम्यताम्। व्याघ्र! तव पुनः तत्र गतस्य सा सम्मुखमपीक्षते यदि, तर्हि त्वया अहं हन्तव्यः इति।

व्याघ्रः- श्रृगाल! यदि त्वं मां मुक्त्वा यासि तदा वेलाप्यवेला स्यात्।

जम्बुकः- यदि एवं तर्हि मां निजगले बद्ध्वा चल सत्वरम्। स व्याघ्रः तथा कृत्वा काननं ययौ। श्रृगालेन सहितं पुनरायान्तं व्याघ्रं दूरात् दृष्ट्वा बुद्धिमती



चिन्तितवती-जम्बुककृतोत्साहाद् व्याघ्रात् कथं मुच्यताम्? परं प्रत्युत्पन्नमतिः सा जम्बुकमाक्षिपन्त्यङ्गुल्या तर्जयन्त्युवाच–

रे रे धूर्त त्वया दत्तं मह्यं व्याघ्रत्रयं पुरा।
विश्वास्याद्यैकमानीय कथं यासि वदाधुना॥

इत्युक्त्वा धाविता तूर्णं व्याघ्रमारी भयङ्करा।
व्याघ्रोऽपि सहसा नष्टः गलबद्धश‍ृगालकः॥

एवं प्रकारेण बुद्धिमती व्याघ्रजाद् भयात् पुनरपि मुक्ताऽभवत्। अत एव उच्यते–

बुद्धिर्बलवती तन्वि सर्वकार्येषु सर्वदा॥

शब्दार्थाः

भार्या	–	पत्नी	–	पत्नी	–	Wife
पुत्रद्वयोपेता	–	पुत्रद्वयेन सहिता	–	दोनों पुत्रों के साथ	–	With both sons
उपेता	–	युक्ता	–	युक्त	–	Alongwith
कानने	–	वने	–	जंगल में	–	In the forest
ददर्श	–	अपश्यत्	–	देखा	–	Saw
धाष्ट्र्यात्	–	धृष्टभावात्	–	ढिठाई से	–	With audaciousness
चपेटया	–	करप्रहारेण	–	थप्पड़ से	–	With a slap
प्रहृत्य	–	प्रहारंकृत्वा	–	मारकर	–	Attacking
जगाद	–	उक्तवती	–	कहा	–	He/she said
कलहः	–	विवाद	–	झगड़ा	–	Quarrel
विभज्य	–	विभक्तं कृत्वा	–	अलग-अलग करके (बाँटकर)	–	Dividing/ sharing
लक्ष्यते	–	अन्विष्यते	–	देखा जाएगा, ढूँढ़ा जाएगा	–	Will search
व्याघ्रमारी	–	व्याघ्रं मारयति (हन्ति) इति	–	बाघ को मारने वाली	–	Tiger killer lady
नष्टः	–	मृतः, पलायितः	–	भाग गया	–	Ran away
भामिनी	–	भामिनी, रूपवती स्त्री	–	रूपवती स्त्री	–	Beautiful lady
जम्बुकः	–	श‍ृगालः	–	सियार	–	Jackal
गूढप्रदेशम्	–	गुप्तप्रदेशम्	–	गुप्त प्रदेश में	–	In a hidden place

गृहीतकरजीवितः	हस्ते प्राणान्नीत्वा	हथेली पर प्राण लेकर	Risking life
आवेदितम्	विज्ञापितम्	बताया	Revealed
प्रत्यक्षम्	समक्षम्	सामने	In front of eyes
सात्मपुत्रौ	सा आत्मनः पुत्रौ	वह अपने दोनों पुत्रों को	She to her both sons
एकैकशः	एकम् एकं कृत्वा	एक एक करके	One by one
अत्तुम्	भक्षयितुम्	खाने के लिए	To eat
कलहायमानौ	कलहं कुर्वन्तौ	झगड़ा करते हुए (दो) को	Both of them quarreling
प्रहरन्ती	प्रहारं कुर्वाणा	मारती हुई	Attacking
ईक्षते	पश्यति	देखती है	Sees
वेला	समयः	शर्त	Condition
आक्षिपन्ती	आक्षेपं कुर्वाणा भर्त्सना करती हुई	आक्षेप करती हुई, झिड़कती हुई,	Scolding
तर्जयन्ती	तर्जनं कुर्वाणा	धमकाती हुई, डाँटती हुई	Threatening
विश्वास्य	समाश्वस्य	विश्वास दिलाकर	Assuring
तूर्णम्	शीघ्रम्	जल्दी, शीघ्र	Quickly
भयङ्करा	भयं करोति इति	भयोत्पादिका	Horrible lady
गलबद्ध-शृगालकः	गले बद्धः शृगालः	गले में बंधे हुए शृगाल वाला	Jackals tied to his neck

अन्तिमस्य श्लोकस्य अन्वयः –

रे रे धूर्त! त्वया मह्यं पुरा व्याघ्रत्रयं दत्तम्। विश्वास्य (अपि) अद्य एकम् आनीय कथं यासि इति अधुना वद। इति उक्त्वा भयङ्करा व्याघ्रमारी तूर्णं धाविता। गलबद्धशृगालकः व्याघ्रः अपि सहसा नष्टः। हे तन्वि! सर्वदा सर्वकार्येषु बुद्धिर्बलवती।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) बुद्धिमती कुत्र व्याघ्रं ददर्श?

(ख) भामिनी कया विमुक्ता?

(ग) सर्वदा सर्वकार्येषु का बलवती?

(घ) व्याघ्रः कस्मात् बिभेति?

(ङ) प्रत्युत्पन्नमतिः बुद्धिमती किम् आक्षिपन्ती उवाच?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) बुद्धिमती केन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता?

(ख) व्याघ्रः किं विचार्य पलायितः?

(ग) लोके महतो भयात् कः मुच्यते?

(घ) जम्बुकः किं वदन् व्याघ्रस्य उपहासं करोति?

(ङ) बुद्धिमती श्रृगालं किम् उक्तवती?

3. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) तत्र **राजसिंहो** नाम राजपुत्रः वसति स्म।

(ख) बुद्धिमती **चपेटया** पुत्रौ प्रहृतवती।

(ग) **व्याघ्रं** दृष्ट्वा धूर्तः श्रृगालः अवदत्।

(घ) त्वं **मानुषात्** बिभेषि।

(ङ) पुरा त्वया **मह्यं** व्याघ्रत्रयं दत्तम्।

4. अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारेण योजयत–

(क) व्याघ्रः व्याघ्रमारी इयमिति मत्वा पलायितः।

(ख) प्रत्युत्पन्नमतिः सा श्रृगालं आक्षिपन्ती उवाच।

(ग) जम्बुककृतोत्साहः व्याघ्रः पुनः काननम् आगच्छत्।

(घ) मार्गे सा एकं व्याघ्रम् अपश्यत्।

(ङ) व्याघ्रं दृष्ट्वा सा पुत्रौ ताडयन्ती उवाच–अधुना एकमेव व्याघ्रं विभज्य भुज्यताम्।

(च) बुद्धिमती पुत्रद्वयेन उपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता।
(छ) 'त्वं व्याघ्रत्रयम् आनेतुं' प्रतिज्ञाय एकमेव आनीतवान्।
(ज) गलबद्धश्रृगालकः व्याघ्रः पुनः पलायितः।

5. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत–**

(क) पितुर्गृहम् – .... + ...
(ख) एकैकः – .... + ...
(ग) .... – अन्यः + अपि
(घ) .... – इति + उक्त्वा
(ङ) .... – यत्र + आस्ते

6. **अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं कोष्ठकात् चित्वा लिखत–**

(क) ददर्श – (दर्शितवान्, दृष्टवान्)
(ख) जगाद – (अकथयत्, अगच्छत्)
(ग) ययौ – (याचितवान्, गतवान्)
(घ) अत्तुम् – (खादितुम्, आविष्कर्तुम्)
(ङ) मुच्यते – (मुक्तो भवति, मग्नो भवति)
(च) ईक्षते – (पश्यति, इच्छति)

7. **(अ) पाठात् चित्वा पर्यायपदं लिखत–**

(क) वनम् – ....
(ख) श्रृगालः – ....
(ग) शीघ्रम् – ....
(घ) पत्नी – ....
(ङ) गच्छसि – ....

(आ) पाठात् चित्वा विपरीतार्थकं पदं लिखत–

(क) प्रथमः – ....
(ख) उक्त्वा – ....

(ग) अधुना – ....
(घ) अवेला – ....
(ङ) बुद्धिहीना – ....

परियोजनाकार्यम्

बुद्धिमत्याः स्थाने आत्मानं परिकल्प्य तद्भावनां स्वभाषया लिखत।

योग्यताविस्तारः

यह पाठ शुकसप्ततिः नामक प्रसिद्ध कथाग्रन्थ से सम्पादित कर लिया गया है। इसमें अपने दो छोटे-छोटे पुत्रों के साथ जंगल के रास्ते से पिता के घर जा रही बुद्धिमती नामक नारी के बुद्धिकौशल को दिखाया गया है, जो सामने आए हुए शेर को डराकर भगा देती है। इस कथाग्रन्थ में नीतिनिपुण शुक और सारिका की कहानियों के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से सद्वृत्ति का विकास कराया गया है।

भाषिकविस्तारः

ददर्श-दृश् धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

बिभेषि 'भी' धातु, लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

प्रहरन्ती	–	प्र + हृ धातु, शतृ प्रत्यय, स्त्रीलिङ्ग प्र.वि.एकवचन।
गम्यताम्	–	गम् धातु, कर्मवाच्य, लोट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
ययौ	–	'या' धातु, लिट् लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन।
यासि	–	गच्छसि 'या' धातु, लट् लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन।।

समास

गलबद्धश्रृगालकः	–	गले बद्धः श्रृगालः यस्य सः।
प्रत्युत्पन्नमतिः	–	प्रत्युत्पन्ना मतिः यस्य सः।
जम्बुककृतोत्साहात्	–	जम्बुकेन कृतः उत्साहः – जम्बुककृतोत्साहः तस्मात्।
पुत्रद्वयोपेता	–	पुत्रद्वयेन उपेता।
भयाकुलचित्तः	–	भयेन आकुलं चित्तम् यस्य सः।
व्याघ्रमारी	–	व्याघ्रं मारयति इति।
गृहीतकरजीवितः	–	गृहीतं करे जीवितं येन सः।

भयङ्करा – भयं करोति या इति।

ग्रन्थ-परिचय – शुकसप्ततिः के लेखक और काल के विषय में यद्यपि भ्रान्ति बनी हुई है, तथापि इसका काल 1000 ई. से 1400 ई. के मध्य माना जाता है। हेमचन्द्र ने (1088-1172) में शुकसप्ततिः का उल्लेख किया है। चौदहवीं शताब्दी में इसका फारसी भाषा में 'तूतिनामह' नाम से अनुवाद हुआ था।

शुकसप्ततिः का ढाँचा अत्यन्त सरल और मनोरंजक है। हरिदत्त नामक सेठ का मदनविनोद नामक एक पुत्र था। वह विषयासक्त और कुमार्गगामी था। सेठ को दुःखी देखकर उसके मित्र त्रिविक्रम नामक ब्राह्मण ने अपने घर से नीतिनिपुण शुक और सारिका लेकर उसके घर जाकर कहा-इस सपत्नीक शुक का तुम पुत्र की भाँति पालन करो। इसका संरक्षण करने से तुम्हारा दुख दूर होगा। हरिदत्त ने मदनविनोद को वह तोता दे दिया। तोते की कहानियों ने मदनविनोद का हृदय परिवर्तन कर दिया और वह अपने व्यवसाय में लग गया।

व्यापार प्रसंग में जब वह देशान्तर गया तब शुक अपनी मनोरंजक कहानियों से उसकी पत्नी का तब तक विनोद करता रहा, जब तक उसका पति वापस नहीं आ गया। संक्षेप में शुकसप्ततिः अत्यधिक मनोरंजक कथाओं का संग्रह है।

हन् (मारना) धातोः रूपम्।

लट्लकारः

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
मध्यमपुरुषः	हन्सि	हथः	हथ
उत्तमपुरुषः	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लृट्लकारः

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
मध्यमपुरुषः	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ

उत्तमपुरुषः	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

लङ्लकारः

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यमपुरुषः	अहः	अहतम्	अहत
उत्तमपुरुषः	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लोट्लकारः

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
मध्यमपुरुषः	जहि	हतम्	हत
उत्तमपुरुषः	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ्लकारः

	एकवचनम्	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमपुरुषः	हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः
मध्यमपुरुषः	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उत्तमपुरुषः	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

1061CH03

तृतीयः पाठः

व्यायामः सर्वदा पथ्यः

प्रस्तुतोऽयं पाठः आयुर्वेदस्य प्रसिद्धग्रन्थः "**सुश्रुतसंहिता**" इत्यस्य चिकित्सास्थाने वर्णित-चतुर्विंशाध्यायात् समुद्धृतोऽस्ति। अस्मिन् आचार्यसुश्रुतः व्यायामस्य परिभाषां तेन जायमानान् लाभान् च निबोधयति। प्रामुख्येन शरीरसौष्ठवम्, कान्तिः, स्फूर्तिः, सहिष्णुता, आरोग्यं च इत्यादयः व्यायामस्य लाभाः सन्ति।

शरीरायासजननं कर्म व्यायामसंज्ञितम् ।
तत्कृत्वा तु सुखं देहं विमृद्नीयात् समन्ततः ॥1॥



शरीरोपचयः कान्तिर्गात्राणां सुविभक्तता ।
दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा ॥2॥

श्रमक्लमपिपासोष्ण-शीतादीनां सहिष्णुता ।
आरोग्यं चापि परमं व्यायामादुपजायते ॥3॥

न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित्स्थौल्यापकर्षणम् ।
न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥4॥

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिरोहति ।
स्थिरीभवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च ॥5॥

व्यायामस्विन्नगात्रस्य पद्भ्यामुद्वर्तितस्य च ।
व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः
वयोरूपगुणैर्हीनमपि कुर्यात्सुदर्शनम् ॥6॥

व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् ।
विदग्धमविदग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥7॥

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ।
स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमः स्मृतः ॥8॥

सर्वेष्वृतुष्वहरहः पुम्भिरात्महितैषिभिः ।
बलस्यार्धेन कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥9॥

हृदिस्थानस्थितो वायुर्यदा वक्त्रं प्रपद्यते ।
व्यायामं कुर्वतो जन्तोस्तद्बलार्धस्य लक्षणम् ॥10॥

वयोबलशरीराणि देशकालाशनानि च ।
समीक्ष्य कुर्याद् व्यायाममन्यथा रोगमाप्नुयात् ॥11॥

शब्दार्थाः

आयासः	– प्रयत्नः, प्रयासः, श्रमः	– परिश्रम	– Effort
विमृद्नीयात्	– मर्दयेत्	– मालिश करनी चाहिए	– Should massage
समन्ततः	– सर्वतः	– पूरी तरह से	– All over
उपचयः	– अभिवृद्धिः	– वृद्धि	– Growth

कान्तिः	– आभा	– चमक	– Glow
गात्रम्	– शरीरम्	– शरीर	– Body
सुविभक्तता	– शारीरिकं सौष्ठवम्	– शारीरिक सौन्दर्य	– Physcial beauty
दीप्ताग्नित्वम्	– जठराग्नेः प्रवर्धनम्	– जठराग्नि का प्रदीप्त होना अर्थात् भूख लगना	– Stimulate appetite
मृजा	– स्वच्छीकरणम्	– स्वच्छ करना	– Cleanliness
क्लमः	– श्रमजनितं शैथिल्यम्	– थकान	– Fatigue
पिपासा	– पातुम् इच्छा	– प्यास	– Thirst
उष्णः	– तापः	– गर्मी	– Heat
स्थौल्यम्	– अतिमांसलत्वं, पीनता	– मोटापा	– Obesity
अपकर्षणम्	– दूरीकरणम्	– दूर करना, कम करना	– Removal
अर्दयन्ति	– अर्दनं कुर्वन्ति	– कुचल डालते हैं	– Crush
अरयः	– शत्रवः	– शत्रुगण	– Enemies
आक्रम्य	– आक्रमणं कृत्वा	– हमला करके	– Attacking
जरा	– वार्धक्यम्	– बुढ़ापा	– Ageing
अभिरतस्य	– संलग्नस्य	– तल्लीन होने वाले का	– Of involved
स्विन्नगात्रस्य	– स्वेदेन सिक्तस्य शरीरस्य	– पसीने से लथपथ शरीर का	– Of a sweatful body
पद्भ्याम् उद्वर्तितस्य	– पद्भ्याम् उन्नमितस्य	– दोनों पैरों से ऊपर उठने वाले व्यायाम	– Exercises lifting the feet
वैनतेयः	– गरुडः	– गरुड़	– Garuda, the devine king of birds
उरगः	– सर्पः	– साँप	– Serpent
विदग्धम्	– सुपक्वम्	– भली प्रकार पके हुए	– Well cooked
परिपच्यते	– जीर्यते	– पच जाता है	– Gets digested
अहन्	– दिवसः	– दिन	– Day

पथ्यम्	– अनुकूलम्	– उचित आहार	– Appropriate diet
अहरहः	– प्रतिदिनम्	– हर रोज	– Every day
पुम्भिः	– पुरुषैः	– पुरुषों के द्वारा	– By men
अशनानि	– आहाराः/भोजनानि	– भोजन	– Food

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) परमम् आरोग्यं कस्मात् उपजायते?
   (ख) कस्य मांसं स्थिरीभवति?
   (ग) सदा कः पथ्यः?
   (घ) कैः पुंभिः सर्वेषु ऋतुषु व्यायामः कर्तव्यः?
   (ङ) व्यायामस्विन्नगात्रस्य समीपं के न उपसर्पन्ति?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   (क) कीदृशं कर्म व्यायामसंज्ञितम् कथ्यते?
   (ख) व्यायामात् किं किमुपजायते?
   (ग) जरा कस्य सकाशं सहसा न समधिरोहति?
   (घ) कस्य विरुद्धमपि भोजनं परिपच्यते?
   (ङ) कियता बलेन व्यायामः कर्तव्यः?
   (च) अर्धबलस्य लक्षणम् किम्?

3. **उदाहरणमनुसृत्य कोष्ठकगतेषु पदेषु तृतीयाविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत-**
   यथा– व्यायामः .... हीनमपि सुदर्शनं करोति (गुण)
   व्यायामः <u>गुणैः</u> हीनमपि सुदर्शनं करोति।
   (क) .... व्यायामः कर्त्तव्यः। (बलस्यार्ध)
   (ख) .... सदृशं किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति। (व्यायाम)

(ग) ………………… विना जीवनं नास्ति। (विद्या)

(घ) सः ………………… खञ्जः अस्ति। (चरण)

(ङ) सूपकारः ………………… भोजनं जिघ्रति। (नासिका)

4. **स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) **शरीरस्य** आयासजननं कर्म व्यायामः इति कथ्यते।

(ख) **अरयः** व्यायामिनं न अर्दयन्ति।

(ग) **आत्महितैषिभिः** सर्वदा व्यायामः कर्तव्यः।

(घ) व्यायामं कुर्वतः **विरुद्धं** भोजनम् अपि परिपच्यते।

(ङ) **गात्राणां** सुविभक्तता व्यायामेन संभवति।

(अ) षष्ठ श्लोकस्य भावमाश्रित्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

यथा– ……………… समीपे उरगाः न ……………… एवमेव व्यायामिनः जनस्य समीपं ……………… न गच्छन्ति। व्यायामः वयोरूपगुणहीनम् अपि जनम् ……………… करोति।

5. **'व्यायामस्य लाभाः' इति विषयमधिकृत्य पञ्चवाक्येषु 'संस्कृतभाषया' एकम् अनुच्छेदं लिखत।**

(अ) यथानिर्देशमुत्तरत–

(क) 'तत्कृत्वा तु सुखं देहम्' अत्र विशेषणपदं किम्?

(ख) 'व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः' अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

(ग) 'पुम्भिरात्महितैषिभिः' अत्र 'पुरुषैः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(घ) 'दीप्ताग्नित्वमनालस्यं स्थिरत्वं लाघवं मृजा' इति वाक्यात् 'गौरवम्' इति पदस्य विपरीतार्थकं पदं चित्वा लिखत।

(ङ) 'न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणम्' अस्मिन् वाक्ये 'तेन' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

6. **(अ) निम्नलिखितानाम् अव्ययानाम् रिक्तस्थानेषु प्रयोगं कुरुत–**

सहसा, अपि, सदृशं, सर्वदा, यदा, सदा, अन्यथा

(क) .... व्यायामः कर्त्तव्यः।

(ख) .... मनुष्यः सम्यक्रूपेण व्यायामं करोति तदा सः .... स्वस्थः तिष्ठति।

(ग) व्यायामेन असुन्दराः .... सुन्दराः भवन्ति।

(घ) व्यायामिनः जनस्य सकाशं वार्धक्यं .... नायाति।

(ङ) व्यायामेन .... किञ्चित् स्थौल्यापकर्षणं नास्ति।

(च) व्यायामं समीक्ष्य एव कर्तव्यम् .... व्याधयः आयान्ति।

(आ) उदाहरणमनुसृत्य वाच्यपरिवर्तनं कुरुत–

	कर्मवाच्यम्	**कर्तृवाच्यम्**
यथा–	आत्महितैषिभिः व्यायामः क्रियते	आत्महितैषिणः व्यायामं कुर्वन्ति।
(1)	बलवता विरुद्धमपि भोजनं पच्यते।	....
(2)	जनैः व्यायामेन कान्तिः लभ्यते।	....
(3)	मोहनेन पाठः पठ्यते।	....
(4)	लतया गीतं गीयते।	....

7. **(अ) अधोलिखितेषु तद्धितपदेषु प्रकृतिं/प्रत्ययं च पृथक् कृत्वा लिखत–**

		मूलशब्दः (प्रकृतिः)		**प्रत्ययः**
(क) पथ्यतमः	=	....	+	....
(ख) सहिष्णुता	=	....	+	....
(ग) अग्नित्वम्	=	....	+	....
(घ) स्थिरत्वम्	=	....	+	....
(ङ) लाघवम्	=	....	+	....

योग्यताविस्तारः

यह पाठ आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुतसंहिता' के चिकित्सा स्थान में वर्णित 24वें अध्याय से संकलित है। इसमें आचार्य सुश्रुत ने व्यायाम की परिभाषा बताते हुए उससे होने वाले लाभों की चर्चा की है। शरीर में सुगठन, कान्ति, स्फूर्ति, सहिष्णुता, नीरोगता आदि व्यायाम के प्रमुख लाभ हैं।

(क) सुश्रुतः आयुर्वेदस्य, 'सुश्रुतसंहिता' इत्याख्यस्य ग्रन्थस्य रचयिता। अस्मिन् ग्रन्थे शल्यचिकित्साया: प्राधान्यमस्ति। सुश्रुतः शल्यशास्त्रज्ञस्य दिवोदासस्य शिष्यः आसीत्। दिवोदासः सुश्रुतं वाराणस्याम् आयुर्वेदम् अपाठयत्। सुश्रुतः दिवोदासस्य उपदेशान् स्वग्रन्थेऽलिखत्।

(ख) उपलब्धासु आयुर्वेदीय-संहितासु 'सुश्रुतसंहिता' सर्वश्रेष्ठः शल्यचिकित्साप्रधानो ग्रन्थः। अस्मिन् ग्रन्थे 120 अध्यायेषु क्रमेण सूत्रस्थाने मौलिकसिद्धान्तानां शल्यकर्मोपयोगि-यन्त्रादीनां, निदानस्थाने प्रमुखाणां रोगाणां, शरीरस्थाने शरीरशास्त्रस्य चिकित्सास्थाने, शल्यचिकित्साया: कल्पस्थाने च विषाणां प्रकरणानि वर्णितानि। अस्य उत्तरतन्त्रे 66 अध्यायाः सन्ति।

(ग) **वैनतेयमिवोरगाः** – कश्यप ऋषि की दो पत्नियाँ थीं– कद्रु और विनता। विनता का पुत्र गरुड़ था और कद्रु के पुत्र सर्प थे। विनता का पुत्र होने के कारण गरुड़ को वैनतेय कहा जाता है। (विनतायाः अयम् वैनतेयः, ढक् (एय) प्रत्यये कृते)। गरुड़ सर्प से अधिक ताकतवर होता है, भयवश साँप गरुड़ के पास जाने का साहस नहीं करता। यहाँ व्यायाम करने वाले मनुष्य की तुलना गरुड़ से तथा व्याधियों की तुलना साँप से की गई है। जिस प्रकार गरुड़ के समक्ष साँप नही जाते। उसी प्रकार व्यायाम करने वाले व्यक्ति के पास रोग नहीं फटकते।

भाषिकविस्तारः

गुणवाचक शब्दों से भाव अर्थ में ष्यञ् अर्थात् य प्रत्यय लगाकर भाववाची पदों का निर्माण किया जाता है। शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि होती है और अन्तिम अ का लोप होता है।

(क)	शूरस्य भावः शौर्यम्	–	शूर	+	ष्यञ्
(ख)	सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम्	–	सुन्दर	+	ष्यञ्
(ग)	सुखस्य भावः सौख्यम्	–	सुख	+	ष्यञ्
(घ)	विदुषः भावः वैदुष्यम्	–	विद्वस्	+	ष्यञ्
(ङ)	मधुरस्य भावः माधुर्यम्	–	मधुर	+	ष्यञ्

(च) स्थूलस्य भावः स्थौल्यम् – स्थूल + ष्यञ्
(छ) अरोगस्य भावः आरोग्यम् – अरोग + ष्यञ्
(ज) सहितस्य भावः साहित्यम् – सहित + ष्यञ्

थाल्-प्रत्ययः– 'प्रकार' अर्थ में थाल् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

जैसे– तेन प्रकारेण – तथा
येन प्रकारेण – यथा
अन्येन प्रकारेण – अन्यथा
सर्वप्रकारेण – सर्वथा
उभयप्रकारेण – उभयथा

भावविस्तारः

(क) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

(ख) लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते।।

(ग) यथा शरीरस्य रक्षायै उचितं भोजनम्, उचितश्च व्यवहारः आवश्यकोऽस्ति तथैव शरीरस्य स्वास्थ्याय व्यायामः अपि आवश्यकः।

(घ) युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

(ङ) पक्षिणः आकाशे उड्डीयन्ते तेषाम् उड्डयनमेव तेषां व्यायामः। पशवोऽपि इतस्ततः पलायन्ते, पलायनमेव तेषां व्यायामः। शैशवे शिशुः स्वहस्तपादौ चालयति, अयमेव तस्य व्यायामः।

वि+आ+यम् धातोः घञ् प्रत्ययात् निष्पन्नः 'व्यायाम' शब्दः विस्तारस्य विकासस्य च वाचकः। यतो हि व्यायामेन अङ्गानां विकासः भवति। अतः सुखपूर्वकं जीवनं यापयितुं मनुष्यैः नित्यं व्यायामः करणीयः।

1061CH04

चतुर्थः पाठः

शिशुलालनम्

प्रस्तुतोऽयं पाठः दिङ्नागविरचितः संस्कृतस्य प्रसिद्धनाट्यग्रन्थः "**कुन्दमाला**" इत्यस्य पञ्चमाङ्कात् सम्पादनं कृत्वा सङ्कलितोऽस्ति। अत्र नाटकांशे रामः स्वपुत्रौ लवकुशौ सिंहासनम् आरोहयितुम् इच्छति किन्तु उभावपि सविनयं तं निवारयतः। सिंहासनारूढः रामः उभयोः रूपलावण्यं दृष्ट्वा मुग्धः सन् स्वक्रोडे गृह्णाति। पाठेऽस्मिन् शिशुवात्सल्यस्य मनोहारिवर्णनं विद्यते।

(सिंहासनस्थः रामः। ततः प्रविशतः विदूषकेनोपदिश्यमानमार्गौ तापसौ कुशलवौ)

विदूषकः – **इत इत आर्यौ!**

कुशलवौ – *(रामम् उपसृत्य प्रणम्य च)* **अपि कुशलं महाराजस्य?**

रामः – **युष्मद्दर्शनात् कुशलमिव। भवतोः किं वयमत्र कुशलप्रश्नस्य भाजनम् एव, न पुनरतिथिजनसमुचितस्य कण्ठाश्लेषस्य। (परिष्वज्य) अहो हृदयग्राही स्पर्शः।**



(आसनार्धमुपवेशयति)

उभौ - राजासनं खल्वेतत्, न युक्तमध्यासितुम्।

रामः - सव्यवधानं न चारित्रलोपाय। तस्मादङ्क - व्यवहितमध्यास्यतां सिंहासनम्।

(अङ्कमुपवेशयति)

उभौ - *(अनिच्छां नाटयतः)* राजन्!

अलमतिदाक्षिण्येन।

रामः - अलमतिशालीनतया।

भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद्
गुणमहतामपि लालनीय एव।
व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात्
पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम्॥

रामः - एष भवतोः सौन्दर्यावलोकजनितेन कौतूहलेन पृच्छामि-क्षत्रियकुल-पितामहयोः सूर्यचन्द्रयोः को वा भवतोर्वंशस्य कर्त्ता?

लवः - भगवन् सहस्रदीधितिः।

रामः - कथमस्मत्समानाभिजनौ संवृत्तौ?

विदूषकः - किं द्वयोरप्येकमेव प्रतिवचनम्?

लवः - भ्रातरावावां सोदर्यौ।

रामः - समरूपः शरीरसन्निवेशः। वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्।

लवः - आवां यमलौ।

रामः - सम्प्रति युज्यते। किं नामधेयम्?

लवः - आर्यस्य वन्दनायां लव इत्यात्मानं श्रावयामि *(कुशं निर्दिश्य)* आर्योऽपि गुरुचरणवन्दनायाम् ....

कुशः - अहमपि कुश इत्यात्मानं श्रावयामि।

रामः - अहो! उदात्तरम्यः समुदाचारः।

किं नामधेयो भवतोर्गुरुः?

लवः – ननु भगवान् वाल्मीकिः।

रामः – केन सम्बन्धेन?

लवः – उपनयनोपदेशेन।

रामः – अहमत्रभवतोः जनकं नामतो वेदितुमिच्छामि।

लवः – न हि जानाम्यस्य नामधेयम्। न कश्चिदस्मिन् तपोवने तस्य नाम व्यवहरति।

रामः – अहो माहात्म्यम्।

कुशः – जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।

रामः – कथ्यताम्।

कुशः – निरनुक्रोशो नाम....

रामः – वयस्य, अपूर्वं खलु नामधेयम्।

विदूषकः – (*विचिन्त्य*) एवं तावत् पृच्छामि। निरनुक्रोश इति क एवं भणति?

कुशः – अम्बा।

विदूषकः – किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?

कुशः – यद्यावयोर्बालभावजनितं किञ्चिदविनयं पश्यति तदा एवम् अधिक्षिपति– निरनुक्रोशस्य पुत्रौ, मा चापलम् इति।

विदूषकः – एतयोर्यदि पितुर्निरनुक्रोश इति नामधेयम् एतयोर्जननी तेनावमानिता निर्वासिता एतेन वचनेन दारकौ निर्भर्त्सयति।

रामः – (*स्वगतम्*) धिङ् मामेवंभूतम्। सा तपस्विनी मत्कृतेनापराधेन स्वापत्यमेवं मन्युगर्भैरक्षरैर्निर्भर्त्सयति।

(*सवाष्पमवलोकयति*)

रामः – अतिदीर्घः प्रवासोऽयं दारुणश्च। (*विदूषकमवलोक्य जनान्तिकम्*) कुतूहलेनाविष्टो मातरमनयोर्नामतो वेदितुमिच्छामि। न युक्तं च स्त्रीगतमनुयोक्तुम्, विशेषतस्तपोवने। तत् कोऽत्राभ्युपायः?

विदूषकः – *(जनान्तिकम्)* अहं पुनः पृच्छामि। *(प्रकाशम्)* किं नामधेया युवयोर्जननी?

लवः – तस्याः द्वे नामनी।

विदूषकः – कथमिव?

लवः – तपोवनवासिनो देवीति नाम्नाह्वयन्ति, भगवान् वाल्मीकिर्वधूरिति।

रामः – अपि च इतस्तावद् वयस्य!
मुहूर्त्तमात्रम्।

विदूषकः – *(उपसृत्य)* आज्ञापयतु भवान्।

रामः – अपि कुमारयोरनयोरस्माकं च सर्वथा समरूपः कुटुम्बवृत्तान्तः?

(नेपथ्ये)

इयती वेला सञ्जाता रामायणगानस्य नियोगः किमर्थं न विधीयते?

उभौ – राजन्! उपाध्यायदूतोऽस्मान् त्वरयति।

रामः – मयापि सम्माननीय एव मुनिनियोगः। तथाहि–

भवन्तौ गायन्तौ कविरपि पुराणो व्रतनिधिर्
गिरां सन्दर्भोऽयं प्रथममवतीर्णो वसुमतीम्।
कथा चेयं श्लाघ्या सरसिरुहनाभस्य नियतं,
पुनाति श्रोतारं रमयति च सोऽयं परिकरः॥

वयस्य! अपूर्वोऽयं मानवानां सरस्वत्यवतारः, तदहं सुहृज्जनसाधारणं श्रोतुमिच्छामि। सन्निधीयन्तां सभासदः, प्रेष्यतामस्मदन्तिकं सौमित्रिः, अहमप्येतयोश्चिरासनपरिखेदं विहरणं कृत्वा अपनयामि।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे)

शब्दार्थाः

पितामहः	पितुः पिता	पिता के पिता	Grand father
सहस्रदीधितिः	सूर्यः	सूर्य	The sun
कण्ठाश्लेषस्य	कण्ठे आश्लेषस्य	गले लगाने का	Hug
परिष्वज्य	आलिङ्गनं कृत्वा	आलिङ्गन करके	Embracing
विचिन्त्य	विचार्य	विचार करके	Considering
अध्यासितुम्	उपवेष्टुम्	बैठने के लिए	To sit
सव्यवधानम्	व्यवधानेन सहितम्	रुकावट सहित	With obstruction
अध्यास्यताम्	उपविश्यताम्	बैठिये	Be seated
अलमतिदाक्षिण्येन	अलमतिकौशलेन	अत्यधिक दक्षता, अधिक कुशलता नहीं करें	Leave aside the excessive adroitness
अङ्कम्	क्रोडम्	गोद में	Lap
हिमकरः	चन्द्रः	चन्द्रमा	The moon
पशुपतिः	शिवः	शिव	Lord shiva
केतक-छदत्वम्	केतकस्य छदत्वम्	केतकी (केवड़े) के पुष्प से बनी मस्तक की शोभा	Crown made of the screw flower
स्वगतम्	आत्मगतम्	मन ही मन	Inner self
समानाभिजनौ	समानकुलोत्पन्नौ	एक कुल में पैदा होने वाले	Belonging to the same family chain
संवृत्तौ	संजातौ	हो गये	Both became
प्रतिवचनम्	उत्तरम्	उत्तर	Reply

सोदार्यौ	– सहोदरौ/यमलौ	– सहोदर/सगे भाई	– Twins
शरीरसन्निवेशः	– अङ्ग–रचनाविन्यासः	– शरीर की बनावट	– Body structure
उदात्तरम्यः	– अत्यन्तः रमणीयः	– अत्यधिक मनोहर	– Very fascinating
समुदाचारः	– शिष्टाचारः	– शिष्टाचार	– Good etiquette
उपनयनोपदेशेन	– उपनयनस्य उपदेशेन (उपनयन–संस्कारदीक्षया)	– उपनयन की दीक्षा के कारण	– By giving the teaching of sacred thread ceremony
नामधेयम्	– नाम	– नाम	– Name
निरनुक्रोशः	– निर्दयः	– दया रहित	– Unkind
वयस्य	– मित्र	– मित्र	– Friend
भणति	– कथयति	– कहता है	– Says
अम्बा	– जननी	– माता	– Mother
उत	– अथवा	– अथवा	– Or
प्रकृतिस्था	– सामान्या मनःस्थितिमयी	– स्वाभाविक रूप से	– In normal condition
अधिक्षिपति	– अधिक्षेपं करोति	– फटकारती है	– Snubs
चापलम्	– चपलताम्	– चंचलता को	– Fickleness
अवमानिता	– तिरस्कृता	– अपमानित	– Insulted
दारकौ	– पुत्रौ	– दो पुत्रों को	– Both sons
निर्भर्त्सयति	– तर्जयति	– धमकाती है	– Scolds
निःश्वस्य	– दीर्घं श्वासं गृहीत्वा	– दीर्घ श्वास लेकर	– Sighing
स्वापत्यम्	– स्वसन्ततिम्	– अपनी सन्तान को	– To own children

अन्वय – गुणमहताम् अपि वयोऽनुरोधात् शिशुजनः लालनीयः एव भवति। बालभावात् हि हिमकरः अपि पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वं व्रजति।

भाव – अत्यधिक गुणी लोगों के लिए भी छोटी उम्र के कारण बालक लालनीय ही होता है। चन्द्रमा बालभाव के कारण ही शङ्कर के मस्तक का आभूषण बनकर केतकी पुष्पों से निर्मित आभूषण की भाँति शोभित होता है।

अन्वय – भवन्तौ गायन्तौ, पुराणः व्रतनिधिः कविः अपि, वसुमतीम् प्रथमम् अवतीर्णः गिराम् अयं सन्दर्भः, सरसिरुहनाभस्य च इयं श्लाघ्या कथा, सः च अयं परिकरः नियतं श्रोतारं पुनाति रमयति च।

भाव – भगवान् वाल्मीकि द्वारा निबद्ध पुराणपुरुष की कथा, कुश-लव द्वारा श्री राम को सुनायी जानी थी, उसी की सूचना देते हुए नेपथ्य से कुश और लव को बिना समय नष्ट किये अपने कर्तव्य का पालन करने का निर्देश दिया जाता है। दोनों राम से आज्ञा लेकर जाना चाहते हैं तब श्री राम उपर्युक्त श्लोक के माध्यम से उस रचना का सम्मान करते हैं।

आप दोनों (कुश और लव) इस कथा का गान करने वाले हैं, तपोनिधि पुराण मुनि (वाल्मीकि) इस रचना के कवि हैं, धरती पर प्रथम बार अवतरित होने वाला स्फुट वाणी का यह काव्य है और इसकी कथा कमलनाभि विष्णु से सम्बद्ध है इस प्रकार निश्चय ही यह संयोग श्रोताओं को पवित्र और आनन्दित करने वाला है।

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) कुशलवौ कम् उपसृत्य प्रणमतः?
   (ख) तपोवनवासिनः कुशस्य मातरं केन नाम्ना आह्वयन्ति ?
   (ग) वयोऽनुरोधात् कः लालनीयः भवति?
   (घ) केन सम्बन्धेन वाल्मीकिः लवकुशयोः गुरुः?
   (ङ) कुत्र लवकुशयोः पितुः नाम न व्यवह्रियते?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   (क) रामाय कुशलवयोः कण्ठाश्लेषस्य स्पर्शः कीदृशः आसीत्?
   (ख) रामः लवकुशौ कुत्र उपवेशयितुम् कथयति?
   (ग) बालभावात् हिमकरः कुत्र विराजते?

(घ) कुशलवयोः वंशस्य कर्त्ता कः?

(ङ) कुशलवयोः मातरं वाल्मीकिः केन नाम्ना आह्वयति?

3. रेखाङ्कितेषु पदेषु विभक्तिं तत्कारणं च उदाहरणानुसारं निर्दिशत–

	विभक्तिः	**तत्कारणम्**
यथा– राजन्! अलम् <u>अतिदाक्षिण्येन</u>।	तृतीया	'अलम्' योगे
(क) रामः लवकुशौ <u>आसनार्धम्</u> उपवेशयति।	....	....
(ख) धिङ् <u>माम्</u> एवं भूतम्।	....	....
(ग) अङ्कव्यवहितम् अध्यास्यतां <u>सिंहासनम्</u>।	....	....
(घ) अलम् <u>अतिविस्तरेण</u>।	....	....
(ङ) <u>रामम्</u> उपसृत्य प्रणम्य च।	....	....

4. यथानिर्देशम् उत्तरत–

(क) 'जानाम्यहं तस्य नामधेयम्' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

(ख) 'किं कुपिता एवं भणति उत प्रकृतिस्था'– अस्मात् वाक्यात् 'हर्षिता' इति पदस्य विपरीतार्थकपदं चित्वा लिखत।

(ग) विदूषकः (उपसृत्य) 'आज्ञापयतु भवान्!' अत्र भवान् इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) 'तस्मादङ्क–व्यवहितम् अध्यास्याताम् सिंहासनम्'– अत्र क्रियापदं किम्?

(ङ) 'वयसस्तु न किञ्चिदन्तरम्'– अत्र 'आयुषः' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

5. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कं प्रति कथयति–

	कः	**कम्**
(क) सव्यवधानं न चारित्र्यलोपाय।	....	....
(ख) किं कुपिता एवं भणति, उत प्रकृतिस्था?	....	....
(ग) जानाम्यहं तस्य नामधेयम्।	....	....
(घ) तस्या द्वे नाम्नी।	....	....
(ङ) वयस्य! अपूर्वं खलु नामधेयम्।	....	....

6. मञ्जूषातः पर्यायद्वयं चित्वा पदानां समक्षं लिखत–

शिवः शिष्टाचारः शशिः चन्द्रशेखरः सुतः इदानीम्
अधुना पुत्रः सूर्यः सदाचारः निशाकरः भानुः

(क) हिमकरः – ....

(ख)	सम्प्रति	–	....	....
(ग)	समुदाचारः	–	....	....
(घ)	पशुपतिः	–	....	....
(ङ)	तनयः	–	....	....
(च)	सहस्रदीधितिः	–	....	....

(अ) विशेषण-विशेष्यपदानि योजयत–

यथा- विशेषण पदानि विशेष्य पदानि

श्लाघ्या – कथा

(1)	उदात्तरम्यः	(क)	समुदाचारः
(2)	अतिदीर्घः	(ख)	स्पर्शः
(3)	समरूपः	(ग)	कुशलवयोः
(4)	हृदयग्राही	(घ)	प्रवासः
(5)	कुमारयोः	(ङ)	कुटुम्बवृत्तान्तः

7. **(क) अधोलिखितपदेषु सन्धिं कुरुत–**

(क) द्वयोः + अपि – ....

(ख) द्वौ + अपि – ....

(ग) कः + अत्र – ....

(घ) अनभिज्ञः + अहम् – ....

(ङ) इति + आत्मानम् – ....

(ख) अधोलिखितपदेषु विच्छेदं कुरुत–

(क) अहमप्येतयोः – ....

(ख) वयोऽनुरोधात् – ....

(ग) समानाभिजनौ – ....

(घ) खल्वेतत् – ....

योग्यताविस्तारः

यह पाठ संस्कृतवाङ्मय के प्रसिद्ध नाटक 'कुन्दमाला' के पंचम अङ्क से सम्पादित कर लिया गया है। इसके रचयिता प्रसिद्ध नाटककार दिङ्नाग हैं। इस नाटकांश में राम कुश और लव को

सिंहासन पर बैठाना चाहते हैं किन्तु वे दोनों अतिशालीनतापूर्वक मना करते हैं। सिंहासनारूढ राम कुश और लव के सौन्दर्य से आकृष्ट होकर उन्हें अपनी गोद में बिठा लेते हैं और आनन्दित होते हैं। पाठ में शिशु स्नेह का अत्यन्त मनोहारी वर्णन किया गया है।

नाट्य-प्रसङ्गः

कुन्दमाला के लेखक दिङ्नाग ने प्रस्तुत नाटक में रामकथा के करुण अवसाद भरे उत्तरार्ध की नाटकीय सम्भावनाओं को मौलिकता से साकार किया है। इसी कथानक पर प्रसिद्ध नाटककार भवभूति का उत्तररामचरित भी आश्रित है। कुन्दमाला के छहों अङ्कों का दृश्यविधान वाल्मीकि-तपोवन के परिसर में ही केन्द्रित है। प्रस्तुत नाटकांश पञ्चम अङ्क से सम्पादित कर सङ्कलित किया गया है। लव और कुश से मिलने पर राम के हृदय में उनसे आलिंगन की लालसा होती है। उनके स्पर्शसुख से अभिभूत हो राम, उन्हें अपने सिंहासन पर, अपनी गोद में बिठाकर लाड़ करते हैं। इसी भाव की पुष्टि में नाटक में यह श्लोक उद्धृत है-

भवति शिशुजनो वयोऽनुरोधाद् गुणमहतामपि लालनीय एव।
व्रजति हिमकरोऽपि बालभावात् पशुपति-मस्तक-केतकच्छदत्वम्॥

शिशुस्नेहसमभावश्लोकाः-

अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम्।
कां निर्वृतिं चेतसि तस्य कुर्याद् यस्यायमङ्कात् कृतिनः प्ररूढः॥

(कालिदासः)

अन्तःकरणतत्त्वस्य दम्पत्योः स्नेहसंश्रयात्।
आनन्दग्रन्थिरेकोऽयमपत्यमिति पठ्यते॥ **(भवभूतिः)**

धूलीधूसरतनवः क्रीडाराज्ये स्वके च रममाणाः।
कृतमुखवाद्यविकाराः क्रीडन्ति सुनिर्भरं बालाः॥ **(अज्ञातकविः)**

अनियतरुदितस्मितविराजत् कतिपयकोमलदन्तकुड्मलाग्रम्।
वदनकमलकं शिशोः स्मरामि स्खलदसमञ्जसमञ्जुजल्पितं ते॥

(अज्ञातकविः)

1061CH05

पञ्चमः पाठः

जननी तुल्यवत्सला

प्रस्तुतोऽयं पाठः महर्षिवेदव्यासविरचितस्य ऐतिहासिकग्रन्थस्य महाभारतान्तर्गतस्य **"वनपर्व"** इत्यतः गृहीतः। इयं कथा सर्वेषु प्राणिषु समदृष्टिभावनां प्रबोधयति। अस्याः अभीप्सितः अर्थोऽस्ति यद् समाजे विद्यमानान् दुर्बलान् प्राणिनः प्रत्यपि मातुः वात्सल्यं प्रकर्षेणैव भवति।

कश्चित् कृषकः बलीवर्दाभ्यां क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्नासीत्। तयोः बलीवर्दयोः एकः शरीरेण दुर्बलः जवेन गन्तुमशक्तश्चासीत्। अतः कृषकः तं दुर्बलं वृषभं तोदनेन नुद्यमानः अवर्तत। सः ऋषभः हलमूढ्वा गन्तुमशक्तः क्षेत्रे पपात। क्रुद्धः कृषीवलः तमुत्थापयितुं बहुवारम् यत्नमकरोत्। तथापि वृषः नोत्थितः।



भूमौ पतिते स्वपुत्रं दृष्ट्वा सर्वधेनूनां मातुः सुरभेः नेत्राभ्यामश्रूणि आविरासन्। सुरभेरिमामवस्थां दृष्ट्वा सुराधिपः तामपृच्छत्–"अयि शुभे! किमेवं रोदिषि? उच्यताम्" इति। सा च

विनिपातो न वः कश्चिद् दृश्यते त्रिदशाधिप!।
अहं तु पुत्रं शोचामि, तेन रोदिमि कौशिक!।।

"भो वासव! पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहं रोदिमि। सः दीन इति जानन्नपि कृषकः तं बहुधा पीडयति। सः कृच्छ्रेण भारमुद्वहति। इतरमिव धुरं वोढुं सः न शक्नोति। एतत् भवान् पश्यति न?" इति प्रत्यवोचत्।

"भद्रे! नूनम्। सहस्राधिकेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन्नेव एतादृशं वात्सल्यं कथम्?" इति इन्द्रेण पृष्टा सुरभिः प्रत्यवोचत् –

यदि पुत्रसहस्रं मे, सर्वत्र सममेव मे।
दीनस्य तु सतः शक्र! पुत्रस्याभ्यधिका कृपा॥

"बहून्यपत्यानि मे सन्तीति सत्यम्। तथाप्यहमेतस्मिन् पुत्रे विशिष्य आत्मवेदनामनुभवामि। यतो हि अयमन्येभ्यो दुर्बलः। सर्वेष्वपत्येषु जननी तुल्यवत्सला एव। तथापि दुर्बले सुते मातुः अभ्यधिका कृपा सहजैव" इति। सुरभिवचनं श्रुत्वा भृशं विस्मितस्याखण्डलस्यापि हृदयमद्रवत्। स च तामेवमसान्त्वयत्- "गच्छ वत्से! सर्वं भद्रं जायेत।"



अचिरादेव चण्डवातेन मेघरवैश्च सह प्रवर्षः समजायत। लोकानां पश्यताम् एव सर्वत्र जलोपप्लवः सञ्जातः। कृषकः हर्षातिरेकेण कर्षणविमुखः सन् वृषभौ नीत्वा गृहमगात्।

अपत्येषु च सर्वेषु जननी तुल्यवत्सला।
पुत्रे दीने तु सा माता कृपार्द्रहृदया भवेत्॥

शब्दार्थाः

बलीवर्दाभ्याम्	- वृषभाभ्याम्	- दो बैलों से	- By two bullocks
क्षेत्रकर्षणम्	- क्षेत्रस्य कर्षणम्	- खेत की जुताई	- Plough the field
जवेन	- तीव्रगत्या	- तीव्रगति से	- With speed
तोदनेन	- कष्टप्रदानेन	- कष्ट देने से	- By torturing
नुद्यमानः	- बलेन नीयमानः	- धकेला जाता हुआ, हाँका जाता हुआ	- Being pulled
हलमूढ्वा	- हलम् उत्थाप्य	- हल उठाकर, हल ढोकर-	Carrying the plough
पपात	- भूमौ अपतत्	- गिर गया	- Fell down
कृषीवलः	- कृषकः	- किसान	- Farmer
उत्थापयितुम्	- उपरि नेतुम्	- उठाने के लिए	- To uplift

वृषः	– वृषभः	– बैल	– Bullock
धेनूनाम्	– गवाम्	– गायों की	– Of cows
नेत्राभ्याम्	– चक्षुर्भ्याम्, नयनाभ्याम्	– दोनों आँखों से	– From both eyes
अश्रूणि	– नयनजलम्	– आँसू	– Tears
आविरासन्नान्	– प्रकटिताः	– सामने आ गए	– Appeared
सुराधिपः	– सुराणां राजा, देवानाम् अधिपः	– देवताओं के राजा (इन्द्र)	– King of Gods
उच्यताम्	– कथ्यताम्	– कहें, कहा जाए	– Say
वासवः	– इन्द्रः, देवराजः	– इन्द्र	– Indra
कृच्छ्रेण	– काठिन्येन	– कठिनाई से	– With difficulty
इतरमिव	– अपरम् इव	– दूसरे (बैल) के समान	– Like an other bullock
धुरम्	– धुरम्	– जुए को (गाड़ी के जुए का वह भाग जो बैलों के कंधों पर रखा रहता है)	– Yoke
वोढुम्	– वहनाय योग्यम्	– ढोने के लिए	– To carry
प्रत्यवोचत्	– उत्तरं दत्तवान्	– जवाब दिया	– Replied
नूनम्	– निश्चयेन	– निश्चय ही	– Certainly
सहस्रम्	– दशशतम्	– हज़ार	– Thousand
वात्सल्यम्	– स्नेहभावः	– वात्सल्य (प्रेमभाव)	– Affection
अपत्यानि	– सन्ततयः	– सन्तान	– Children
विशिष्य	– विशेषतः	– विशेषकर	– Specially
वेदनाम्	– पीडाम्, दुःखम्	– कष्ट को	– The pain
तुल्यवत्सला	– समस्नेहयुता	– समान रूप से प्यार करने वाली	– Equal affection
सुतः	– पुत्रः/तनयः	– पुत्र	– Son
भृशम्	– अत्यधिकम्	– बहुत अधिक	– Very much
आखण्डलस्य	– देवराजस्य इन्द्रस्य	– इन्द्र का	– Of Indra

असान्त्वयत् –	सान्त्वनं दत्तवान्, समाश्वासयत्	– सान्त्वना दी (दिलासा दी)	– Consoled
अचिरात् –	शीघ्रम्	– शीघ्र ही	– Soon
चण्डवातेन –	वेगयुता वायुना	– प्रचण्ड (तीव्र) हवा से	– With swift wind
मेघरवैः –	मेघस्य गर्जनेन	– बादलों के गर्जन से	– Thundering
प्रवर्षः –	वृष्टिः	– वर्षा	– Heavy rain
जलोपप्लवः –	जलस्य उपप्लवः (उत्पातः)	– पानी द्वारा तबाही	– Destruction by water
कर्षणविमुखः –	कर्षणकर्मणः विमुखः	– जोतने के काम से विमुख होकर	– Leaving ploughing work
वृषभौ –	वृषौ	– दोनों बैलों को	– Both the bullocks
अगात् –	गतवान्, अगच्छत्	– गया	– Went
त्रिदशाधिपः –	त्रिदशानाम् अधिपः=इन्द्रः,	– देवताओं का राजा=इन्द्र	– King of Gods

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) वृषभः दीनः इति जानन्नपि कः तं नुद्यमानः आसीत्?
   (ख) वृषभः कुत्र पपात?
   (ग) दुर्बले सुते कस्याः अधिका कृपा भवति?
   (घ) कयोः एकः शरीरेण दुर्बलः आसीत्?
   (ङ) चण्डवातेन मेघरवैश्च सह कः समजायत?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   (क) कृषकः किं करोति स्म?
   (ख) माता सुरभिः किमर्थम् अश्रूणि मुञ्चति स्म?
   (ग) सुरभिः इन्द्रस्य प्रश्नस्य किमुत्तरं ददाति?

(घ) मातुः अधिका कृपा कस्मिन् भवति?

(ङ) इन्द्रः दुर्बलवृषभस्य कष्टानि अपाकर्तुं किं कृतवान्?

(च) जननी कीदृशी भवति?

(छ) पाठेऽस्मिन् कयोः संवादः विद्यते?

3. 'क' स्तम्भे दत्तानां पदानां मेलनं 'ख' स्तम्भे दत्तैः समानार्थकपदैः कुरुत–

क स्तम्भ	**ख स्तम्भ**
(क) कृच्छ्रेण	(i) वृषभः
(ख) चक्षुर्भ्याम्	(ii) वासवः
(ग) जवेन	(iii) नेत्राभ्याम्
(घ) इन्द्रः	(iv) अचिरम्
(ङ) पुत्राः	(v) द्रुतगत्या
(च) शीघ्रम्	(vi) काठिन्येन
(छ) बलीवर्दः	(vii) सुताः

4. स्थूलपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) सः **कृच्छ्रेण** भारम् उद्वहति।

(ख) **सुराधिपः** ताम् अपृच्छत्।

(ग) अयम् **अन्येभ्यो** दुर्बलः।

(घ) **धेनूनाम्** माता सुरभिः आसीत्।

(ङ) **सहस्राधिकेषु** पुत्रेषु सत्स्वपि सा दुःखी आसीत्।

5. रेखाङ्कितपदे यथास्थानं सन्धिं विच्छेदं वा कुरुत–

(क) कृषकः क्षेत्रकर्षणं कुर्वन्+आसीत्।

(ख) तयोरेकः वृषभः दुर्बलः आसीत्।

(ग) तथापि वृषः न+उत्थितः।

(घ) सत्स्वपि बहुषु पुत्रेषु अस्मिन् वात्सल्यं कथम्?

(ङ) तथा+अपि+अहम्+एतस्मिन् स्नेहम् अनुभवामि।

(च) मे बहूनि+अपत्यानि सन्ति।

(छ) सर्वत्र जलोपप्लवः सञ्जातः।

6. अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखांकितसर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्–

(क) सा च अवदत् भो वासव! अहम् भृशं दु:खिता अस्मि।

(ख) पुत्रस्य दैन्यं दृष्ट्वा अहम् रोदिमि।

(ग) सः दीनः इति जानन् अपि कृषकः तं पीडयति।

(घ) मे बहूनि अपत्यानि सन्ति।

(ङ) सः च ताम् एवम् असान्त्वयत्।

(च) सहस्रेषु पुत्रेषु सत्स्वपि तव अस्मिन् प्रीतिः अस्ति।

7. 'क' स्तम्भे विशेषणपदं लिखितम्, 'ख' स्तम्भे पुनः विशेष्यपदम्। तयोः मेलनं कुरुत–

	क स्तम्भ	ख स्तम्भ
(क)	कश्चित्	(i) वृषभम्
(ख)	दुर्बलम्	(ii) कृपा
(ग)	क्रुद्धः	(iii) कृषीवलः
(घ)	सहस्राधिकेषु	(iv) आखण्डलः
(ङ)	अभ्यधिका	(v) जननी
(च)	विस्मितः	(vi) पुत्रेषु
(छ)	तुल्यवत्सला	(vii) कृषकः

योग्यताविस्तारः

महाभारत में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जो आज के युग में भी उपादेय हैं। महाभारत के वनपर्व से ली गई यह कथा न केवल मनुष्यों अपितु सभी जीव-जन्तुओं के प्रति समदृष्टि पर बल देती है। समाज में दुर्बल लोगों अथवा जीवों के प्रति भी माँ की ममता प्रगाढ़ होती है, यह इस पाठ का अभिप्रेत है। प्रस्तुत पाठ्यांश महाभारत से उद्धृत है, जिसमें मुख्यतः व्यास द्वारा धृतराष्ट्र को एक कथा के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि तुम पिता हो और एक पिता होने के

नाते अपने पुत्रों के साथ-साथ अपने भतीजों के हित का खयाल रखना भी उचित है। इस प्रसंग में गाय के मातृत्व की चर्चा करते हुए गोमाता सुरभि और इन्द्र के संवाद के माध्यम से यह बताया गया है कि माता के लिए सभी सन्तान बराबर होती हैं। उसके हृदय में सबके लिए समान स्नेह होता है। इस कथा का आधार महाभारत, वनपर्व, दशम अध्याय, श्लोक संख्या 8 से श्लोक संख्या 16 तक है। महाभारत के विषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है,

धर्मे अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

अर्थात्- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन पुरुषार्थ-चतुष्टय के बारे में जो बातें यहाँ हैं वे तो अन्यत्र मिल सकती हैं, पर जो कुछ यहाँ नहीं है, वह अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

उपरोक्त पाठ में मानवीय मूल्यों की पराकाष्ठा दिखाई गई है। यद्यपि माता के हृदय में अपनी सभी सन्ततियों के प्रति समान प्रेम होता है, पर जो कमजोर सन्तान होती है उसके प्रति उसके मन में अतिशय प्रेम होता है।

मातृमहत्त्वविषयक श्लोक–

नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गतिः।
नास्ति मातृसमं त्राणं, नास्ति मातृसमा प्रिया॥

– **वेदव्यास**

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्येभ्यः शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन् माता, गौरवेणातिरिच्यते॥ – **मनुस्मृति**

माता गुरुतरा भूमेः, खात् पितोच्चतरस्तथा।
मनः शीघ्रतरं वातात्, चिन्ता बहुतरी तृणात्॥

– **महाभारत**

निरतिशयं गरिमाणं तेन जनन्याः स्मरन्ति विद्वांसः।
यत् कमपि वहति गर्भे महतामपि स गुरुर्भवति॥

भारतीय संस्कृति में गौ का महत्त्व अनादिकाल से रहा है। हमारे यहाँ सभी इच्छित वस्तुओं को देने की क्षमता गाय में है, इस बात को कामधेनु की संकल्पना से समझा जा सकता है। कामधेनु के बारे में यह माना जाता है कि उनके सामने जो भी इच्छा व्यक्त की जाती है वह तत्काल फलवती हो जाती है।

काले फलं यल्लभते मनुष्यो
न कामधेनोश्च समं द्विजेभ्य:॥

कन्यारथानां करिवाजियुक्तै:
शतै: सहस्रै: सततं द्विजेभ्य:॥

दत्तै: फलं यल्लभते मनुष्य:
समं तथा स्यान्नतु कामधेनो:॥

गाय के महत्त्व के संदर्भ में महाकवि कालिदास के रघुवंश में, सन्तान प्राप्ति की कामना से राजा दिलीप द्वारा ऋषि वशिष्ठ की कामधेनु नन्दिनी की सेवा और उनकी प्रसन्नता से प्रतापी पुत्र प्राप्त करने की कथा भी काफी प्रसिद्ध है। आज भी गाय की उपयोगिता प्राय: सर्वस्वीकृत ही है।

एकत्र पृथ्वी सर्वा, सशैलवनकानना।
तस्या: गौर्ज्यायसी, साक्षादेकत्रोभयतोमुखी॥

गावो भूतं च भव्यं च, गाव: पुष्टि: सनातनी।
गावो लक्ष्म्यास्तथाभूतं, गोषु दत्तं न नश्यति॥

1061CH06

षष्ठः पाठः

सुभाषितानि

प्रस्तुतोऽयं पाठः विविधग्रन्थात् सङ्कलितानां दशसुभाषितानां सङ्ग्रहो वर्तते। संस्कृतसाहित्ये सार्वभौमिकं सत्यं प्रकाशयितुम् अर्थगाम्भीर्ययुता पद्यमयी प्रेरणात्मिका रचना सुभाषितमिति कथ्यते। अयं पाठांशः परिश्रमस्य महत्त्वम्, क्रोधस्य दुष्प्रभावः, सामाजिकमहत्त्वम्, सर्वेषां वस्तूनाम् उपादेयता, बुद्धेः वैशिष्ट्यम् इत्यादीन् विषयान् प्रकाशयति।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥1॥

गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो,
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः ।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः,
करी च सिंहस्य बलं न मूषकः ॥2॥

निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति,
ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति ।
अकारणद्वेषि मनस्तु यस्य वै,
कथं जनस्तं परितोषयिष्यति ॥3॥

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते,
हयाश्च नागाश्च वहन्ति बोधिताः।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः,
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ॥4॥

क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणां,
देहस्थितो देहविनाशनाय ।
यथास्थितः काष्ठगतो हि वह्निः,
स एव वह्निर्दहते शरीरम् ॥5॥

मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति,
गावश्च गोभिः तुरगास्तुरङ्गैः ।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः,
समान-शील-व्यसनेषु सख्यम् ॥6॥

सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः ।
यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते ॥7॥

अमन्त्रमक्षरं नास्ति, नास्ति मूलमनौषधम् ।
अयोग्यः पुरुषः नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः ॥8॥

संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता ।
उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा ॥9॥

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चिन्निरर्थकम् ।
अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः ॥10॥

शब्दार्थाः

अवसीदति	- दुःखम् अनुभवति	- दुःखी होता है	- Feeling hurt
वेत्ति	- जानाति	- जानता है	- Knows
वायसः	- काकः	- कौआ	Crow
करी	- गजः	- हाथी	- Elephant
निमित्तम्	- कारणम्	- कारण	- Purpose

प्रकुप्यति	– अतिकोपं करोति	– अत्यधिक क्रोध करता है	– Gets very angry
ध्रुवं	– निश्चितम्	– निश्चित रूप से	– Certainly
अपगमे	– समाप्ते	– समाप्त होने पर	– At the end
प्रसीदति	– प्रसन्नः भवति	– प्रसन्न होता है	– Appease
अकारणद्वेषि मनः	– अकारणं द्वेषं करोति इति अकारणद्वेषि, तद्मनः	– अकारण ही द्वेष करनेवाला मन	– Mind which holds enemity without reason
परितोषयिष्यति	– परितोषं दास्यति	– सन्तुष्ट करेगा	– Will satisfy
उदीरितः	– उक्तः, कथितः	– कहा हुआ	– Said/told
गृह्यते	– प्राप्यते	– प्राप्त किया जाता है	– Accepted
हयाः	– अश्वाः	– घोड़े	– Horses
नागाः	– हस्तिनः, गजाः	– हाथी	– Elephants
ऊहति	– निर्धारयति	– अंदाजा लगाता है	– Assumes
इङ्गितज्ञानफलाः	– इङ्गितं ज्ञानम्, इङ्गितज्ञानमेव फलं यस्याः ताः	– सङ्केतजन्य ज्ञान रूपी फल वाले	– Which under stand by indications
पण्डितः	– विद्वान्, बुद्धिमान्	– बुद्धिमान्	– Scholar
वह्निः	– अग्निः	– आग	– Fire
दहते	– ज्वालयति	– जलाता है	– Burns
अनुव्रजन्ति	– पश्चात् गच्छन्ति	– पीछे-पीछे जाते हैं, अनुसरण करते हैं	– Follows
तुरगाः	– अश्वाः	– घोड़े	– Horses
सुधियः	– विद्वांसः	– विद्वान्, मनीषी	– Learned People
व्यसनेषु	– दुर्व्यसनेषु	– बुरी आदतों में	– In addictions
सख्यम्	– मैत्री	– मित्रता	– Friendship
सेवितव्यः	– आश्रयितव्यः	– आश्रय लेने योग्य	– Should be taken as a shelter

दैवात्	– भाग्यात्	– भाग्य से	– By luck
निवार्यते	– निवारणं क्रियते	– रोका जाता है	– Being prevented
अमन्त्रम्	– न मन्त्रं, अमन्त्रमक्षरं इति	– मन्त्रहीन	– Powerless word
मन्त्रः	– मननयोग्यः	– मनन योग्य/सारवान्	– Hymen
मूलम्	– पादपानाम् अधोभागः	– जड़	– Root
औषधम्	– औषधि+अण् (वनस्पति-निर्मितम्)	– दवा, जड़ी-बूटी	– Herbal medicine
योजकः	– योजयति यः, सः (युज् +ण्वुल्)	– जोड़ने वाला	– Connector
सविता	– सूर्यः	– सूर्य	– The sun
खरः	– गर्दभः, रासभः	– गधा	– Donkey

श्लोकानाम् अन्वयः–

1. मनुष्याणां शरीरस्थः महान् शत्रुः आलस्यम्। उद्यमसमः बन्धुः न अस्ति यं कृत्वा (मनुष्यः) न अवसीदति।
2. गुणी गुणं वेत्ति, निर्गुणः (गुणं) न वेत्ति, बली बलं वेत्ति, निर्बलः (बलं) न वेत्ति, वसन्तस्य गुणं पिकः (वेत्ति), वायसः न (वेत्ति), सिंहस्य बलं करी (वेत्ति), मूषकः न।
3. यः निमित्तम् उद्दिश्य प्रकुप्यति सः तस्य (निमित्तस्य) अपगमे ध्रुवं प्रसीदति यस्य मनः अकारणद्वेषि (अस्ति) जनः तं कथं परितोषयिष्यति।
4. पशुना अपि उदीरितः अर्थः गृह्यते, हयाः नागाः च बोधिताः (भारं) वहन्ति, पण्डितः जनः अनुक्तम् अपि ऊहति, बुद्धयः परेङ्गितज्ञानफलाः भवन्ति।
5. नराणां देहविनाशनाय प्रथमः शत्रुः देहस्थितः क्रोधः। यथा काष्ठगतः स्थितः वह्निः काष्ठम् एव दहते (तथैव शरीरस्थः क्रोधः) शरीरं दहते ।
6. मृगाः मृगैः सह, गावश्च गोभिः सह, तुरगाः तुरङ्गैः सह, मूर्खाः मूर्खैः सह, सुधियः सुधीभिः सह अनुव्रजन्ति। समानशीलव्यसनेषु सख्यम् (भवति)।
7. फलच्छाया-समन्वितः महावृक्षः सेवितव्यः। दैवात् यदि फलं नास्ति (वृक्षस्य) छाया केन निवार्यते।
8. अमन्त्रम् अक्षरं नास्ति, अनौषधम् मूलं नास्ति, अयोग्यः पुरुषः नास्ति, तत्र योजकः दुर्लभः।

9. महताम् संपत्तौ विपत्तौ च एकरूपता भवति। यथा सविता उदये रक्तः भवति, तथा एव अस्तमये च रक्तः भवति।

10. विचित्रे संसारे खलु किञ्चित् निरर्थकं नास्ति। अश्वः चेत् धावने वीरः, (तर्हि) भारस्य वहने खरः (वीरः) अस्ति।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) मनुष्याणां महान् रिपुः कः?

(ख) गुणी किं वेत्ति?

(ग) केषां सम्पत्तौ च विपत्तौ च महताम् एकरूपता?

(घ) पशुना अपि कीदृशः गृह्यते?

(ङ) उदयसमये अस्तसमये च कः रक्तः भवति?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) केन समः बन्धुः नास्ति?

(ख) वसन्तस्य गुणं कः जानाति।

(ग) बुद्धयः कीदृश्यः भवन्ति?

(घ) नराणां प्रथमः शत्रुः कः?

(ङ) सुधियः सख्यं केन सह भवति?

(च) अस्माभिः कीदृशः वृक्षः सेवितव्यः?

3. अधोलिखिते अन्वयद्वये रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत–

(क) यः .... उद्दिश्य प्रकुप्यति तस्य .... सः ध्रुवं प्रसीदति। यस्य मनः अकारणद्वेषि अस्ति, ... तं कथं परितोषयिष्यति?

(ख) .... संसारे खलु .... निरर्थकम् नास्ति। अश्वः चेत् .... वीरः, खरः .... वहने (वीरः) (भवति)

4. अधोलिखितानां वाक्यानां कृते समानार्थकान् श्लोकांशान् पाठात् चित्वा लिखत–

(क) विद्वान् स एव भवति यः अनुक्तम् अपि तथ्यं जानाति।

(ख) मनुष्यः समस्वभावैः जनैः सह मित्रतां करोति।

(ग) परिश्रमं कुर्वाणः नरः कदापि दुःखं न प्राप्नोति।
(घ) महान्तः जनाः सर्वदैव समप्रकृतयः भवन्ति।

5. यथानिर्देशं परिवर्तनं विधाय वाक्यानि रचयत–

(क) गुणी गुणं जानाति। (बहुवचने)
(ख) पशुः उदीरितम् अर्थं गृह्णाति। (कर्मवाच्ये)
(ग) मृगाः मृगैः सह अनुव्रजन्ति। (एकवचने)
(घ) कः छायां निवारयति। (कर्मवाच्ये)
(ङ) तेन एव वह्निना शरीरं दह्यते। (कर्तृवाच्ये)

6. (अ) सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत–

(क) न	+	अस्ति	+	उद्यमसमः	–	....
(ख)	+	......			–	तस्यापगमे
(ग) अनुक्तम्	+	अपि	+	ऊहति	–	....
(घ)	+	....			–	गावश्च
(ङ)	+	....			–	नास्ति
(च) रक्तः	+	च	+	अस्तमये	–	....
(छ)	+	....			–	योजकस्तत्र

(आ) समस्तपदं/विग्रहं लिखत–

(क) उद्यमसमः ....
(ख) शरीरे स्थितः ....
(ग) निर्बलः ....
(घ) देहस्य विनाशनाय ....
(ङ) महावृक्षः ....
(च) समानं शीलं व्यसनं येषां तेषु ....
(छ) अयोग्यः ....

7. अधोलिखितानां पदानां विलोमपदानि पाठात् चित्वा लिखत–

(क) प्रसीदति ....
(ख) मूर्खः ....

(ग) बली ....
(घ) सुलभः ....
(ङ) संपत्तौ ....
(च) अस्तमये ....
(छ) सार्थकम् ....

(अ) संस्कृतेन वाक्यप्रयोगं कुरुत–

(क) वायसः ....
(ख) निमित्तम् ....
(ग) सूर्यः ....
(घ) पिकः ....
(ङ) वह्निः ....

परियोजनाकार्यम्

(क) उद्यमस्य महत्त्वं वर्णयतः पञ्चश्लोकान् लिखत।

अथवा

कापि कथा या भवद्भिः पठिता स्यात्, यस्याम् उद्यमस्य महत्त्वं वर्णितम्, तां स्वभाषया लिखत।

(ख) निमित्तमुद्दिश्य यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति। यदि भवता कदापि ईदृशः अनुभवः कृतः तर्हि स्वीकृतभाषया लिखत।

योग्यताविस्तारः

संस्कृत कृतियों के जिन पद्यों या पद्यांशों में सार्वभौम सत्य को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। उन पद्यों को सुभाषित कहते हैं। यह पाठ ऐसे दस सुभाषितों का संग्रह है जो संस्कृत के विभिन्न ग्रंथों से संकलित हैं। इनमें परिश्रम का महत्त्व, क्रोध का दुष्प्रभाव, सभी वस्तुओं की उपादेयता और बुद्धि की विशेषता आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

1. तत्पुरुष समास

शरीरस्थः	–	शरीरे स्थितः
गृहस्थः	–	गृहे स्थितः
मनस्स्थः	–	मनसि स्थितः
तटस्थः	–	तटे स्थितः

कूपस्थः	–	कूपे स्थितः
वृक्षस्थः	–	वृक्षे स्थितः
विमानस्थः	–	विमाने स्थितः

2. अव्ययीभाव समास

निर्गुणम्	–	गुणानाम् अभावः
निर्मक्षिकम्	–	मक्षिकाणाम् अभावः
निर्जलम्	–	जलस्य अभावः
निराहारम्	–	आहारस्य अभावः

3. पर्यायवाचिपदानि

शत्रुः	–	रिपुः, अरिः, वैरिः
मित्रम्	–	सखा, बन्धुः, सुहृद्
वह्निः	–	अग्निः, अनलः, पावकः
सुधियः	–	विद्वांसः, विज्ञाः, अभिज्ञाः
अश्वः	–	तुरगः, हयः, घोटकः
गजः	–	करी, हस्ती, दन्ती, नागः, कुञ्जरः।
वृक्षः	–	द्रुमः, तरुः, महीरुहः, विटपः, पादपः।
सविता	–	सूर्यः, मित्रः, दिवाकरः, भास्करः।

मन्त्रः – 'मननात् त्रायते इति मन्त्रः।'

अर्थात् वे शब्द जो सोच-विचार कर बोले जाएँ। सलाह लेना, मन्त्रणा करना। मन्त्र्+अच् (किसी भी देवता को सम्बोधित) वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वैदिक मन्त्र। वेद का पाठ तीन प्रकार का है– यदि छन्दोबद्ध और उच्च स्वर से बोला जाने वाला है तो 'ऋक्' है, यदि गद्यमय और मन्दस्वर में बोला जाने वाला है तो 'यजुस्' है, और यदि छन्दोबद्धता के साथ गेयता है तो 'सामन्' है (प्रार्थनापरक)। यजुस् जो किसी देवता को उद्दिष्ट करके बोला गया हो– 'ॐ नमः शिवाय' आदि। पंचतंत्र में भी मंत्रणा, परामर्श, उपदेश तथा गुप्त मंत्रणा के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग हुआ है।

1061CH07

सप्तमः पाठः

सौहार्दं प्रकृतेः शोभा

अयं पाठः परस्परं स्नेहसौहार्दपूर्णः व्यवहारः स्यादिति बोधयति। सम्प्रति वयं पश्यामः यत् समाजे जनाः आत्माभिमानिनः सञ्जाताः, ते परस्परं तिरस्कुर्वन्ति। स्वार्थपूरणे संलग्नाः ते परेषां कल्याणविषये नैव किमपि चिन्तयन्ति। तेषां जीवनोद्देश्यम् अधुना इदं सञ्जातम् –

"नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वैः उपायैः फलमेव साध्यम्"

अतः समाजे पारस्परिकस्नेहसंवर्धनाय अस्मिन् पाठे पशुपक्षिणां माध्यमेन समाजे व्यवहृतम् आत्माभिमानं दर्शयन्, प्रकृतिमातुः माध्यमेन अन्ते निष्कर्षः स्थापितः यत् कालानुगुणं सर्वेषां महत्त्वं भवति, सर्वे अन्योन्याश्रिताः सन्ति। अतः अस्माभिः स्वकल्याणाय परस्परं स्नेहेन मैत्रीपूर्णव्यवहारेण च भाव्यम्।



वनस्य दृश्यं समीपे एवैका नदी वहति। एकः सिंहः सुखेन विश्राम्यते तदैव एकः वानरः आगत्य तस्य पुच्छं धुनाति। क्रुद्धः सिंहः तं प्रहर्तुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा वृक्षमारूढः। तदैव अन्यस्मात् वृक्षात् अपरः वानरः सिंहस्य कर्णमाकृष्य पुनः वृक्षोपरि आरोहति। एवमेव वानराः वारं वारं सिंहं तुदन्ति। क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति, गर्जति परं किमपि कर्तुमसमर्थः एव तिष्ठति। वानराः हसन्ति वृक्षोपरि च विविधाः पक्षिणः अपि सिंहस्य एतादृशीं दशां दृष्ट्वा हर्षमिश्रितं कलरवं कुर्वन्ति।

निद्राभङ्गदुःखेन वनराजः सन्नपि तुच्छजीवैः आत्मनः एतादृश्या दुरवस्थया श्रान्तः सर्वजन्तून् दृष्ट्वा पृच्छति–

सिंहः – (क्रोधेन गर्जन्) भोः! अहं वनराजः किं भयं न जायते? किमर्थं मामेवं तुदन्ति सर्वे मिलित्वा?

एकः वानरः – यतः त्वं वनराजः भवितुं तु सर्वथाऽयोग्यः। राजा तु रक्षकः भवति परं भवान् तु भक्षकः। अपि च स्वरक्षायामपि समर्थः नासि तर्हि कथमस्मान् रक्षिष्यसि?

अन्यः वानरः – किं न श्रुता त्वया पञ्चतन्त्रोक्तिः –

यो न रक्षति वित्रस्तान् पीड्यमानान्परैः सदा।
जन्तून् पार्थिवरूपेण स कृतान्तो न संशयः॥

काकः – आम् सत्यं कथितं त्वया– वस्तुतः वनराजः भवितुं तु अहमेव योग्यः।

पिकः – *(उपहसन्)* कथं त्वं योग्यः वनराजः भवितुं, यत्र तत्र का-का इति कर्कशध्वनिना वातावरणमाकुलीकरोषि। न रूपम्, न ध्वनिरस्ति। कृष्णवर्णम् मेध्यामेध्यभक्षकं त्वां कथं वनराजं मन्यामहे वयम्?

काकः – अरे! अरे! किं जल्पसि? यदि अहं कृष्णवर्णः तर्हि त्वं किं गौराङ्गः? अपि च विस्मर्यते किं यत् मम सत्यप्रियता तु जनानां कृते उदाहरणस्वरूपा–'अनृतं वदसि चेत् काकः दशेत्'– इति प्रकारेण। अस्माकं परिश्रमः ऐक्यं च विश्वप्रथितम्। अपि च काकचेष्टः विद्यार्थी एव आदर्शच्छात्रः मन्यते।



पिकः – अलम् अलम् अतिविकत्थनेन। किं विस्मर्यते यत्–

काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः।
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः॥

काकः – रे परभृत्! अहं यदि तव संततिं न पालयामि तर्हि कुत्र स्युः पिकाः? अतः अहम् एव करुणापरः पक्षिसम्राट् काकः।

गजः – समीपतः एवागच्छन् अरे! अरे! सर्वं सम्भाषणं शृण्वन्नेवाहम् अत्रागच्छम्। अहं विशालकायः, बलशाली, पराक्रमी च। सिंहः वा स्यात् अथवा अन्यः कोऽपि, वन्यपशून् तु तुदन्तं जन्तुमहं स्वशुण्डेन पोथयित्वा मारयिष्यामि। किमन्यः कोऽप्यस्ति एतादृशः पराक्रमी। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।

वानरः – अरे! अरे! एवं वा (शीघ्रमेव गजस्यापि पुच्छं विधूय वृक्षोपरि आरोहति।)

(गजः तं वृक्षमेव स्वशुण्डेन आलोडयितुमिच्छति परं वानरस्तु कूर्दित्वा अन्यं वृक्षमारोहति। एवं गजं वृक्षात् वृक्षं प्रति धावन्तं दृष्ट्वा सिंहः अपि हसति वदति च।)

सिंहः – भोः गज! मामप्येवमेवातुदन् एते वानराः।

वानरः – एतस्मादेव तु कथयामि यदहमेव योग्यः वनराजपदाय येन विशालकायं पराक्रमिणं, भयंकरं चापि सिहं गजं वा पराजेतुं समर्था अस्माकं जातिः। अतः वन्यजन्तूनां रक्षायै वयमेव क्षमाः।

(एतत्सर्वं श्रुत्वा नदीमध्यस्थितः एकः बकः)

बकः – अरे! अरे! मां विहाय कथमन्यः कोऽपि राजा भवितुमर्हति। अहं तु शीतले जले बहुकालपर्यन्तम् अविचलः ध्यानमग्नः स्थितप्रज्ञ इव स्थित्वा सर्वेषां रक्षायाः उपायान् चिन्तयिष्यामि, योजनां निर्मीय च स्वसभायां विविधपदमलंकुर्वाणैः जन्तुभिश्च मिलित्वा रक्षोपायान् क्रियान्वितान् कारयिष्यामि, अतः अहमेव वनराजपदप्राप्तये योग्यः।

मयूरः – *(वृक्षोपरितः–साट्टहासपूर्वकम्)* विरम विरम आत्मश्लाघायाः किं न जानासि यत्–

यदि न स्यान्नरपतिः सम्यङ्नेता ततः प्रजा।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव।।

को न जानाति तव ध्यानावस्थाम्। 'स्थितप्रज्ञ' इति व्याजेन वराकान् मीनान् छलेन अधिगृह्य क्रूरतया भक्षयसि। धिक् त्वाम्। तव कारणात् तु सर्वं पक्षिकुलमेवावमानितं जातम्।

वानरः – *(सगर्वम्)* **अतएव कथयामि यत् अहमेव योग्यः वनराजपदाय। शीघ्रमेव मम राज्याभिषेकाय तत्पराः भवन्तु सर्वे वन्यजीवाः।**

मयूरः – **अरे वानर! तूष्णीं भव। कथं त्वं योग्यः वनराजपदाय? पश्यतु पश्यतु मम शिरसि राजमुकुटमिव शिखां स्थापयता विधात्रा एवाहं पक्षिराजः कृतः, अतः वने निवसन्तं मां वनराजरूपेणापि द्रष्टुं सज्जाः भवन्तु अधुना। यतः कथं कोऽप्यन्यः विधातुः निर्णयम् अन्यथाकर्तुं क्षमः।**

काकः – *(सव्यङ्ग्यम्)* **अरे अहिभुक्! नृत्यातिरिक्तं का तव विशेषता यत् त्वां वनराजपदाय योग्यं मन्यामहे वयम्।**

मयूरः – **यतः मम नृत्यं तु प्रकृतेः आराधना। पश्य! पश्य! मम पिच्छानामपूर्वं सौंदर्यम् (पिच्छानुद्घाट्य नृत्यमुद्रायां स्थितः सन्) न कोऽपि त्रैलोक्ये मत्सदृशः सुन्दरः। वन्यजन्तूनामुपरि आक्रमणं कर्तारं तु अहं स्वसौन्दर्येण नृत्येन च आकर्षितं कृत्वा वनात् बहिष्करिष्यामि। अतः अहमेव योग्यः वनराजपदाय।**

(एतस्मिन्नेव काले व्याघ्रचित्रकौ अपि नदीजलं पातुमागतौ एतं विवादं शृणुतः वदतः च)

व्याघ्रचित्रकौ – **अरे किं वनराजपदाय सुपात्रं चीयते?**

एतदर्थं तु आवामेव योग्यौ। यस्य कस्यापि चयनं कुर्वन्तु सर्वसम्मत्या।

सिंहः – **तूष्णीं भव भोः। युवामपि मत्सदृशौ भक्षकौ न तु रक्षकौ। एते वन्यजीवाः भक्षकं रक्षकपदयोग्यं न मन्यन्ते अतएव विचारविमर्शः प्रचलति।**

बकः – **सर्वथा सम्यगुक्तम् सिंहमहोदयेन। वस्तुतः एव सिंहेन बहुकालपर्यन्तं शासनं कृतम् परमधुना तु कोऽपि पक्षी एव राजेति निश्चेतव्यम् अत्र तु संशीतिलेशस्यापि अवकाशः एव नास्ति।**

सर्वे पक्षिणः – *(उच्चैः)*– **आम् आम्– कश्चित् खगः एव वनराजः भविष्यति इति।**

(परं कश्चिदपि खगः आत्मानं विना नान्यं कमपि अस्मै पदाय योग्यं चिन्तयन्ति तर्हि कथं निर्णयःभवेत् तदा तैः सर्वैः गहननिद्रायां निश्चिन्तं स्वपन्तम् उलूकं वीक्ष्य विचारितम् यदेषः

आत्मश्लाघाहीनः पदनिर्लिप्तः उलूको एवास्माकं राजा भविष्यति। परस्परमादिशन्ति च तदानीयन्तां नृपाभिषेकसम्बन्धिनः सम्भाराः इति।)

सर्वे पक्षिणः सज्जायै गन्तुमिच्छन्ति तर्हि अनायास एव–

काकः – *(अट्टहासपूर्णन-स्वेरण)*–**सर्वथा अयुक्तमेतत् यन्मयूर- हंस- कोकिल- चक्रवाक-शुक-सारसादिषु पक्षिप्रधानेषु विद्यमानेषु दिवान्धस्यास्य करालवक्त्रस्याभिषेकार्थं सर्वे सज्जाः। पूर्णं दिनं यावत् निद्रायमाणः एषः कथमस्मान् रक्षिष्यति। वस्तुतस्तु–**

स्वभावरौद्रमत्युग्रं क्रूरमप्रियवादिनम्।
उलूकं नृपतिं कृत्वा का नु सिद्धिर्भविष्यति॥

(ततः प्रविशति प्रकृतिमाता)

प्रकृतिमाता– *(सस्नेहम्)* भोः भोः प्राणिनः। यूयम् सर्वे एव मे सन्ततिः। कथं मिथः कलहं कुर्वन्ति। वस्तुतः सर्वे वन्यजीविनः अन्योन्याश्रिताः। सदैव स्मरत–

ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्-विधं प्रीतिलक्षणम्॥

(सर्वे प्राणिनः समवेतस्वरेण)

मातः! कथयति तु भवती सर्वथा सम्यक् परं वयं भवतीं न जानीमः। भवत्याः परिचयः कः?



प्रकृतिमाता – अहं प्रकृतिः युष्माकं सर्वेषां जननी? यूयं सर्वे एव मे प्रियाः। सर्वेषामेव मत्कृते महत्त्वं विद्यते यथासमयम् न तावत् कलहेन समयं वृथा यापयन्तु अपितु मिलित्वा एव मोदध्वं जीवनं च रसमयं कुरुध्वम्। तद्यथा कथितम्–

प्रजासुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं हितम्॥

अपि च–

अगाधजलसञ्चारी न गर्वं याति रोहितः।
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुर्फुरायते॥

अतः भवन्तः सर्वेऽपि शफरीवत् एकैकस्य गुणस्य चर्चां विहाय, मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय वनरक्षायै च प्रयतन्ताम्।

सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति मिलित्वा दृढसंकल्पपूर्वकं च गायन्ति–

प्राणिनां जायते हानिः परस्परविवादतः।
अन्योन्यसहयोगेन लाभस्तेषां प्रजायते॥

शब्दार्थाः

धुनाति/धूनोति	– गृहीत्वा आन्दोलयति	– पकड़कर घुमा देता है	– Twists
कर्णमाकृष्य	– श्रोत्रं कर्षयित्वा, कर्णम्+आकृष्य	– कान खींचकर	– Pulling ears
तुदन्ति	– अवसादयन्ति	– तंग करते हैं	– Teasing
कलरवम्	– पक्षिणां कूजनम्	– चहचहाहट को	– Birds' chirping
सन्नपि	– सन्+अपि	– होते हुए भी	– Even being so
वित्रस्तान्	– विशेषेण भीतान्	– विशेषरूप से डरे हुओं को	– Very scared
कृतान्तः-यमराजः–	मृत्यु का देवता–यमराज	– जीवन का अन्त करने वाले	– God of death
अनृतम्	– न ऋतम्, अलीकम्	– असत्य	– Lie
अतिविकत्थनम्	– आत्मश्लाघा	– डींगे मारना	– Brag about
शृण्वन्नेवाहम्	–शृण्वन्+एव+अहम्, आकर्णयन् एव अहम्	– सुनते हुए ही मैं	– Listeninig while
पोथयित्वा मारयिष्यामि	– पीडयित्वा हनिष्यामि	– क्लेश देकर मार डालूँगा	– Kill by torturing
विधूय	– आकर्ष्य	– खींचकर	– By dragging

साट्टहासपूर्वकम्	– अट्टहासेन सहितम्	– ठहाका मारते हुए	– With guffaw
विप्लवेतेह	– विप्लवेत+इह, अत्र निमज्जेत्, विशीर्येत	– डूब सकती है	– May sink
जलधौ	– सागरे	– समुद्र में	– In ocean
नौरिव	– नौः+इव, नौकायाः समानम्	– नौका के समान	– like a boat
शिरसि	– मस्तके	– सिर पर	– on the head
संशीतिलेशस्य	– सन्देहमात्रस्य	– ज़रा से भी सन्देह की	– Slight doubt
वीक्ष्य	– विलोक्य/दृष्ट्वा	– देखकर	– After seeing
सम्भाराः	– सामग्र्यः	– सामग्रियाँ	– Materials
करालवक्त्रस्य	– भयंकरमुखस्य	– भयंकर मुख वाले का	– Terrible faced
मिथः	– परस्परम्	– आपस में	– Among themselves
गुह्यमाख्याति	– रहस्यं वदति	– रहस्य कहता है	– Tells the secret
मोदध्वम्	– प्रसन्नाः भवत	– (तुम सब) प्रसन्न हो जाओ	– (You all) Be happy
अगाधजलसञ्चारी	– असीमितजलधारायां भ्रमन्	– अथाह जलधारा में संचरण करने वाला	– Who moves in deep water
रोहितः	– 'रोहित' नाम मत्स्यः	– रोहित (रोहू) नामक बड़ी मछली	– Rohu, a big fish
अंगुष्ठोदकमात्रेण	– अंगुष्ठमात्रजले	– अंगूठे के बराबर जल में अर्थात् थोड़े से जल में	– In thumb deep water
शफरी	– लघुमत्स्यः	– छोटी सी मछली	– small fish

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) वनराजः कैः दुरवस्थां प्राप्तः?
   (ख) कः वातावरणं कर्कशध्वनिना आकुलीकरोति?
   (ग) काकचेष्टः विद्यार्थी कीदृशः छात्रः मन्यते?
   (घ) कः आत्मानं बलशाली, विशालकायः, पराक्रमी च कथयति।
   (ङ) बकः कीदृशान् मीनान् क्रूरतया भक्षयति?
2. **अधोलिखितप्रश्नानामुत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत–**
   (क) निःसंशयं कः कृतान्तः मन्यते?
   (ख) बकः वन्यजन्तूनां रक्षोपायान् कथं चिन्तयितुं कथयति?
   (ग) अन्ते प्रकृतिमाता प्रविश्य सर्वप्रथमं किं वदति?
   (घ) यदि राजा सम्यक् न भवति तदा प्रजा कथं विप्लवेत्?
   (ङ) मयूरः कथं नृत्यमुद्रायां स्थितः भवति?
   (च) अन्ते सर्वे मिलित्वा कस्य राज्याभिषेकाय तत्पराः भवति?
   (छ) अस्मिन्नाटके कति पात्राणि सन्ति?
3. **रेखांकितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   (क) सिंहः वानराभ्यां स्वरक्षायाम् असमर्थः एवासीत्।
   (ख) गजः वन्यपशून् तुदन्तं शुण्डेन पोथयित्वा मारयति।
   (ग) वानरः आत्मानं वनराजपदाय योग्यः मन्यते।
   (घ) मयूरस्य नृत्यं प्रकृतेः आराधना।
   (ङ) सर्वे प्रकृतिमातरं प्रणमन्ति।
4. **शुद्धकथनानां समक्षम् आम् अशुद्धकथनानां च समक्षं न इति लिखत–**
   (क) सिंहः आत्मानं तुदन्तं वानरं मारयति।
   (ख) का-का इति बकस्य ध्वनिः भवति।
   (ग) काकपिकयोः वर्णः कृष्णः भवति।
   (घ) गजः लघुकायः, निर्बलः च भवति।
   (ङ) मयूरः बकस्य कारणात् पक्षिकुलम् अवमानितं मन्यते।
   (च) अन्योन्यसहयोगेन प्राणिनाम् लाभः जायते।

5. **मञ्जूषातः समुचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–**

स्थितप्रज्ञः, यथासमयम्, मेध्यामेध्यभक्षकः, अहिभुक्, आत्मश्लाघाहीनः, पिकः।

(क) काकः.....................भवति।

(ख) ....परभृत् अपि कथ्यते।

(ग) बकः अविचलः.....................इव तिष्ठति।

(घ) मयूरः.....................इति नाम्नाऽपि ज्ञायते।

(ङ) उलूकः.....................पदनिर्लिप्तः चासीत्।

(च) सर्वेषामेव महत्त्वं विद्यते.....................।

6. **वाच्यपरिवर्तनं कृत्वा लिखत–**

उदाहरणम्- क्रुद्धः सिंहः इतस्ततः धावति गर्जति च।

क्रुद्धेन सिंहेन इतस्ततः धाव्यते गर्ज्यते च।

(क) त्वया सत्यं कथितम्।

(ख) सिंहः सर्वजन्तून् पृच्छति।

(ग) काकः पिकस्य संततिं पालयति।

(घ) मयूरः विधात्रा एव पक्षिराजः वनराजः वा कृतः।

(ङ) सर्वैः खगैः कोऽपि खगः एव वनराजः कर्तुमिष्यते स्म।

(च) सर्वे मिलित्वा प्रकृतिसौन्दर्याय प्रयत्नं कुर्वन्तु।

7. **समासविग्रहं समस्तपदं वा लिखत–**

(क) तुच्छजीवैः ....।

(ख) वृक्षोपरि ....।

(ग) पक्षिणां सम्राट् ....।

(घ) स्थिता प्रज्ञा यस्य सः ....।

(ङ) अपूर्वम् ....।

(च) व्याघ्रचित्रका ....।

योग्यताविस्तारः

आजकल हम यत्र-तत्र सर्वत्र देखते हैं कि समाज में प्रायः सभी स्वयं को श्रेष्ठ समझते हुए परस्पर एक दूसरे का तिरस्कार कर रहे हैं और स्वार्थ साधन में लगे हुए हैं-

“नीचैरनीचैरतिनीचनीचैः सर्वैः उपायैः फलमेव साध्यम्”

अतः समाज में मेल जोल बढ़ाने की दृष्टि से इस पाठ में प्रकृति माता के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि सभी का यथासमय अपना-अपना महत्त्व है तथा सभी एक दूसरे पर आश्रित हैं अतः हमें परस्पर विवाद करते हुए नहीं अपितु मिल-जुलकर रहना चाहिए, तभी हमारा कल्याण संभव है।

विचित्रे खलु संसारे नास्ति किञ्चित् निरर्थकम्।
अश्वश्चेत् धावने वीरः, भारस्य वहने खरः॥
महान्तं प्राप्य सद्बुद्धे! संत्यजेन्न लघुं जनम्।
यत्रास्ति सूचिकाकार्यं कृपाणः किं करिष्यति॥

'शाण्डिल्यशतकम्' से उद्धृत ये दोनों श्लोक भी इसी बात की पुष्टि करते हैं कि संसार में कोई भी छोटा या बड़ा नहीं है, सभी का अपना-अपना महत्त्व है जैसे- घोड़ा यदि दौड़ने में निपुण है तो गधा भारवहन में, सुई जोड़ने का कार्य करती है तो कृपाण काटने का अतः संसार की क्रियाशीलता और गतिशीलता में सभी का अपना-अपना महत्त्व है। सभी के अपने-अपने कार्य हैं, अपना-अपना योगदान है, अतः हमें न तो किसी कार्य को छोटा या बड़ा, तुच्छ या महान् समझना चाहिए और न ही किसी प्राणी को। आपस में मिलजुल कर सौहार्द-पूर्ण तरीके से जीवन यापन करने में ही प्रकृति का सौन्दर्य है। विभिन्न प्राणियों से सम्बन्धित निम्नलिखित श्लोकों को भी पढ़िए और रसास्वादन कीजिए-

इन्द्रियाणि च संयम्य बकवत् पण्डितो नरः।
देशकालबलं ज्ञात्वा सर्वकार्याणि साधयेत्॥
काकचेष्टः बकध्यानी श्वाननिद्रः तथैव च।
अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणः॥
स्पृशन्नपि गजो हन्ति जिघ्रन्नपि भुजङ्गमः।
हसन्नपि नृपो हन्ति, मानयन्नपि दुर्जनः॥
प्राप्तव्यमर्थं लभते मनुष्यो, देवोऽपि तं लङ्घयितुं न शक्तः।
तस्मान्न शोचामि न विस्मयो मे यदस्मदीयं न हि तत्परेषाम्॥
अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

वस्तुतः तभी हमारी ये सभी कामनाएँ भी सार्थक हो सकती हैं-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥
तथा च **अधुना रमणीया हि सृष्टिरेषा जगत्पतेः।**
जीवाः सर्वेऽत्र मोदन्तां भावयन्तः परस्परम्॥

1061CH08

अष्टमः पाठः

विचित्रः साक्षी

अयं पाठः ओमप्रकाशठक्कुरविरचितकथायाः सम्पादितः अंशः अस्ति। इयं कथा बङ्गसाहित्यकार-बंकिमचन्द्रचटर्जीद्वारा न्यायाधीशरूपेण प्रदत्तनिर्णयोपरि आधारिता अस्ति। न्यायकर्तारः सत्यासत्यनिर्णयार्थं यदा-कदा तादृशीनां युक्तीनां प्रयोगं कुर्वन्ति याभिः प्रमाणं विनापि न्यायः स्यात्। अस्यां कथायामपि न्यायाधीशेन तथैव मार्गः आचरितः।

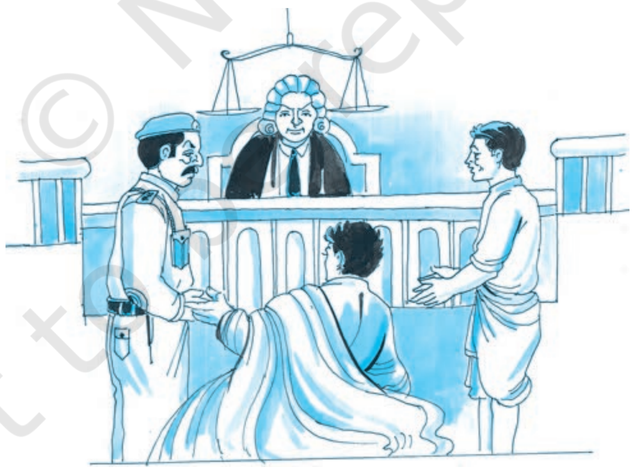
कश्चन निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। तेन वित्तेन स्वपुत्रम् एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दापयितुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा स पिता तनूजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

पदातिक्रमेण संचलन् सायं समयेऽप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आसीत्। 'निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा', एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्त्तुं कञ्चिद् गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिः चौरशङ्कया तमन्वधावत् अगृह्णाच्च, परं विचित्रमघटत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत ''चौरोऽयं चौरोऽयम्'' इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वाऽभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान्। न्यायाधीशो बंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक्-पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम्। किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत्। ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्। अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ। तदैव कश्चिद् तत्रत्यः कर्मचारी समागत्य न्यवेदयत् यत् इतः क्रोशद्वयान्तराले कश्चिज्जनः केनापि हतः। तस्य मृतशरीरं राजमार्गं निकषा वर्तते। आदिश्यतां किं करणीयमिति। न्यायाधीशः आरक्षिणम् अभियुक्तं च तं शवं न्यायालये आनेतुमादिष्टवान्।

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच-'रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वयाऽहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः। इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे'' इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।



न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनायाः विषये वक्तुमादिष्टौ। आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति आश्चर्यमघटत् स शवः प्रावारकमपसार्य न्यायाधीशमभिवाद्य निवेदितवान्- मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि 'त्वयाऽहं चोरितायाः मञ्जूषायाः

ग्रहणाद् वारितः, अतः निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति।

न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्।

अतएवोच्यते – दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः।
नीतिं युक्तिं समालम्ब्य लीलयैव प्रकुर्वते।।

शब्दार्थाः

भूरि	– पर्याप्तम्	– अत्यधिक	– Plenty
उपार्जितवान्	– अर्जितवान्	– कमाया	– Earned
निवसन्	– वासं कुर्वन्	– रहते हुए	– While residing
प्रसृते	– विस्तृते	– फैले हुए	– Spreaded
विजने प्रदेशे	– एकान्तप्रदेशे	– एकान्त प्रदेश में	– In a desolate place
शुभावहा	– कल्याणप्रदा	– कल्याणकारी	– Charitable
गृही	– गृहस्वामी	– गृहस्थ	– House holder
दैवगतिः	– भाग्यस्थितिः	– भाग्य की लीला	– Destiny
पलायितः	– वेगेन निर्गतः/पलायनमकरोत्	– भाग गया, चला गया	– Ran away
प्रबुद्धः	– जागृतः	– जागा हुआ	– Awakened
त्वरितम्	– शीघ्रम्	– शीघ्रगामी	– Swift
प्रस्थितः	– गतः	– चला गया	– Went
अर्थकार्श्येन	– धनस्य अभावेन	– धनाभाव के कारण	– Scarcity of money
पदातिरेव	– पादाभ्याम् एव	– पैदल ही	– On foot
पुंसः	– पुरुषस्य	– मनुष्य का	– Human's
निहिताम्	– स्थापिताम्	– रखी हुई	– Placed/kept
अन्वधावत्	– अन्वगच्छत्	– पीछे-पीछे गया	– He/she followed

क्रोशितुम्	– चीत्कर्तुम्	– ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने	– Shouting
तारस्वरेण	– उच्चस्वरेण	– ऊँची आवाज़ में	– Loudly
अभर्त्सयन्	– भर्त्सनाम् अकुर्वन्	– भला-बुरा कहा	– They criticized
प्रख्याप्य	– स्थाप्य	– स्थापित करके	– Establishing
चौर्याभियोगे	– चौरकर्मणि, चौर्यदोषारोपे	– चोरी के आरोप में	– On an allegation of stealing
नीतवान्	– अनयत्	– ले गया	– (He) took
अवगत्य	– ज्ञात्वा	– जानकर	– Knowing
दोषभाजनम्	– दोषपात्रम्	– दोषी	– Culprit
उपस्थातुम्	– उपस्थापयितुम्	– उपस्थित होने के लिए	– To be presented
आरक्षिणम्	– सैनिकम् (रक्षक पुरुष)	– सैनिक को	– To guard
आदिष्टवान्	– आज्ञां दत्तवान्	– आज्ञा दी	– (He) ordered
स्थापितवन्तौ	– स्थापनां कृतवन्तौ	– स्थापना करके	– Establishing
तत्रत्यः	– तत्र भवः	– वहाँ का	– Of that place
न्यवेदयत	– प्रार्थयत	– प्रार्थना की	– (He/she) requested
क्रोशद्वयान्तराले	– द्वयोः क्रोशयोः मध्ये	– दो कोस के मध्य	– At the distance of around two miles
आदिश्यताम्	– आदेशं दीयताम्	– आज्ञा दीजिए	– Order
उपेत्य	– समीपं गत्वा	– पास जाकर	– Going near
काष्ठपटले	– काष्ठस्य पटले	– लकड़ी के तख्ते पर	– On a wooden board

निहितम्	– स्थापितम्	– रखा गया	– Kept
पटाच्छादितम्	– वस्त्रेणावृतम्	– कपड़े से ढका हुआ	– Covered by cloth
वहन्तौ	– धारयन्तौ	– धारण करते हुए, वहन करते हुए	– Carrying
कृशकायः	– दुर्बलं शरीरम्	– कमज़ोर शरीरवाला	– Lean body
भारवतः	– भारवाहिनः	– भारवाही	– Of heavy built
भारवेदनया	– भारपीडया	– भार की पीड़ा से	– By the pain of the load
क्रन्दनम्	– रोदनम्	– रोने को	– Weeping
निशम्य	– श्रुत्वा, आकर्ण्य	– सुन करके	– Listening
मुदितः	– प्रसन्नः	– प्रसन्न	– Happy
भुङ्क्ष्व	– भोगं कुरु	– भोगो	– Meet the nemesis
चत्वरे	– शृङ्गाटके/चतुष्पथे	– चौराहे पर	– At square
लप्स्यसे	– प्राप्स्यसे	– प्राप्त करोगे	– You will get
प्रावारकम्	– आच्छादनवस्त्रम्	– ऊपर ओढ़ा हुआ वस्त्र	– Covering cloth
अपसार्य	– अपवार्य	– दूर करके	– Removing
अभिवाद्य	– अभिवादनं कृत्वा	– अभिवादन करके	– Saluting
अध्वनि	– मार्गे	– रास्ते में	– On the way
यदुक्तम्	– यत् कथितम्	– जो कहा गया	– Whatever was said
वारितः	– निवारितः	– रोका गया	– Stopped
मुक्तवान्	– अत्यजत्	– छोड़ दिया	– Released
समालम्ब्य	– आश्रयं गृहीत्वा	– सहारा लेकर	– Taking recourse

लीलयैव	- कौतुकेन (सुगमतया)	- खेल-खेल में	- In a flash
आदिश्य	- आदेशं दत्त्वा	- आदेश देकर	- Ordering

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) कीदृशे प्रदेशे पदयात्रा न सुखावहा?
   (ख) अतिथिः केन प्रबुद्धः?
   (ग) कृशकायः कः आसीत्?
   (घ) न्यायाधीशः कस्मै कारागारदण्डम् आदिष्टवान्?
   (ङ) कं निकषा मृतशरीरम् आसीत्?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   (क) निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपार्जितवान्?
   (ख) जनः किमर्थं पदातिः गच्छति?
   (ग) प्रसृते निशान्धकारे स किम् अचिन्तयत्?
   (घ) वस्तुतः चौरः कः आसीत्?
   (ङ) जनस्य क्रन्दनं निशम्य आरक्षी किमुक्तवान्?
   (च) मतिवैभवशालिनः दुष्कराणि कार्याणि कथं साधयन्ति?

3. **रेखाङ्कितपदमाधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   (क) पुत्रं द्रष्टुं सः प्रस्थितः।
   (ख) करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।
   (ग) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।
   (घ) न्यायाधीशः बंकिमचन्द्रः आसीत्।
   (ङ) स भारवेदनया क्रन्दति स्म।
   (च) उभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

4. **यथानिर्देशमुत्तरत–**

(क) 'आदेशं प्राप्य उभौ अचलताम्' अत्र किं कर्तृपदम्?

(ख) 'एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तत् वर्णयामि'–अत्र 'मार्गे' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?

(ग) 'करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्'– अत्र 'तस्मै' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) 'ततोऽसौ तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्' अस्मिन् वाक्ये किं क्रियापदम्?

(ङ) 'दुष्कराण्यपि कर्माणि मतिवैभवशालिनः'–अत्र विशेष्यपदं किम्?

5. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत–**

(क) पदातिरेव – .... + ...

(ख) निशान्धकारे – .... + ...

(ग) अभि + आगतम् – ....

(घ) भोजन + अन्ते – ....

(ङ) चौरोऽयम् – .... + ...

(च) गृह + अभ्यन्तरे – ....

(छ) लीलयैव – .... + ...

(ज) यदुक्तम् – .... + ...

(झ) प्रबुद्धः + अतिथिः – ....

6. **अधोलिखितानि पदानि भिन्न-भिन्नप्रत्ययान्तानि सन्ति। तानि पृथक् कृत्वा निर्दिष्टानां प्रत्ययानामधः लिखत–**

परिश्रम्य, उपार्जितवान्, दापयितुम्, प्रस्थितः, द्रष्टुम्, विहाय, पृष्टवान्, प्रविष्टः, आदाय, क्रोशितुम्, नियुक्तः, नीतवान्, निर्णेतुम्, आदिष्टवान्, समागत्य, मुदितः।

ल्यप्	क्त	क्तवतु	तुमुन्
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

7. (अ) **अधोलिखितानि वाक्यानि बहुवचने परिवर्तयत–**

(क) स बसयानं विहाय पदातिरेव गन्तुं निश्चयं कृतवान्।

(ख) चौरः ग्रामे नियुक्तः राजपुरुषः आसीत्।

(ग) कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः।

(घ) अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व-स्व-पक्षं स्थापितवन्तौ।

(आ) **कोष्ठकेषु दत्तेषु पदेषु यथानिर्दिष्टां विभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत–**

(क) सः .... निष्क्रम्य बहिरगच्छत्। (गृहशब्दे पंचमी)

(ख) गृहस्थः .... आश्रयं प्रायच्छत्। (अतिथिशब्दे चतुर्थी)

(ग) तौ .... प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधिकारिन् शब्दे द्वितीया)

(घ) .... चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे। (इदम् शब्दे सप्तमी)

(ङ) चौरस्य .... प्रबुद्धः अतिथिः। (पादध्वनिशब्दे तृतीया)

योग्यताविस्तारः

यह पाठ श्री ओमप्रकाश ठाकुर द्वारा रचित कथा का सम्पादित अंश है। यह कथा बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा न्यायाधीश-रूप में दिये गये फैसले पर आधारित है। सत्यासत्य के निर्णय हेतु न्यायाधीश कभी-कभी ऐसी युक्तियों का प्रयोग करते हैं जिससे साक्ष्य के अभाव में भी न्याय हो सके। इस कथा में भी विद्वान् न्यायाधीश ने ऐसी ही युक्ति का प्रयोग कर न्याय करने में सफलता पाई है।

(क) विचित्रः साक्षी

न्यायो भवति प्रमाणाधीनः। प्रमाणं विना न्यायं कर्तुं न कोऽपि क्षमः सर्वत्र। न्यायालयेऽपि न्यायाधीशाः यस्मिन् कस्मिन्नपि विषये प्रमाणाभावे न समर्थाः भवन्ति। अतएव, अस्मिन् पाठे चौर्याभियोगे न्यायाधीशः प्रथमतः साक्ष्यं (प्रमाणम्) विना निर्णेतुं नाशक्नोत्। अपरेद्युः यदा स शवः न्यायाधीशं सर्वं निवेदितवान् सप्रमाणं तदा सः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अस्य पाठस्य अयमेव सन्देशः।

(ख) मतिवैभवशालिनः

बुद्धिसम्पत्तिसम्पन्नाः। ये विद्वांसः बुद्धिस्वरूपविभवयुक्ताः ते मतिवैभवशालिनः भवन्ति। ते एव बुद्धिचातुर्यबलेन असम्भवकार्याणि अपि सरलतया कुर्वन्ति।

(ग) स शवः

न्यायाधीश बंकिमचन्द्रमहोदयैः अत्र प्रमाणस्य अभावे किमपि प्रच्छन्नः जनः साक्ष्यं प्राप्तुं नियुक्तः जातः। यद् घटितमासीत् सः सर्वं सत्यं ज्ञात्वा साक्ष्यं प्रस्तुतवान्। पाठेऽस्मिन् शवः एव 'विचित्रः साक्षी' स्यात्।

भाषिकविस्तारः

उपार्जितवान् – **उप + √ अर्ज् + तवतु**

दापयितुम् – **√दा + णिच् + तुमुन्**

अदस् (यह) पुँल्लिङ्ग सर्वनाम शब्द

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अध्वन् (मार्ग) नकारान्त पुँल्लिङ्ग

विभक्तिः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथमा	अध्वा	अध्वानौ	अध्वानः
द्वितीया	अध्वानम्	अध्वानौ	अध्वनः
तृतीया	अध्वना	अध्वभ्याम्	अध्वभिः
चतुर्थी	अध्वने	अध्वभ्याम्	अध्वभ्यः
पंचमी	अध्वनः	अध्वभ्याम्	अध्वभ्यः
षष्ठी	अध्वनः	अध्वनोः	अध्वनाम्
सप्तमी	अध्वनि	अध्वनोः	अध्वसु
सम्बोधन	हे अध्वन्!	हे अध्वानौ!	हे अध्वनः!

1061CH09

नवमः पाठः

सूक्तयः

अयं पाठः मूलतः तमिलभाषायाः "तिरुक्कुरल्" नामकग्रन्थात् गृहीतः अस्ति। अयं ग्रन्थः तमिलभाषायाः वेदः इति कथ्यते। अस्य प्रणेता तिरुवल्लुवरः वर्तते। प्रथमशताब्दी अस्य कालः स्वीकृतः अस्ति। धर्मार्थ-कामप्रतिपादकोऽयं ग्रन्थः? त्रिषु भागेषु विभक्तोऽस्ति। तिरुशब्दः श्रीवाचकः अस्ति, अतः तिरुक्कुरलशब्दस्य अभिप्रायो भवति – श्रिया युक्ता वाणी। अस्मिन् ग्रन्थे मानवानां कृते जीवनोपयोगि सत्यं सरसबोध गम्यपद्यैः प्रतिपादितम् अस्ति।



पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता॥1॥

अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
तदेवाहुः महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः॥2॥

त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।
परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधीः॥3॥

विद्वांस एव लोकेऽस्मिन् चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।
अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुर्नामनी मते॥4॥

यत् प्रोक्तं येन केनापि तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः।
कर्तुं शक्यो भवेद्येन स विवेक इतीरितः॥5॥

वाक्पटुधैर्यवान् मन्त्री सभायामप्यकातरः।
स केनापि प्रकारेण परैर्न परिभूयते॥6॥

य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च।
न कुर्यादहितं कर्म स परेभ्यः कदापि च॥7॥

आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् विदुषां वचः।
तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणेभ्योऽपि विशेषतः॥8॥

शब्दार्थाः

तेपे	–	तपस्याम् अकरोत	–	उसने तपस्या की	–	Performed penance
अवक्रता	–	न वक्रता/ऋजुता	–	सरलता	–	Simplicity
वाचि	–	वाण्याम्	–	वाणी में	–	In the speech
तथ्यतः	–	यथार्थरूपेण	–	वास्तव में	–	Actually
परुषाम्	–	कठोराम्	–	कठोर	–	Harsh
अभ्युदीरयेत्	–	वदेत्	–	बोलना चाहिए	–	He/she may say
विमूढधीः	–	मूर्खः/बुद्धिहीनः	–	अज्ञानी/नासमझ	–	A fool
वाक्पटुः	–	वाचि/सम्भाषणे पटुः	–	सम्भाषण/वार्तालाप में चतुर	–	Eloquent
चक्षुष्मन्तः	–	नेत्रवन्तः	–	नेत्रों से युक्त	–	Having eyes
वदने	–	आनने/मुखे	–	मुख पर	–	On the face
ईरितः	–	कथितः	–	कहा गया	–	Said
परिभूयते	–	तिरस्क्रियते/अवमान्यते	–	अपमानित किया जाता है	–	Gets insulted
अकातरः	–	वीरः/साहसी	–	निर्भीक	–	Fearless
श्रेयः	–	कल्याणम्	–	कल्याण	–	Wellness

प्रभृतानि	- अत्यधिकानि	- अत्यधिक	- Many
विदुषाम्	- विद्वद्जनानाम्	- विद्वानों का	- Of scholars

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) पिता पुत्राय बाल्ये किं यच्छति?
   (ख) विमूढधीः कीदृशीं वाचं परित्यजति?
   (ग) अस्मिन् लोके के एव चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः?
   (घ) प्राणेभ्योऽपि कः रक्षणीयः?
   (ङ) आत्मनः श्रेयः इच्छन् नरः कीदृशं कर्म न कुर्यात्?
   (च) वाचि किं भवेत्?

2. **स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   यथा- विमूढधीः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्क्ते।
   कः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्क्ते।
   (क) संसारे **विद्वांसः** ज्ञानचक्षुभिः नेत्रवन्तः कथ्यन्ते।
   (ख) जनकेन **सुताय** शैशवे विद्याधनं दीयते।
   (ग) **तत्त्वार्थस्य** निर्णयः विवेकेन कर्तुं शक्यः।
   (घ) धैर्यवान् **लोके** परिभवं न प्राप्नोति।
   (ङ) आत्मकल्याणम् इच्छन् नरः **परेषाम्** अनिष्टं न कुर्यात्।

3. **पाठात् चित्वा अधोलिखितानां श्लोकानाम् अन्वयम् उचितपदक्रमेण पूरयत–**
   (क) पिता ---------- बाल्ये महत् विद्याधनं यच्छति, अस्य पिता किं तपः तेपे इत्युक्तिः ----------।
   (ख) येन ---------- यत् प्रोक्तं तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः येन कर्तुं ---------- भवेत्, सः ---------- इति ----------।

(ग) य आत्मनः श्रेयः ---------- सुखानि च इच्छति, परेभ्यः अहितं ---------- कदापि च न ----------।

4. **अधोलिखितम् उदाहरणद्वयं पठित्वा अन्येषां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–**

प्रश्नाः	**उत्तराणि**
क. श्लोक संख्या – 3	
यथा– सत्या मधुरा च वाणी का?	धर्मप्रदा
(क) धर्मप्रदां वाचं कः त्यजति?	----------
(ख) मूढः पुरुषः कां वाणीं वदति?	----------
(ग) मन्दमतिः कीदृशं फलं खादति?	----------
ख. श्लोक संख्या – 7	
यथा– बुद्धिमान् नरः किम् इच्छति?	आत्मनः श्रेयः
(क) कियन्ति सुखानि इच्छति?	----------
(ख) सः कदापि किं न कुर्यात्?	----------
(ग) सः केभ्यः अहितं न कुर्यात्?	----------

5. **मञ्जूषायाः तद्भावात्मकसूक्तीः विचित्य अधोलिखितकथनानां समक्षं लिखत–**

(क) विद्याधनं महत्

(ख) आचारः प्रथमो धर्मः

(ग) चित्ते वाचि च अवक्रता एव समत्वम्

आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत्।

मनसि एकं वचसि एकं कर्मणि एकं महात्मनाम्।

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।

सं वो मनांसि जानताम्।

विद्याधनं श्रेष्ठं तन्मूलमितरद्धनम्।

आचारप्रभवो धर्मः सन्तश्चाचारलक्षणाः।

6. **(अ) अधोलिखितानां शब्दानां पुरतः उचितं विलोमशब्दं कोष्ठकात् चित्वा लिखत–**

	शब्दाः	**विलोमशब्दः**	
(क)	पक्वः	----------	(परिपक्वः, अपक्वः, क्वथितः)
(ख)	विमूढधीः	----------	(सुधीः, निधिः, मन्दधीः)
(ग)	कातरः	----------	(अकरुणः, अधीरः, अकातरः)
(घ)	कृतज्ञता	----------	(कृपणता, कृतघ्नता, कातरता)
(ङ)	आलस्यम्	----------	(उद्विग्नता, विलासिता, उद्योगः)
(च)	परुषा	----------	(पौरुषी, कोमला, कठोरा)

(आ) अधोलिखितानां शब्दानां त्रयः समानार्थकाः शब्दाः मञ्जूषायाः चित्वा लिख्यन्ताम्–

(क)	प्रभूतम्	------------	------------	------------
(ख)	श्रेयः	------------	------------	------------
(ग)	चित्तम्	------------	------------	------------
(घ)	सभा	------------	------------	------------
(ङ)	चक्षुष्	------------	------------	------------
(च)	मुखम्	------------	------------	------------

शब्द-मञ्जूषा

लोचनम्	नेत्रम्	भूरि
शुभम्	परिषद्	मानसम्
मनः	सभा	नयनम्
आननम्	चेतः	विपुलम्
संसद्	बहु	वक्त्रम्
वदनम्	शिवम्	कल्याणम्

7. अधस्ताद् समासविग्रहाः दीयन्ते तेषां समस्तपदानि पाठाधारेण दीयन्ताम् –

	विग्रहः	समस्तपदम्	समासनाम
(क)	तत्त्वार्थस्य निर्णयः	------------	षष्ठी तत्पुरुषः
(ख)	वाचि पटुः	------------	सप्तमी तत्पुरुषः
(ग)	धर्मं प्रददाति इति (ताम्)	------------	उपपदतत्पुरुषः
(घ)	न कातरः	------------	नञ् तत्पुरुषः
(ङ)	न हितम्	------------	नञ् तत्पुरुषः
(च)	महान् आत्मा येषाम्	------------	बहुब्रीहिः
(छ)	विमूढा धीः यस्य सः	------------	बहुब्रीहिः

योग्यताविस्तारः

यहाँ संग्रहीत श्लोक मूलरूप से तमिल भाषा में रचित 'तिरुक्कुरल' नामक ग्रन्थ से लिए गए हैं। तिरुक्कुरल साहित्य की उत्कृष्ट रचना है। इसे तमिल भाषा का 'वेद' माना जाता है। इसके प्रणेता तिरुवल्लुवर है। इनका काल प्रथम शताब्दी माना गया है। इसमें मानवजाति के लिए जीवनोपयोगी सत्य प्रतिपादित है। 'तिरु' शब्द 'श्रीवाचक' है। तिरुक्कुरल शब्द का अभिप्राय है-श्रिया युक्त वाणी। इसे धर्म, अर्थ, काम तीन भागों में बाँटा गया है। प्रस्तुत श्लोक सरस, सरल भाषायुक्त तथा प्रेरणाप्रद हैं।

क. 'तिरुक्कुरल्-सूक्तिसौरभम्' इति पाठस्य तमिल मूलपाठः (देवनागरी-लिपौ)

सोर्कोट्टम् इल्लदु सेप्पुम् ओरू तलैया उळ्कोट्टम इन्मै पेरिन्।
मगन् तन्दैवक्काटुम उद्रवि इवन् तन्दै एन्नोटान् कौमू एननुम सोक्त।
इनिय उळवाग इन्नाद कूरल् कनि इरूप्पक् काय् कवरंदट्र।
कण्णुडैयर् एन्पवर् कट्रोर मुहत्तिरण्डु पुण्णुडैयर कल्लादवर्।
एप्पोरूल यार यार वाय् केट्रपिनुम् अप्पोरूल मेय् पोरूल काण्पदरिवु।
सोललवल्लन् सोरविलन् अन्जान् अवनै इहलवेल्लल् यारुक्कुम् अरितु।
नोय एल्लाम् नोय् सेयदार मेलवान् नोय् सेययार नोय् इन्मै वेण्डुभवर्।
ओषुक्कम् विषुप्पम् तरलान् ओषुक्कम् उयिरिनुम् ओभ्भप्पडुम्।

ख. ग्रन्थपरिचयः

तिरुक्कुरल् तमिलभाषायां रचिता तमिलसाहित्यस्य उत्कृष्टा कृतिः अस्ति। अस्य प्रणेता तिरुवल्लुवरः अस्ति। ग्रन्थस्य रचनाकालः अस्ति-ईस्वीयाब्दस्य प्रथमशताब्दी।

अस्मिन् ग्रन्थे सकलमानवजातेः कृते जीवनोपयोगिसत्यम् प्रतिपादितम्।

तिरु शब्दः 'श्री' वाचकः। 'तिरुक्कुरल्' पदस्य अभिप्रायः अस्ति श्रिया युक्तं कुरल् छन्दः अथवा श्रिया युक्ता वाणी। अस्मिन् ग्रन्थे धर्म-अर्थ-काम-संज्ञकाः त्रयः भागाः सन्ति। त्रयाणां भागानां पद्यसंख्या 1330 अस्ति।

ग. भाव-विस्तारः

सदाचारः

किं कुलेन विशालेन शीलमेवात्र कारणम्।
कृमयः किं न जायन्ते कुसुमेषु सुगन्धिषु।।
आगमानां हि सर्वेषामाचारः श्रेष्ठ उच्यते।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मादायुर्विवर्धते।।

मधुरा वाक्

प्रियवाक्यप्रदानेन तुष्यन्ति सर्व जन्तवः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता।।
वाणी रसवती यस्य यस्य श्रमवती क्रिया।
लक्ष्मीः दानवती यस्य सफलं तस्य जीवितम्।।

विद्याधनम्

विद्याधनम् धनं श्रेष्ठं तन्मूलमितरद्धनम्।
दानेन वर्धते नित्यं न भाराय न नीयते।
माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

विद्वांसः

नास्ति यस्य स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति।
विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

1061CH10

दशमः पाठः

भूकम्पविभीषिका

प्रस्तुतोऽयं पाठः अस्माकं वातावरणे सम्भाव्यमानप्रकोपेषु अन्यतमां भूकम्पस्य विभीषिकां द्योतयति। प्रकृतौ जायमानाः आपदः भयावहप्रलयं समुत्पाद्य मानवजीवनं संत्रासयन्ति, ताभिः प्राणिनां सुखमयं जीवनं दुःखमयं सञ्जायते। एतासु प्रमुखाः सन्ति – झञ्झावातः, भूकम्पनम्, जलोपप्लवः, अतिवृष्टिः, अनावृष्टिः, शिलास्खलनम्, भूविदारणम्, ज्वालामुखस्फोटादयः। अत्र पाठे भूकम्पविषये चिन्तनं विहितं यत् आपत्काले विपन्नतां त्यक्त्वा साहसेन यत्नं कुर्मः चेत् दारुणविभीषिकया संरक्षिता भवामः।



एकोत्तरद्विसहस्रख्रीष्टाब्दे (2001 ईस्वीये वर्षे) गणतन्त्र-दिवस-पर्वणि यदा समग्रमपि भारतराष्ट्रं नृत्य-गीतवादित्राणाम् उल्लासे मग्नमासीत् तदाकस्मादेव गुर्जर-राज्यं पर्याकुलं, विपर्यस्तम्, क्रन्दनविकलं विपन्नञ्च जातम्। भूकम्पस्य दारुणविभीषिका समस्तमपि गुर्जरक्षेत्रं विशेषेण च कच्छजनपदं ध्वंसावशेषेषु परिवर्तितवती। भूकम्पस्य केन्द्रभूतं भुजनगरं तु मृत्तिकाक्रीडनकमिव खण्डखण्डम् जातम्। बहुभूमिकानि भवनानि क्षणेनैव धराशायीनि जातानि। उत्खाता विद्युद्दीपस्तम्भाः। विशीर्णाः गृहसोपानमार्गाः। फालद्वये

विभक्ता भूमिः। भूमिगर्भादुपरि निस्सरन्तीभिः दुर्वार-जलधाराभिः महाप्लावनदृश्यम् उपस्थितम्। सहस्रमिताः प्राणिनस्तु क्षणेनैव मृताः। ध्वस्तभवनेषु सम्पीडिता सहस्रशोऽन्ये सहायतार्थं करुणकरुणं क्रन्दन्ति स्म। हा दैव! क्षुत्क्षामकण्ठाः मृतप्रायाः केचन शिशवस्तु ईश्वरकृपया एव द्वित्राणि दिनानि जीवनं धारितवन्तः।

इयमासीत् भैरवविभीषिका कच्छ-भूकम्पस्य। पञ्चोत्तर-द्विसहस्रख्रीष्टाब्दे (2005 ईस्वीये वर्षे) अपि कश्मीर-प्रान्ते पाकिस्तान-देशे च धरायाः महत्कम्पनं जातम्। यस्मात्कारणात् लक्षपरिमिताः जनाः अकालकालकवलिताः। पृथ्वी कस्मात्प्रकम्पते वैज्ञानिकाः इति विषये कथयन्ति यत् पृथिव्या अन्तर्गर्भे विद्यमानाः बृहत्यः पाषाण-शिलाः यदा संघर्षणवशात् त्रुट्यन्ति तदा जायते भीषणं संस्खलनम्, संस्खलनजन्यं कम्पनञ्च। तदैव भयावहकम्पनं धरायाः उपरितलमप्यागत्य महाकम्पनं जनयति येन महाविनाशदृश्यं समुत्पद्यते।

ज्वालामुखपर्वतानां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायत इति कथयन्ति भूकम्पविशेषज्ञाः। पृथिव्याः गर्भे विद्यमानोऽग्निर्यदा खनिजमृत्तिकाशिलादिसञ्चयं क्वथयति तदा तत्सर्वमेव लावारसताम् उपेत्य दुर्वारगत्या धरां पर्वतं वा विदार्य बहिर्निष्क्रामति। धूमभस्मावृतं जायते तदा गगनम्। सेल्सियश-ताप-मात्राया अष्टशताङ्कतामुपगतोऽयं लावारसो यदा नदीवेगेन प्रवहति तदा पार्श्वस्थग्रामा नगराणि वा तदुदरे क्षणेनैव समाविशन्ति। निहन्यन्ते च विवशाः प्राणिनः। ज्वालामुद्गिरन्त एते पर्वता अपि भीषणं भूकम्पं जनयन्ति।

यद्यपि दैवः प्रकोपो भूकम्पो नाम, तस्योपशमनस्य न कोऽपि स्थिरोपायो दृश्यते। प्रकृतिसमक्षमद्यापि विज्ञानगर्वितो मानवः वामनकल्प एव तथापि भूकम्परहस्यज्ञाः कथयन्ति यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं न करणीयम्। तटबन्धं निर्माय बृहन्मात्रं नदीजलमपि नैकस्मिन् स्थले पुञ्जीकरणीयम् अन्यथा असन्तुलनवशाद् भूकम्पस्सम्भवति। वस्तुतः शान्तानि एव पञ्चतत्त्वानि क्षितिजलपावकसमीरगगनानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां कल्पन्ते। अशान्तानि खलु तान्येव महाविनाशम् उपस्थापयन्ति।

शब्दार्थाः

पर्याकुलम्	– परितः व्याकुलम	– चारों ओर से बेचैन	– Restless all over
विपर्यस्तम्	– अस्तव्यस्तम्	– अस्तव्यस्त	– Disturbed
विपन्नम्	– विपत्तियुक्तम्	– (विपत्तिग्रस्त) मुसीबत में	– Troubled
दारुणविभीषिका	– भयङ्करत्रासः	– अत्यधिक भय	– Horrendous
ध्वंसावशेषु	– नाशोपरान्तम् अवशिष्टेषु	– विनाश के बाद बची हुई वस्तु	– Debris after the destruction
मृत्तिकाक्रीडनकमिव	– मृत्तिकायाः क्रीडनकम् इव	– मिट्टी के खिलौने के समान	– Like a toy made of mud
बहुभूमिकानि भवनानि	– बहवः भूमिकाः येषु	– बहुमंजिले मकान	– Multi storey buildings
उत्खाताः	– उत्पाटिताः	– उखाड़े गये	– Demolished
विशीर्णाः	– विकीर्णाः	– बिखर गये	– Scattered
फालद्वये	– खण्डद्वये	– दो खण्डों में	– In two segments
निस्सरन्तीभिः	– निर्गच्छन्तीभिः	– निकलती हुई	– Outcoming
दुर्वारः	– दुःखेन निवारयितुं योग्यः	– जिनको हटाना कठिन है	– Difficult to get rid of
महाप्लावनम्	– महत् प्लावनम्	– विशाल बाढ़	– Heavy flood
क्षुत्क्षामकण्ठः	– क्षुधा क्षामः कण्ठाः येषाम् ते	– भूख से दुर्बल कण्ठ वाले	– Having dry throats due to hunger

कालकवलिताः	– दिवङ्गताः	– मृत्यु को प्राप्त हुए	– Dead
संस्खलनम्	– विचलनम्	– स्थान से हटना	– Distract
जनयति	– उत्पन्नं करोति	– उत्पन्न करती है	– Creates
भूकम्पविशेषज्ञाः	– भुवः कम्पनरहस्यस्य ज्ञातारः	– भूमि कम्पन के रहस्य विशेषज्ञ	– Experts in science of earthquake
खनिजम्	– उत्खननात् प्राप्तं द्रव्यम्	– भूमि को खोदने से प्राप्त वस्तु	– Mineral
क्वथयति	– उत्तप्तं करोति	– उबालती है, तपाती है	– Decocts
विदार्य	– विदीर्णं कृत्वा, भित्वा	– फाड़कर	– Tearing
पार्श्वस्थ-ग्रामाः	– निकटस्थाः ग्रामाः	– समीप के गाँव	– Nearby villages
उदरे	– कुक्षौ	– पेट में	– In the stomach
समाविशन्ति	– अन्तः गच्छन्ति	– समा जाती हैं	– Merge
उद्गिरन्तः	– प्रकटयन्तः	– प्रकट करते हुए	– Emerging
उपशमनस्य	– शान्तेः	– शान्त करने का	– Of pacifying
वामनकल्पः	– वामनसदृशः	– बौना	– Dwarf
निर्माय	– निर्माणं कृत्वा	– बनाकर	– Constructing
पुञ्जीकरणीयम्	– संग्रहणीयम्	– इकट्ठा करना चाहिए	– Should be collected
योगक्षेमाभ्याम्	– अप्राप्तस्य प्राप्तिः योगः, प्राप्तस्य रक्षणं क्षेमः ताभ्याम्	– अप्राप्त की प्राप्ति योग है, प्राप्त की रक्षा क्षेम है- उन दोनों के लिए	– Procurement and welfare

अभ्यासः

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   (क) कस्य दारुण-विभीषिका गुर्जरक्षेत्रं ध्वंसावशेषेषु परिवर्तितवती?
   (ख) कीदृशानि भवनानि धाराशायीनि जातानि?
   (ग) दुर्वार-जलधाराभिः किम् उपस्थितम्?
   (घ) कस्य उपशमनस्य स्थिरोपायः नास्ति?
   (ङ) कीदृशाः प्राणिनः भूकम्पेन निहन्यन्ते?

2. **अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**
   (क) समस्तराष्ट्रं कीदृशे उल्लासे मग्नम् आसीत्?
   (ख) भूकम्पस्य केन्द्रबिन्दुः कः जनपदः आसीत्?
   (ग) पृथिव्याः स्खलनात् किं जायते?
   (घ) समग्रं विश्वं कैः आतङ्कितः दृश्यते?
   (ङ) केषां विस्फोटैरपि भूकम्पो जायते?

3. **स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**
   (क) भूकम्पविभीषिका विशेषेण कच्छजनपदं **ध्वंसावशेषेषु** परिवर्तितवती।
   (ख) **वैज्ञानिकाः** कथयन्ति यत् पृथिव्याः अन्तर्गर्भे, पाषाणशिलानां संघर्षणेन कम्पनं जायते।
   (ग) विवशाः प्राणिनः **आकाशे** पिपीलिकाः इव निहन्यन्ते।
   (घ) **एतादृशी** भयावहघटना गढवालक्षेत्रे घटिता।
   (ङ) तदिदानीम् **भूकम्पकारणं** विचारणीयं तिष्ठति।

4. **'भूकम्पविषये' पञ्चवाक्यमितम् अनुच्छेदं लिखत।**

5. **कोष्ठकेषु दत्तेषु धातुषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं विधाय रिक्तस्थानानि पूरयत–**
   (क) समग्रं भारतम् उल्लासे मग्नः ....। (अस् + लट् लकारे)
   (ख) भूकम्पविभीषिका कच्छजनपदं विनष्टं ....। (कृ + क्तवतु + ङीप्)
   (ग) क्षणेनैव प्राणिनः गृहविहीनाः ....। (भू + लङ्, प्रथम-पुरुषः बहुवचनम्)
   (घ) शान्तानि पञ्चतत्त्वानि भूतलस्य योगक्षेमाभ्यां ....। (भू + लट्, प्रथम-पुरुषः बहुवचनम्)

(ङ) मानवाः .... यत् बहुभूमिकभवननिर्माणं करणीयम् न वा? (प्रच्छ् + लट्, प्रथम-पुरुषः बहुवचनम्)

(च) नदीवेगेन ग्रामाः तदुदरे ....। (सम् + आ + विश् + विधिलिङ्, प्रथम पुरुषः बहुवचनम्)

6. **सन्धिं/सन्धिविच्छेदं च कुरुत–**

(अ) परसवर्णसन्धिनियमानुसारम्–

(क)	किञ्च	=	....	+	च
(ख)	....	=	नगरम्	+	तु
(ग)	विपन्नञ्च	=	....	+	....
(घ)	....	=	किम्+		नु
(ङ)	भुजनगरन्तु	=	....	+	....
(च)	....	=	सम्+		चयः

(आ) विसर्गसन्धिनियमानुसारम्–

(क)	शिशवस्तु	=	....	+	....
(ख)	....	=	विस्फोटैः	+	अपि
(ग)	सहस्रशोऽन्ये	=	....	+	अन्ये
(घ)	विचित्रोऽयम्	=	विचित्रः	+	....
(ङ)	....	=	भूकम्पः	+	जायते
(च)	वामनकल्प एव	=	....	+	....

7. **(अ) 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे विलोमपदानि, तयोः संयोगं कुरुत–**

क	**ख**
सम्पन्नम्	प्रविशन्तीभिः
ध्वस्तभवनेषु	सुचिरेणैव
निस्सरन्तीभिः	विपन्नम्
निर्माय	नवनिर्मितभवनेषु
क्षणेनैव	विनाश्य

(आ) 'क' स्तम्भे पदानि दत्तानि 'ख' स्तम्भे समानार्थकपदानि तयोः संयोगं कुरुत –

क	ख
पर्याकुलम्	नष्टाः
विशीर्णाः	क्रोधयुक्ताम्
उद्गिरन्तः	संत्रोट्य
विदार्य	व्याकुलम्
प्रकुपिताम्	प्रकटयन्तः

8. (अ) उदाहरणमनुसृत्य प्रकृति-प्रत्यययोः विभागं कुरुत–

यथा– परिवर्तितवती	–	परि	+	वृत्	+	क्तवतु	+	ङीप् (स्त्री)
धृतवान्	–	....	+	....				
हसन्	–	....	+	....				
विशीर्णा	–	वि	+	शॄ	+	क्त	+	....
प्रचलन्ती	–	....	+	....	+	शतृ	+	ङीप् (स्त्री)
हतः	–	....	+	....				

(आ) पाठात् विचित्य समस्तपदानि लिखत–

महत् च तत् कम्पनम् = ...

दारुणा च सा विभीषिका = ...

ध्वस्तेषु च तेषु भवनेषु = ...

प्राक्तने च तस्मिन् युगे = ...

महत् च तत् राष्ट्रं तस्मिन् = ...

योग्यताविस्तारः

हमारे वातावरण में भौतिक सुख-साधनों के साथ-साथ अनेक आपदाएँ भी लगी रहती हैं। प्राकृतिक आपदाएँ जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती हैं। कभी किसी महामारी की आपदा, बाढ़ तथा सूखे की आपदा या तूफान के रूप में भयङ्कर प्रलय– ये सब हम अपने जीवन में देखते तथा सुनते रहते हैं। भूकम्प भी ऐसी ही आपदा है, जिस पर यहाँ दृष्टिपात किया गया है। इस पाठ के माध्यम से यह बताया गया है कि किसी भी आपदा में बिना किसी घबराहट के, हिम्मत के साथ किस प्रकार हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते हैं।

भूकम्प परिचय – भूमि का कम्पन भूकम्प कहलाता है। वह बिन्दु भूकम्प का उद्‌गम केन्द्र कहा जाता है, जिस बिन्दु पर कम्पन की उत्पत्ति होती है। कम्पन तरंग के रूप में विविध दिशाओं में आगे चलता है। ये तरंगें सभी दिशाओं में उसी प्रकार फैलती हैं जैसे किसी शान्त तालाब में पत्थर के टुकड़ों को फेंकने से तरंगें उत्पन्न होती हैं।

धरातल पर कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ भूकम्प प्रायः आते ही रहते हैं। उदाहरण के अनुसार– प्रशान्त महासागर के चारों ओर के प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, गङ्गा एवं ब्रह्मपुत्र का तटीय भाग, इन क्षेत्रों में अनेक भूकम्प आए जिनमें से कुछ तो अत्यधिक भयावह और विनाशकारी थे। सुनामी भी एक प्रकार का भूकम्पन ही है जिसमें भूमि के भीतर अत्यन्त गहराई से तीव्र कम्पन उत्पन्न होता है। यही कम्पन समुद्र के जल को काफी ऊँचाई तक तीव्रता प्रदान करता है। फलस्वरूप तटीय क्षेत्र सर्वाधिक प्रभावित होते हैं। सुनामी का भीषण प्रकोप 20 सितम्बर 2004 को हुआ। जिसकी चपेट में भारतीय प्रायद्वीप सहित अनेक देश आ गये। क्षिति, जल, पावक, गगन और समीर इन पञ्चतत्वों में सन्तुलन बनाए रखकर प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सकता है। इसके विपरीत असन्तुलित पञ्चतत्वों से सृष्टि विनष्ट हो सकती है?

भूकम्पविषये प्राचीनमतम्

प्राचीनैः ऋषिभिः अपि स्वस्वग्रन्थेषु भूकम्पोल्लेखः कृतः येन स्पष्टं भवति यत् भूकम्पाः प्राचीनकालेऽपि आयान्ति स्म।

यथा वराहसंहितायाम्–

क्षितिकम्पमाहुरेके महान्तर्जलनिवासिसत्त्वकृतम्
भूभारखिन्नदिग्गजनिःश्वाससमुद्भवं चान्ये।
अनिलोऽनिलेन निहितः क्षितौ पतन् सस्वनं करोत्यन्ये
केचित् त्वदृष्टकारितमिदमन्ये प्राहुराचार्याः॥

मयूरचित्रे

कदाचित् भूकम्पः श्रेयसेऽपि कल्पते। एतादृशाः अपि उल्लेखाः अस्माकं साहित्ये समुपलभ्यन्ते यथा वारुणमण्डलमौशनसे –

प्रतीच्यां यदि कम्पेत वारुणे सप्तके गणे,
द्वितीययामे रात्रौ तु तृतीये वारुणं स्मृतम् ।
अत्र वृष्टिश्च महती शस्यवृद्धिस्तथैव च,
प्रज्ञा धर्मरताश्चैव भयरोगविवर्जिताः ॥

उल्काभूकम्पदिग्दाहसम्भवः शस्यवृद्धये ।
क्षेमारोग्यसुभिक्षार्थं वृष्टये च सुखाय च ॥

भूकम्पसमा एव अग्निकम्पः, वायुकम्पः, अम्बुकम्पः इत्येवमन्येऽपि भवन्ति।

1061CH11

एकादशः पाठः

प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्

प्रस्तुतोऽयं नाट्यांशः महाकविविशाखदत्तस्य कृतिः "मुद्राराक्षसम्" इति नाटकस्य प्रथमाङ्काद् उद्धृतोऽस्ति। नाटकस्य अस्मिन् भागे चन्दनदासः स्वसुहृदर्थं प्राणोत्सर्गं कर्तुमपि प्रयतते। अत्र कथानके नन्दवंशस्य विनाशानन्तरं तस्य हितैषिणां बन्धनक्रमे चाणक्येन चन्दनदासः सम्प्राप्तः। बद्धोऽपि चन्दनदासः अमात्यादीनां विषये न किमपि रहस्यं प्रोक्तवान्। वार्तालापप्रसङ्गे राजदण्डभीतिः समुत्पादनेऽपि सः गोप्यरहस्यम् अनुद्घाट्य राजदण्डं स्वीकृत्य सुहृदि निष्ठां प्रबोधयति।

चाणक्यः – **वत्स! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।**

शिष्यः – **तथेति** (*निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य*) **इतः इतः श्रेष्ठिन्!** (*उभौ परिक्रामतः*)

शिष्यः – (*उपसृत्य*) **उपाध्याय! अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।**

चन्दनदासः – **जयत्वार्यः**

चाणक्यः – **श्रेष्ठिन्! स्वागतं ते। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः?**

चन्दनदासः – (*आत्मगतम्*) **अत्यादरः शङ्कनीयः।** (*प्रकाशम्*) **अथ किम्। आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।**

चाणक्यः – **भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।**

चन्दनदासः – **आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिष्यते इति।**

चाणक्यः – **भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।**

चन्दनदासः – (*सहर्षम्*) **आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।**

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता प्रष्टव्याः स्मः।

चन्दनदासः – आज्ञापयतु आर्यः।

चाणक्यः – राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव।

चन्दनदासः – आर्य! कः पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते?

चाणक्यः – भवानेव तावत् प्रथमम्।

चन्दनदासः – (*कर्णौ पिधाय*) शान्तं पापम्, शान्तं पापम्। कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः?

चाणक्यः – अयमीदृशो विरोधः यत् त्वमद्यापि राजापथ्यकारिणोऽमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि।

चन्दनदासः – आर्य! अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आर्याय निवेदितम्।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन्! अलमाशङ्कया। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणामिच्छतामपि गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं दोषमुत्पादयति।

चन्दनदासः – एवं नु इदम्। तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः – पूर्वम् 'अनृतम्', इदानीम् "आसीत्" इति परस्परविरुद्धे वचने।

चन्दनदासः – आर्य! तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः – अथेदानीं क्व गतः?

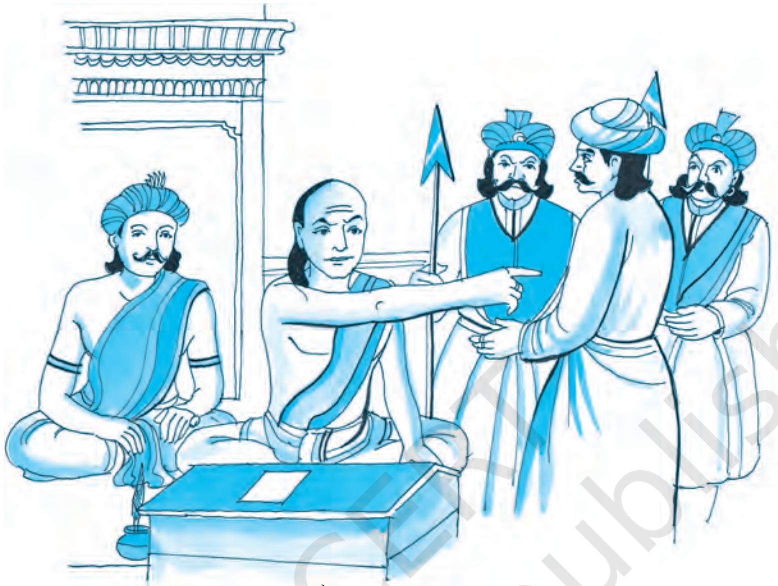
चन्दनदासः – न जानामि।

चाणक्यः – कथं न ज्ञायते नाम? भो श्रेष्ठिन्! शिरसि भयम्, अतिदूरं तत्प्रतिकारः।

चन्दनदासः – आर्य! किं मे भयं दर्शयसि? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम्?

चाणक्यः – **चन्दनदास! एष एव ते निश्चयः?**

चन्दनदासः – **बाढम्, एष एव मे निश्चयः।**



चाणक्यः – (*स्वगतम्*) **साधु! चन्दनदास साधु।**

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने।
क इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना॥

शब्दार्थाः

मणिकारश्रेष्ठिनम्	– रत्नकारं वणिजं	– मणियों का व्यापारी	– Jeweller
निष्क्रम्य	– बहिर्गत्वा	– निकलकर	– Exiling
उपसृत्य	– समीपं गत्वा	– पास जाकर	– Going near
परिक्रामतः	– परिभ्रमणं कुरुतः	– (दोनों) परिभ्रमण करते हैं	– Both move in circle
प्रचीयन्ते	– वृद्धिं प्राप्नुवन्ति	– बढ़ते हैं	– Increase
संव्यवहाराणाम्	– व्यापाराणाम्	– व्यापारों का	– Of trades
आत्मगतम्	– स्वगतम्	– मन ही मन	– To oneself

शङ्कनीयः	– सन्देहास्पदम्	– शंका करने योग्य	– Doubtful
अखण्डिता	– निर्बाधा	– बाधारहित	– Intact
वणिज्या	– वाणिज्यम्	– व्यापार	– Trade
प्रीताभ्यः	– प्रसन्नाभ्यः	– प्रसन्न जनों के प्रति	– To pleasing persons
प्रतिप्रियम्	– प्रत्युपकारम्	– उपकार के बदले किया गया उपकार	– Requital
अपरिक्लेशः	– दुःखाभावः	– दुःख का अभाव	– Absence of pain
आज्ञापयतु	– आदिशतु	– आदेश दें	– Should order
अर्थसम्बन्धः	– धनस्य सम्बन्धः	– धन का सम्बन्ध	– Monetary
परिक्लेशः	– दुःखम्	– दुःख	– Sad
प्रष्टव्याः	– प्रष्टुं योग्याः	– पूछने योग्य	– Worth asking
अवगम्यते	– ज्ञायते	– जाना जाता है	– Is known
अविरुद्धवृत्तिः	– अविरुद्धस्वभावः	– विरोधरहित स्वभाव वाला	– Unopposing behaviour
पिधाय	– आच्छाद्य	– बन्द करके	– Closing
राजापथ्यकारिणः	– नृपापकारकारिणः	– राजाओं का अहित करने वाले	– Harmful for kings
अलीकम्	– असत्यम्	– झूठ	– False
अनार्येण	– दुष्टेन	– दुष्ट के द्वारा	– By an uncivilized person
पौराणाम्	– नगरवासिनाम्	– नगर के लोगों के	– Of city dwellers
निक्षिप्य	– स्थापयित्वा	– रखकर	– Keeping
व्रजन्ति	– गच्छन्ति	– जाते हैं	– Go
प्रच्छादनम्	– आच्छादनम्	– छिपाना	– Hiding
अमात्यः	– मन्त्री	– मन्त्री	– Minister
असन्तम्	– न निवसन्तम्	– न रहने वाले	– Of absent
बाढम्	– आम्	– हाँ	– Yes
संवेदने	– समर्पणे कृते सति	– समर्पण पर	– On surrendering
जने	– जनस्य विषये	– व्यक्ति को लेकर	– Regarding a person

अंतिम श्लोक का अन्वय तथा भावादि

अन्वय: परस्य संवेदने अर्थलाभेषु सुलभेषु इदं दुष्करं कर्म जने (लोके) शिविना विना क: कुर्यात्।

भाव: परस्य परकीयस्य अर्थस्य संवेदने समर्पणे कृते सति अर्थलाभेषु सुलभेषु सत्सु स्वार्थं तृणीकृत्य परसंरक्षणरूपमेवं दुष्करं कर्म जने (लोके) एकेन शिविना विना त्वदन्य: क: कुर्यात्। शिविरपि कृते युगे कृतवान् त्वं तु इदानीं कलौ युगे करोषि इति ततोऽप्यतिशयित-सुचरितत्वमिति भाव:।

अर्थ– दूसरों की वस्तु को समर्पित करने पर बहुत धन प्राप्त होने की स्थिति में भी दूसरों की वस्तु की सुरक्षा रूपी कठिन कार्य को एक शिवि को छोड़कर तुम्हारे अलावा दूसरा कौन कर सकता है?

आशय– इस श्लोक के द्वारा महाकवि विशाखदत्त ने बड़े ही संक्षिप्त शब्दों में चन्दनदास के गुणों का वर्णन किया है। इसमें कवि ने कहा है कि दूसरों की वस्तु की रक्षा करनी कठिन होती है। यहाँ चन्दनदास के द्वारा अमात्य राक्षस के परिवार की रक्षा का कठिन काम किया गया है। न्यासरक्षण को महाकवि भास ने भी दुष्कर कार्य मानते हुए स्वप्नवासवदत्तम् में कहा है– दुष्करं न्यासरक्षणम्।

चन्दनदास अगर अमात्य राक्षस के परिवार को राजा को समर्पित कर देता, तो राजा उससे प्रसन्न भी होता और बहुत-सा धन पारितोषिक के रूप में देता, पर उसने भौतिक लाभ व लोभ को दरकिनार करते हुए अपने प्राणप्रिय मित्र के परिवार की रक्षा को अपना कर्त्तव्य माना और इसे निभाया भी। कवि ने चन्दनदास के इस कार्य की तुलना राजा शिवि के कार्यों से की है, जिन्होंने अपने शरणागत कपोत की रक्षा के लिए अपने शरीर के अंगों को काटकर दे दिया था। राजा शिवि ने तो सतयुग में ऐसा किया था, पर चन्दनदास ने ऐसा कार्य इस कलियुग में किया है, इसलिए वे और अधिक प्रशंसा के पात्र हैं।

अभ्यास:

1. **एकपदेन उत्तरं लिखत–**
   - (क) क: चन्दनदासं द्रष्टुम् इच्छति?
   - (ख) चन्दनदासस्य वणिज्या कीदृशी आसीत्?
   - (ग) किं दोषम् उत्पादयति?

(घ) चाणक्यः कं द्रष्टुम् इच्छति?

(ङ) कः शङ्कनीयः भवति?

2. **अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–**

(क) चन्दनदासः कस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म?

(ख) तृणानां केन सह विरोधः अस्ति?

(ग) पाठेऽस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता?

(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं के इच्छन्ति?

(ङ) कस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वणिज्या अखण्डिता?

3. **स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–**

(क) **शिविना** विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात्।

(ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः **सुहृत्**।

(ग) **आर्यस्य** प्रसादेन मे वणिज्या अखण्डिता।

(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः **राजानः** प्रतिप्रियमिच्छन्ति।

(ङ) **तृणानाम्** अग्निना सह विरोधो भवति।

4. **यथानिर्देशमुत्तरत–**

(क) 'अखण्डिता मे वणिज्या'– अस्मिन् वाक्ये क्रियापदं किम्?

(ख) पूर्वम् 'अनृतम्' इदानीम् आसीत् इति परस्परविरुद्धे वचने– अस्मात् वाक्यात् 'अधुना' इति पदस्य समानार्थकपदं चित्वा लिखत।

(ग) 'आर्य! किं मे भयं दर्शयसि' अत्र 'आर्य' इति सम्बोधनपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(घ) 'प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः' अस्मिन् वाक्ये कर्तृपदं किम्?

(ङ) तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे' अस्मिन् वाक्ये विशेष्यपदं किम्?

5. **निर्देशानुसारं सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत–**

(क)	**यथा–**	कः + अपि	–	कोऽपि
		प्राणेभ्यः + अपि	–	....
		.... + अस्मि	–	सज्जोऽस्मि।
		आत्मनः + ...	–	आत्मनोऽधिकारसदृशम्
(ख)	**यथा–**	सत् + चित्	–	सच्चित्
		शरत् + चन्द्रः	–	....
		कदाचित् + च	–	....

6. कोष्ठकेषु दत्तयोः पदयोः शुद्धं विकल्पं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) .... विना इदं दुष्करं कः कुर्यात्। (चन्दनदासस्य/चन्दनदासेन)
(ख) .... इदं वृत्तान्तं निवेदयामि। (गुरवे/गुरोः)
(ग) आर्यस्य .... अखण्डिता मे वणिज्या। (प्रसादात्/प्रसादेन)
(घ) अलम् .... । (कलहेन/कलहात्)
(ङ) वीरः .... बालं रक्षति। (सिंहेन/सिंहात्)
(च) .... भीतः मम भ्राता सोपानात् अपतत्। (कुक्कुरेण/कुक्कुरात्)
(छ) छात्रः .... प्रश्नं पृच्छति। (आचार्यम्/आचार्येण)

7. अधोदत्तमञ्जूषातः समुचितविलोमपदानि गृहीत्वा लिखत–

असत्यम्	पश्चात्	गुणः	आदरः	तदानीम्	तत्र

(क) अनादरः ....
(ख) दोषः ....
(ग) पूर्वम् ....
(घ) सत्यम् ....
(ङ) इदानीम् ....
(च) अत्र ....

8. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत–

यथा निष्क्रम्य– शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।
(क) उपसृत्य ....
(ख) प्रविश्य ....
(ग) द्रष्टुम् ....
(घ) इदानीम् ....
(ङ) अत्र ....

योग्यताविस्तारः

यह नाट्यांश महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित 'मुद्राराक्षसम्' नामक नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत किया गया है। नन्दवंश का विनाश करने के बाद उसके हितैषियों को खोज-खोजकर पकड़वाने के क्रम में चाणक्य, अमात्य राक्षस एवं उसके कुटुम्बियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्दनदास से वार्तालाप करता है, किन्तु चाणक्य को अमात्य राक्षस के विषय में कोई

सुराग न देता हुआ चन्दनदास अपनी मित्रता पर दृढ़ रहता है। उसके मैत्री भाव से प्रसन्न होता हुआ भी चाणक्य जब उसे राजदण्ड का भय दिखाता है, तब चन्दनदास राजदण्ड भोगने के लिये भी सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है। इस प्रकार अपने सुहृद् के लिए प्राणों का भी उत्सर्ग करने के लिये तत्पर चन्दनदास अपनी सुहृद्-निष्ठा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

कविपरिचयः

'मुद्राराक्षसम्' इति नाटकस्य प्रणेता विशाखदत्तः आसीत्। सः राजवंशे उत्पन्नः आसीत्। तस्य पिता भास्करदत्तः महाराजस्य पदवीं प्राप्नोत्। विशाखदत्तः राजनीतेः न्यायस्य ज्योतिषविषयस्य च विद्वान् आसीत्। वैदिकधर्मावलम्बी भूत्वाऽपि सः बौद्धधर्मस्य अपि आदरमकरोत्।

ग्रन्थपरिचयः

'मुद्राराक्षसम्' एकम् ऐतिहासिकं नाटकम् अस्ति। दशाङ्केषु विरचिते अस्मिन्नाटके चाणक्यस्य राजनीतिककौशलस्य बुद्धिवैभवस्य राष्ट्रसञ्चालनार्थम् कूटनीतीनाम् निदर्शनमस्ति। अस्मिन्नाटके चाणक्यस्यामात्यराक्षसस्य च कूटनीत्योः संघर्षः।

भावविस्तारः

चाणक्य– चाणक्यः एकः विद्वान् ब्राह्मणः आसीत्। तस्य पितृप्रदत्तं नाम विष्णुगुप्तः आसीत्। अयमेव 'कौटिल्य' इति नाम्ना प्रसिद्धः। केषाञ्चित् विदुषाम् इदमपि मतमस्ति यत् राजनीतिशास्त्रे कुटिलनीतेः प्रतिष्ठापनाय तस्याः स्व-जीवने उपयोगाय च अयं 'कौटिल्यः' इत्यपि कथ्यते।

चणकनामकस्य कस्यचित् आचार्यस्य पुत्रत्वात् 'चाणक्यः' इति नाम्ना स प्रसिद्धः जातः। नन्दानां राज्यकालः शतवर्षाणि पर्यन्तम् आसीत्। तेषु अन्तिमेषु द्वादशवर्षेषु एतेन सुमाल्यादीनाम् अष्टनन्दानां संहारः कारितः तथा च चन्द्रगुप्तमौर्यः नृपत्वेन राजसिंहासने स्थापितः। अयमेकः महान् राजनीतिज्ञः आसीत्। एतेन भारतीयशासनव्यवस्थायाः प्रामाणिकतत्त्वानां वर्णनेन युक्तं "अर्थशास्त्रम्" इति अतिमहत्त्वपूर्णः ग्रन्थः रचितः।

चन्द्रगुप्तमौर्यः– चन्द्रगुप्तः महापद्मनन्दस्य मुरायाः च पुत्रः आसीत्। चाणक्यस्य मार्गदर्शने अनेन चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तं राज्यं कृतम्।

राक्षसः– नन्दराज्ञः स्वामिभक्तः चतुरः प्रधानामात्यः आसीत्।

चन्दनदासः– कुसुमपुरनाम्नि नगरे महामात्यस्य राक्षसस्य प्रियतमं पात्रं मित्रञ्च आसीत्। स मणिकारः श्रेष्ठी च आसीत्। अस्यैव गृहात् राक्षसः सपरिवारः नगरात् बहिरगच्छत्।

भाषिकविस्तारः

1. पृथक् और विना शब्दों के योग में द्वितीया तृतीया और पंचमी तीनों विभक्तियों का प्रयोग–

यथा–	जलं विना जीवनं न सम्भवति।	द्वितीया
	जलेन विना जीवनं न सम्भवति।	तृतीया
	जलात् विना जीवनं न सम्भवति।	पंचमी

परिश्रमं पृथक् नास्ति सुखम्।	द्वितीया
परिश्रमेण पृथक् नास्ति सुखम्।	तृतीया
परिश्रमात् पृथक् नास्ति सुखम्।	पंचमी

2. **अनीयर् प्रत्ययप्रयोगः**

अत्यादरः	**शङ्कनीयः**
जन्तुशाला	**दर्शनीया**
याचकेभ्यः दानं	**दानीयम्**
वेदमन्त्राः	**स्मरणीयाः**

पुस्तकमेलापके पुस्तकानि **क्रयणीयानि।**

(क) अनीयर् प्रत्ययस्य प्रयोगः योग्यार्थे भवति।

(ख) अनीयर् प्रत्यये 'अनीय' इति अवशिष्यते।

(ग) अस्य रूपाणि त्रिषु लिङ्गेषु चलन्ति।

यथा -	**पुँल्लिङ्गे**	**स्त्रीलिङ्गे**	**नपुंसकलिङ्गे**
	पठनीयः	पठनीया	पठनीयम्

इनके रूप क्रमशः देववत्, लतावत् तथा फलवत् चलेगें।

3. **उभ सर्वनामपदम् (सर्वदा द्विवचनम्)**

पुँल्लिङ्गे	**नपुंसकलिङ्गे/स्त्रीलिङ्गे**
उभौ	उभे
उभौ	उभे
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
उभयोः	उभयोः
उभयोः	उभयोः

1061CH12

द्वादशः पाठः

अन्योक्तयः

प्रस्तुतोऽयं पाठः अन्योक्तिविषये वर्तते। अन्योक्तिः नाम अप्रत्यक्षरूपेण व्याजेन वा कस्यापि दोषस्य निन्दायाः कथनम्, गुणस्य प्रशंसा वा। सङ्केतमाध्यमेन व्यज्यमानाः प्रशंसादयः झटिति चिरञ्च बुद्धौ अवतिष्ठन्ति। अत्रापि सप्तानाम् अन्योक्तीनां सङ्ग्रहो वर्तते। याभिः राजहंस-कोकिल-मेघ-मालाकार-तडाग-सरोवर-चातकादीनां माध्यमेन सत्कर्म प्रति गमनाय प्रेरणा प्राप्यते।

एकेन राजहंसेन या शोभा सरसो भवेत् ।
न सा बकसहस्रेण परितस्तीरवासिना ॥1॥

भुक्ता मृणालपटली भवता निपीता-
न्यम्बूनि यत्र नलिनानि निषेवितानि ।
रे राजहंस! वद तस्य सरोवरस्य,
कृत्येन केन भवितासि कृतोपकारः ॥2॥

तोयैरल्पैरपि करुणया भीमभानौ निदाघे,
मालाकार! व्यरचि भवता या तरोरस्य पुष्टिः।
सा किं शक्या जनयितुमिह प्रावृषेण्येन वारां,
धारासारानपि विकिरता विश्वतो वारिदेन ॥3॥

आपेदिरेऽम्बरपथं परितः पतङ्गाः,
भृङ्गा रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते ।
सङ्कोचमञ्चति सरस्त्वयि दीनदीनो,
मीनो नु हन्त कतमां गतिमभ्युपैतु ॥4॥

एक एव खगो मानी वने वसति चातकः ।
पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम् ॥5॥

आश्वास्य पर्वतकुलं तपनोष्णतप्त-
मुद्दामदावविधुराणि च काननानि ।
नानानदीनदशतानि च पूरयित्वा,
रिक्तोऽसि यज्जलद! सैव तवोत्तमा श्रीः ॥6॥

रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयता-
मम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा,
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ॥7॥

शब्दार्थाः

सरसः	– तडागस्य	– तालाब का	– Of a lake
बकसहस्रेण	– बकानां सहस्रेण	– हजारों बगुलों से	– By thousand of herons
परितः	– सर्वतः	– चारों ओर	– All around
तीरवासिना	– तटनिवासिना	– तटवासी के द्वारा	– By resident of the shore
मृणालपटली	– कमलनालसमूहः	– कमलनालों का समूह	– Bunch of lotus stems
निपीतानि	– निःशेषेण पीतानि	– भलीभाँति पाये गये	– Well drunk
अम्बूनि	– जलानि	– जल	– Waters
नलिनानि	– कमलानि	– कमलों को	– The lotuses
निषेवितानि	– सेवितानि	– सेवन किये गये	– Used
भविता	– भविष्यति	– होगा	– You will become

कृत्येन	– कार्येण	– कार्य से	– By an act
कृतोपकार:	– कृत: उपकार: येन स:	– उपकार किया हुआ (प्रत्युपकार करने वाला)	– Requital performer
तोयै:	– जलै:	– जल से	– By waters
भीमभानौ	– भीम: भानु: यस्मिन् स: भीमभानु: तस्मिन्	– प्रचण्ड सूर्य होने पर (सूर्य के अत्यधिक तपने पर)	– Under sweltering sun
निदाघे	– ग्रीष्मकाले	– ग्रीष्मकाल में	– Summer season
मालाकार	– हे मालाकार!	– हे माली!	– Oh! gardener
पुष्टि:	– पुष्टता, वृद्धि:	– पोषण	– Diet
जनयितुम्	– उत्पादयितुम्	– उत्पन्न करने के लिए	– To create
प्रावृषेण्येन	– वर्षाकालिकेन	– वर्षाकालिक के द्वारा	– By rainy season
वारिदेन	– जलदेन	– बादल के द्वारा	– By cloud
धारासारान्	– धाराणाम् आसारान्	– धाराओं का प्रवाह	– Flow of torrent water
वाराम्	– जलानाम्	– जलों के	– Of waters
विकिरता	– (जलं)वर्षयता	– (जल) बरसाते हुए	– Raining
आपेदिरे	– प्राप्तवन्त:	– प्राप्त कर लिए	– Reached
अम्बरपथम्	– आकाशमार्गम्	– आकाश-मार्ग को	– Sky root
पतङ्गा:	– खगा:	– पक्षी	– Birds
भृङ्गा:	– भ्रमरा:	– भौंरे, भँवरे	– Drones
रसालमुकुलानि	– रसालानां मुकुलानि	– आम की मञ्जरियों को	– Blossom of mango tree
सङ्कोचम् अञ्चति	– सङ्कोचं गच्छति	– संकुचित होने पर	– On reduction
मीन:	– मत्स्य:	– मछली	– Fish
पुरन्दरम्	– इन्द्रम्	– इन्द्र को	– The king of Gods

मानी	– स्वाभिमानी	– स्वाभिमानी	– Self respectful
अभ्युपैतु	– प्राप्नोतु	– प्राप्त करें	– Shall get
आश्वास्य	– आश्वासनं प्रदाय	– तृप्त करके	– Satisfying
पर्वतकुलम्	– पर्वतानां कुलम्	– पर्वतों के समूह को	– The group of mountains
तपनोष्णतप्तम्	– तपनस्य उष्णेन तप्तम्,	– सूर्य की गर्मी से तपे हुए को	– Heated by Sun
उद्दामदावविधुराणि	– उन्नतकाष्ठरहितानि	– ऊँचे काष्ठों (वृक्षों) से रहित को	– Lacking high trees
नानानदीनदशतानि	– विविधानां नदीनां, नदानां शतानि च	– अनेक नदियों और सैकड़ों नदों को	– Hundreds of small and big rivers
काननानि	– वनानि	– वन	– Forests
पूरयित्वा	– पूर्णं कृत्वा	– पूर्ण करके (भरकर)	– Filling
पिपासितः	– तृषितः	– प्यासा	– Thirsty
सावधानमनसा	– ध्यानेन	– ध्यान से	– Carefully
अम्भोदाः	– मेघाः	– बादल	– Clouds
गगने	– आकाशे	– आकाश में	– In the sky
आर्द्रयन्ति	– जलेन क्लेदयन्ति	– जल से भिगो देते हैं	– Wet with water
वसुधाम्	– पृथ्वीम्	– पृथ्वी को	– The earth
गर्जन्ति	– गर्जनं (ध्वनिम्) कुर्वन्ति	– गर्जना करते हैं	– Thunder
पुरतः	– अग्रे	– आगे, सामने	– In front

सर्वासाम् अन्योक्तीनाम् अन्वयाः–

1. एकेन राजहंसेन सरसः या शोभा भवेत्, परितः तीरवासिना बकसहस्रेण सा (शोभा) न (भवति)।।
2. यत्र भवता मृणालपटली भुक्ता, अम्बूनि निपीतानि नलिनानि निषेवितानि, रे राजहंस! तस्य सरोवरस्य केन कृत्येन कृतोपकारः भविता असि, वद।।

3. हे मालाकार! भीमभानौ निदाघे अल्पैः तोयैः अपि भवता करुणया अस्य तरोः या पुष्टिः व्यरचि। वाराम् प्रावृषेण्येन विश्वतः धारासारान् अपि विकिरता वारिदेन इह जनयितुम् सा (पुष्टिः) किम् शक्या।।

4. पतङ्गाः परितः अम्बरपथम् आपेदिरे, भृङ्गाः रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते। सरः त्वयि सङ्कोचम् अञ्चति, हन्त दीनदीनः मीनः नु कतमां गतिम् अभ्युपैतु।।

5. एक एव मानी खगः चातकः वने वसति, वा पिपासितः म्रियते पुरन्दरम् याचते वा।।

6. तपनोष्णतप्तम् पर्वतकुलम् आश्वास्य उद्दामदावविधुराणि काननानि च (आश्वास्य) नानानदीनदशतानि पूरयित्वा च हे जलद! यत् रिक्तः असि तव सा एव उत्तमा श्रीः।।

7. रे रे मित्र चातक! सावधानमनसा क्षणं श्रूयताम्, गगने हि बहवः अम्भोदाः सन्ति, सर्वे अपि एतादृशाः न (सन्ति), केचित् धरिणीं वृष्टिभिः आर्द्रयन्ति, केचिद् वृथा गर्जन्ति, (त्वम्) यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतः दीनं वचः मा ब्रूहि।।

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरं लिखत–

(क) कस्य शोभा एकेन राजहंसेन भवति?

(ख) सरसः तीरे के वसन्ति?

(ग) कः पिपासितः म्रियते?

(घ) के रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते?

(ङ) अम्भोदाः कुत्र सन्ति?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) सरसः शोभा केन भवति?

(ख) चातकः किमर्थं मानी कथ्यते?

(ग) मीनः कदा दीनां गतिं प्राप्नोति?

(घ) कानि पूरयित्वा जलदः रिक्तः भवति?

(ङ) वृष्टिभिः वसुधां के आर्द्रयन्ति?

3. अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) मालाकारः तोयैः तरोः पुष्टिं करोति।

(ख) भृङ्गाः रसालमुकुलानि समाश्रयन्ते।

(ग) पतङ्गाः अम्बरपथम् आपेदिरे।

(घ) जलदः नानानदीनदशतानि पूरयित्वा रिक्तोऽस्ति।

(ङ) चातकः वने वसति।

4. अधोलिखितयोः श्लोकयोः भावार्थं स्वीकृतभाषया लिखत–

(अ) तोयैरल्पैरपि .... वारिदेन।

(आ) रे रे चातक .... दीनं वचः।

5. अधोलिखितयोः श्लोकयोः अन्वयं लिखत–

(अ) आपेदिरे .... कतमां गतिमभ्युपैति।

(आ) आश्वास्य .... सैव तवोत्तमा श्रीः।।

6. उदाहरणमनुसृत्य सन्धिं/सन्धिविच्छेदं वा कुरुत–

(i) **यथा**– अन्य+ उक्तयः = अन्योक्तयः

(क)	....	+	....	=	निपीतान्यम्बूनि
(ख)	....	+	उपकारः	=	कृतोपकारः
(ग)	तपन	+	....	=	तपनोष्णतप्तम्
(घ)	तव	+	उत्तमा	=	....
(ङ)	न	+	एतादृशाः	=	....

(ii) **यथा**– पिपासितः + अपि = पिपासितोऽपि

(क)	....	+	....	=	कोऽपि
(ख)	....	+	....	=	रिक्तोऽसि
(ग)	मीनः	+	अयम्	=	....
(घ)	सर्वे	+	अपि	–	....

(iii) **यथा**– सरस: + भवेत् = सरसो भवेत्

(क)	खग:	+	मानी	=	....
(ख)	....	+	नु	=	मीनो नु
(ग)	पिपासित:	+	वा	=	....
(घ)	....	+	....	=	पुरतो मा

(iv) **यथा** – मुनि: + अपि = मुनिरपि

(क)	तोयै:	+	अल्पै:	=	....
(ख)	....	+	अपि	=	अल्पैरपि
(ग)	तरो:	+	अपि	=	....
(घ)	....	+	आर्द्रयन्ति	=	वृष्टिभिरार्द्रयन्ति

7. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितै: विग्रहपदै: समस्तपदानि रचयत–

	विग्रहपदानि		**समस्त पदानि**
यथा –	पीतं च तत् पङ्कजम्	=	पीतपङ्कजम्
(क)	राजा च असौ हंस:	=	....
(ख)	भीम: च असौ भानु:	=	....
(ग)	अम्बरम् एव पन्था:	=	....
(घ)	उत्तमा च इयम् श्री:	=	....
(ङ)	सावधानं च तत् मन:, तेन	=	....

योग्यताविस्तार:

अन्योक्ति अर्थात् किसी की प्रशंसा अथवा निन्दा अप्रत्यक्ष रूप से अथवा किसी बहाने से करना। जब किसी प्रतीक या माध्यम से किसी के गुण की प्रशंसा या दोष की निन्दा की जाती है, तब वह पाठकों के लिए अधिक ग्राह्य होती है। प्रस्तुत पाठ में ऐसी ही सात अन्योक्तियों का सङ्कलन है जिनमें राजहंस, कोकिल, मेघ, मालाकार, सरोवर तथा चातक के माध्यम से मानव को सद्वृत्तियों एवं सत्कर्मों के प्रति प्रवृत्त होने का संदेश दिया गया है।

पाठपरिचयः

अन्येषां कृते या उक्तयः कथ्यन्ते ता उक्तयः अन्योक्तयः अत्र पाठे सङ्कलिता वर्तन्ते। अस्मिन् पाठे षष्ठश्लोकम् सप्तमश्लोकम् च अतिरिच्य ये श्लोकाः सन्ति ते पण्डितराजजगन्नाथस्य 'भामिनीविलास' इति गीतिकाव्यात् सङ्कलिताः सन्ति। षष्ठः श्लोकः महाकवि माघस्य 'शिशुपालवधम्' इति महाकाव्यात् गृहीतः अस्ति। सप्तमः श्लोकः महाकविभर्तृहरेः नीतिशतकात् उद्धृतः अस्ति।

कविपरिचयः

पण्डितराजजगन्नाथः संस्कृतसाहित्यस्य मूर्धन्यः सरसश्च कविः आसीत्। सः शाहजहाँ नामकेन मुग़लशासकेन स्वराजसभायां सम्मानितः। पण्डितराजजगन्नाथस्य त्रयोदश कृतयः प्राप्यन्ते। (1) गङ्गालहरी (2) अमृतलहरी (3) सुधालहरी (4) लक्ष्मीलहरी (5) करुणालहरी (6) आसफ़विलासः (7) प्राणाभरणम् (8) जगदाभरणम् (9) यमुनावर्णनम् (10) रसगङ्गाधरः (11) भामिनीविलासः (12) मनोरमाकुचमर्दनम् (13) चित्रमीमांसाखण्डनम्। एतेषु ग्रन्थेषु 'भामिनीविलासः' इति तस्य विवि-पद्यानां सङ्ग्रहः।

महाकविमाघः:- महाकविमाघस्य एकमेव महाकाव्यं प्राप्यते "शिशुपालवधम्" इति।

भर्तृहरिः:- महाकविभर्तृहरेः त्रीणि शतकानि सन्ति, शृङ्गारशतकम्, नीतिशतकम्, वैराग्यशतकं च।

अधोदत्ताः विविधविषयकाः श्लोकाः अपि पठनीयाः स्मरणीयाश्च–

हंसः – **हंसः श्वेतः बकः श्वेतः को भेदो बकहंसयोः।**
नीरक्षीरविभागे तु हंसो हंसः बको बकः ॥

एकमेव पर्याप्तम् – **एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम् ।**
सहैव दशभिः पुत्रैः भारं वहति रासभी ॥

पिकः – **काकः कृष्णः पिकः कृष्णः को भेदः पिककाकयोः ।**
वसन्तसमये प्राप्ते काकः काकः पिकः पिकः ॥

चातकवर्णनम् – **यद्यपि सन्ति बहूनि सरांसि,**
स्वादुशीतलसुरभिपयांसि ।
चातकपोतस्तदपि च तानि,
त्यक्त्वा याचति जलदजलानि ॥